1203-Ms.

बालकांड प्रारंभः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
१

श्रीगणेशायनमः॥श्लोक॥॥ वर्णानामर्थसंघानांरसानांछंदसामपिमंगलानांचकर्त्तारौवंदेवाणी
विनायकौ॥१॥भवानीशंकरौवंदेश्रद्धाविश्वासरूपिणौ॥याभ्यांविनानपश्यंतिसिद्धाःस्वांतस्थमी
श्वरं॥२॥वंदेबोधमयंनित्यंगुरुंशंकररूपिणं॥यमाश्रितोहिवक्रोपिचंद्रःसर्वत्रवंद्यते॥३॥सीताराम
गुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ॥वंदेविशुद्धविज्ञानौकवीश्वरकपीश्वरौ॥४॥उद्भवस्थितिसंहार
कारिणींक्लेशहारिणीं॥सर्वश्रेयस्करींसीतांनतोहंरामवल्लभां॥५॥यन्मायावशवर्त्तिविश्वमखिलं
ब्रह्मादिदेवासुराः॥यत्सत्वादमृषैवभातिसकलंरज्जौयथाहेर्भ्रमः॥यत्पादप्लवमेकमेवहिभवांभो
धेस्तितीर्षावतां॥वंदेहंतमशेषकारणपरंरामाख्यमीशंहरिं॥६॥नानापुराणनिगमागमसंमतं
यद्रामायणेनिगदितंक्वचिदन्यतोपि॥स्वांतःसुखायतुलसीरघुनाथगाथाभाषानिबंधमति
मंजुलमातनोति॥७॥सोरठा॥ जोसुमिरतसिधिहोइगननायककरिबरबदन॥करौअनुग्रहसोइ

बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥१॥ मूक होइ बाचाल पंगु चढै गिरिबर गहन ॥ जासु कृपा सु दयाल द्रवौ स
कल कलि मल दहन ॥२॥ नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन ॥ करौ सो मम उर धाम सदा
छीरसागर सयन ॥३॥ कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ॥ जाहि दीन पर नेह करौ कृपा मर्द
न मयन ॥४॥ बंदौ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ॥ महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ॥५॥
चौपाई ॥ बंदौ गुरु पद पदुम परागा ॥ सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥ अमी मूरिमय चूरन चारु ॥ स
मन सकल भव रुज परिवारु ॥ सुकृत संभु तन बिमल बिभूती ॥ मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥ जन मन मंजु
मुकुर मल हरनी ॥ किए तिलक गुन गन बस करनी ॥ श्री गुरु पद नख मनि गन जोती ॥ सुमिरत दिव्य
दृष्टि हिय होती ॥ दलन मोह तम सो सुप्रकासु ॥ बडे भाग उर आवै जासु ॥ उघरहि बिमल बिलोचन
ही के ॥ मिटहि दोष दुख भव रजनी के ॥ सूझहि राम चरित मनि मानिक ॥ गुपत प्रगट जहं जो जेहि खानि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा॰ २

क॥ दोहा॥ जथासुअंजनअंजिदृगसाधकसिद्धसुजान॥ कौतुकदेखहिंसैलबनभूतलभूरिनिधान
१॥ गुरुपदरजम्रदुमंजुलअंजन॥ नयनअमियदृगदोषबिभंजन॥ तेहिकरिबिमलबिबेकबिलोचन
बरनौंरामचरितभवमोचन॥ बंदौप्रथममहिसुरचरना॥ मोहजनितसंसयसबहरना॥ सुजनसमा
जसकलगुनषानी॥ करौप्रनामसप्रेमसुबानी॥ साधुचरितसुभचरितकपासू॥ निरसबिसदगुनमयफ
लजासू॥ जोसहिदुषपरछिद्रदुरावा॥ बंदनीयजेहिजगजसुपावा॥ मुदमंगलमयसंतसमाजू॥
जोजगजंगमतीरथराजू॥ रामभगतिजहँसुरसरिधारा॥ सरसैब्रह्मबिचारप्रचारा॥ बिधिनिषेधमय
कलिमलहरनी॥ करमकथारबिनंदिनिबरनी॥ हरिहरकथाबिराजतिबेनी॥ सुनतसकलमुदमंग
लदेनी॥ बटबिस्वासुअचलनिजधर्मा॥ तीरथराजसमाजसुकर्मा॥ सबहिसुलभसबदिनसबदेसा॥ २
सेवतसादरसमनकलेसा॥ अकथअलौकिकतीरथराउ॥ देइसद्यफलप्रगटप्रभाउ॥ दोहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मुनिसमूहहिंजनमुदितमनमज्जहिंअतिअनुराग॥लहहिंचारिफलअछततनुसाधुसमाजप्र
याग॥२॥मज्जनफलपेखियततकाला॥काकहोहिंपिकबकौमराला॥सुनिआचरजकरैजनिकोई॥स
तसंगतिमहिमानहिंगोई॥बालमीकिनारदघटजोनी॥निजनिजमुखनिकहीनिजहोनी॥जलचरथ
लचरनभचरनाना॥जेजडचेतनजीवजहाना॥मतिकीरतिगतिभूतिभलाई॥जबजेहिजतनजहांजे
हिंपाई॥सोजानबसतसंगप्रभाऊ॥लोकहुबेदनआनउपाऊ॥बिनुसतसंगबिबेकनहोई॥रामकृ
पाबिनुसुलभनसोई॥सतसंगतिमुदमंगलमूला॥सोइफलसिधिसबसाधनफूला॥सठसुधरहिंस
तसंगतिपाई॥पारसपरसिकुधातुसुहाई॥बिधिबससुजनकुसंगतिपरहीं॥फनिमनिसमनिजगुन
अनुसरहीं॥बिधिहरिहरकबिकोबिदबानी॥कहतसाधुमहिमासकुचानी॥सोमोसनकहिजात
नकैसे॥साकबनिकमनिगनगुनजैसे॥दोहा॥ बंदौसंतसमानचितहितअनहितनहिकोउ॥अं

बा० ३

जलिंगतसुभसुमनजिमिसमसुगंधकरदोउ॥संतसरलचित्तजगतहितजानिसुभाउसनेहु॥वालविन
यसुनिकरिकृपारामचरनरतिदेहु॥३॥वहुरिवंदिषलगनसतिभायें॥जेविनुकाजदाहिनेहुवायें॥परहि
तहानिलाभजिन्हकेरें॥उजरेंहरषविषादवसेरें॥हरिहरजसराकेसराहुसे॥परअकाजभटसहसवा
हुसे॥जेपरदोषलषहिंसहसाषी॥परहितघृतजिन्हकेमनमाषी॥तेजकृसानुरोषमहिषेसा॥अघअ
वगुनधनधनीधनेसा॥उदयकेतुसमहितसवहीके॥कुंभकरनसमसोवतनीके॥परअकाजलगितनु
परिहरहीं॥जिमिहिमउपलकृषीदलिगरहीं॥वंदौंषलजससेषसरोषा॥सहसवदनवरनैपरदो
षा॥पुनिप्रनवौंपृथुराजसमाना॥परअघसुनैसहसदसकाना॥वहुरिसक्रसमविनवौंतेही॥सं
ततसुरानीकहितजेही॥वचनवज्रजेहिसदापियारा॥सहसनयनपरदोषनिहारा॥दोहा॥उ
दासीनअरिमीतहितसुनतजरहिंषलरीति॥जानिपानिजुगजोरिजनुविनतीकरइसप्रीति॥४॥ ३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मैं अपनी दिसि कीन्हि निहोरा॥ तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा॥ बायस पलिअहिं अति अनुरा
गा॥ होहिं निरामिष कबहिं कि कागा॥ बंदौं संत असज्जन चरना॥ दुषप्रद उभय बीच कछु बरना॥ बिछु
रत एक प्रान हरि लेई॥ मिलत एक दुष दारुन देई॥ उपजहिं एक संग जग माहीं॥ जलज जोंक जिमि
गुन बिलगाहीं॥ सुधा सुरा सम साधु असाधू॥ जनक एक जग जलधि अगाधू॥ भल अनभल निज निज
करतूती॥ लहत सुजस अपलोक बिभूती॥ सुधा सुधाकर सुरसरि साधू॥ गरल अनल कलि मल सरि
ब्याधू॥ गुन अवगुन जानत सब कोई॥ जो जेहि भाव नीक तेहि सोई॥ दोहा॥ भलो भलाई पै लहै लहै
२ नीचाई नीचु॥ सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीचु॥५॥ षल अघ अगुन साधु गुन गाहा॥ उभ
य अपार उदधि अवगाहा॥ तेहि तें कछु गुन दोष बषाने॥ संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने॥ भलेउ
पोच सब बिधि उपजाये॥ गनि गुन दोष बेद बिलगाये॥ कहहिं बेद इतिहास पुराना॥ बिधि प्रपंच

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
४

गुन अवगुन साना॥ दुष सुष पाप पुन्य दिन राती॥ साधु असाधु सुजाति कुजाती॥ दानव देव उच
अरु नीचू॥ अमिय सजीवन माहुर मीचू॥ माया ब्रह्म जीव जगदीसा॥ लछ्छि अलछ्छि रंक अवनीसा॥
कासी मघ सुरसरि क्रमनासा॥ मरु मालव महिदेव गवासा॥ सरग नरक अनुराग विरागा॥ निगम
अगम गुन दोष विभागा॥ दोहा॥ जड चेतन गुन दोषमय विश्व कीन्ह करतार॥ संत हंस गुन ग
हहिं पय परिहरि वारि विकार॥६॥ अस विवेक जब देइ विधाता॥ तब तजि दोष गुनहिं मनु राता॥ का
ल सुभाउ करम वरिआई॥ भलेउ प्रकृति वस चुकइ भलाई॥ सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं॥ दलि
दुष दोष विमल जसु देहीं॥ षलउ करहिं भल पाइ सुसंगू॥ मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू॥ लषि सु
वेष जग वंचक जेउ॥ वेष प्रताप पूजियत तेउ॥ उघरहिं अंत न होइ निवाहू॥ कालनेमि जिमि राव ४
न राहू॥ किएहु कुवेष साधु सनमानू॥ जिमि जग जामवंत हनुमानू॥ हानि कुसंग सुसंगति लाहू॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लोकहुवेदविदितसवकाहू॥गगनचढइरजपवनप्रसंगा॥कीचहिमिलइनीचजलसंगा॥सा
धुअसाधुसदनसुकसारी॥सुमिरहिरामदेहिगनिगारी॥धूमकुसंगतिकारिखहोई॥लिषियपुरा
नमंजुमसिसोई॥सोइजलअनलअनिलसंघाता॥होइजलदजगजीवनदाता॥दोहा॥ः ग्रह
॥ श्रो४८ भेषजजलपवनपटपाइकुजोगसुजोग॥होहिकुवस्तुसुवस्तुजगलषहिसुलछनलोग॥समप्र
कासतमपाषदुहूंनामभेदविधिकीन्ह॥ससिसोषकपोषकसमुझिजगजसअपजसदीन्ह॥ज
डचेतनजगजीवजतसकलराममयजानि॥वंदौसवकेपदकमलसदाजोरिजुगपानि॥देवदनु
जनरनागषगप्रेतपितरगंधर्व॥वंदौकिंनररजनिचरकृपाकरहुअवसर्व॥७॥आकरचारि
लाषचौरासी॥जातिजीवनभजलथलवासी॥सीयराममयसवजगजानी॥करौप्रनामजोरिजु
गपानी॥जानिकृपाकरकिंकरमोहू॥सवमिलिकरहुछाडिछललछोहू॥निजवुधिवलभरोस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० ५

मोहि नाहीं॥ तातें विनय करौं सब पाहीं॥ करन चहौं रघुपति गुन गाहा॥ लघु मति मोरि चरित अ
वगाहा॥ सूझ न एकौ अंग उपाऊ॥ मन मति रंक मनोरथ राऊ॥ मति अति नीच ऊंचि रुचि आछी॥
चहिय अमिय जग जुरै न छाछी॥ छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई॥ सुनिहहिं बाल वचन मन ला
ई॥ जौं बालक कह तोतरि बाता॥ सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता॥ हसिहहिं कूर कुटिल कुविचा
री॥ जे पर दूषन भूषन धारी॥ निज कवित्त केहि लाग न नीका॥ सरस होउ अथवा अति फीका॥ जे
पर भनिति सुनत हरषाहीं॥ ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं॥ जग बहु नर सर सरि सम भाई॥ जे निज
बाढि बढहिं जल पाई॥ सज्जन सकृत सिंधु सम कोई॥ देषि पूर विधु बाढै जोई॥ दोहा॥ भाग छो
ट अभिलाष बड करौं एक विस्वास॥ पैहहिं सुष सुनि सुजन जन षल करिहहिं उपहास॥ ८॥ ५
षल परिहास होइ हित मोरा॥ काक कहहिं कलकंठ कठोरा॥ हंसहि बक दादुर चातकहीं॥ ह

कोकल

सहिमलिनषलबिमलबतकही॥ कबितरसिकनरामपदनेहू॥ तिन्हकहँसुषदहासरसयेहू॥
(वारता)
भाषाभनितिभोरिमतिमोरी॥ हसिबेजोगहसेनहिषोरी॥ प्रभुपदप्रीतिनसामुझिनीकी॥ तिन्हहि
कथासुनिलागिहिफीकी॥ हरिहरपदरतिमतिनकुतरकी॥ तिन्हकहुमधुरकथारघुबरकी॥ राम
भगतिभूषितजियजानी॥ सुनिहहिसुजनसराहिसुबानी॥ कबिनहोउँनहिचतुरप्रबीनू॥ सकलक
(भली होई)
लासबबिद्याहीनू॥ आषरअरथअलंकृतनाना॥ छंदप्रबंधअनेकबिधाना॥ भावभेदरसभेदअ
पारा॥ कबितदोषगुनबिबिधप्रकारा॥ कबितबिबेकएकनहिमोरे॥ सत्यकहौंलिषिकागरकोरे॥
दोहा॥ भनितिमोरिसबगुनरहितबिश्वबिदितगुनएक॥ सोबिचारिसुनिहहिसुमतिजिन्हके
बिमलबिबेक॥ ९॥ एहिमहरघुपतिनामउदारा॥ अतिपावनपुरानश्रुतिसारा॥ मंगलभवन
अमंगलहारी॥ उमासहितजेहिजपतपुरारी॥ भनितिबिचित्रसुकबिक्रतजोऊ॥ रामनामबि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा॰

नुमोहनसोइ॥ विधुवदनीसवभाँतिसँवारी॥ सोहनवसनविनावरनारी॥ सवगुनरहितकुकविकृत
वानी॥ रामनामजसअंकितजानी॥ सादरकहहिंसुनहिंवुधताही॥ मधुकरसरिससंतगुनग्राही॥ ज
दपिकवितरसएकौनाहीं॥ रामप्रतापप्रगटएहिमाहीं॥ सोइभरोसमोरेंमनआवा॥ केहिनसुसंगवड
पनुपावा॥ धूमौतजैसहजकरुआई॥ अगरप्रसंगसुगंधवसाई॥ भनितिभदेसवस्तुभलिवरनी॥ रामकथा
जगमंगलकरनी॥ छंद॥ मंगलकरनिकलिमलहरनितुलसीकथारघुनाथकी॥ गतिकूरकविताम
रितकीज्यौंसरितपावनपाथकी॥ प्रभुसुजससंगतिभनितिभलिहोइहिसुजनमनभावनी॥ भवअं
गभूतिमसानकीसुमिरतसुहावनिपावनी॥ दोहा॥ प्रियलागिहिअतिसवहिममभनितिरामजस
संग॥ दारुविचारुकिकरइकोउवंदियमलयप्रसंग॥ स्यामसुरभिपयविसदअतिगुनदकरहिंसव
पान॥ गिराग्राममियरामजसगावहिंसुनहिंसुजान॥ १०॥ मनिमानिकमुकताछविजैसी॥ अहिगिरि

के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गजसिरसोहनतेसी॥ नृपकिरीटतरुनीतनुपाई॥ लहहिंसकलसोभाअधिकाई॥ तैसेहिंसुक
बिकबितबुधकहहीं॥ उपजहिंअनतअनतछबिलहहीं॥ भगतिहेतुबिधिभवनबिहाई॥ सुमिर
तसारदआवतिधाई॥ रामचरितसरबिनुअन्हवाये॥ सोश्रमजाइनकोटिउपाये॥ कबिकोबिद
असहृदयबिचारी॥ गावहिंहरिजसकलिमलहारी॥ कीन्हेप्राकृतजनगुनगाना॥ सिरधुनिगि
रालगतपछिताना॥ हृदयसिंधुमतिसीपसमाना॥ स्वातिसारदकहहिंसुजाना॥ जौंबरषैबर
बारिबिचारू॥ होहिंकबितमुकुतामनिचारू॥ दोहा॥ जुगुतिबेधिपुनिपोवहिंरामचरितब
रताग॥ पहिरहिंसज्जनबिमलउरसोभाअतिअनुराग॥११॥ जेजनमेकलिकालकराला॥ करत
बबायसबेषमराला॥ चलतकुपंथबेदमगछांडे॥ कपटकलेवरकलिमलभांडे॥ बंचकभगतक
हाइरामके॥ किंकरकंचनकोहकामके॥ तिन्हमहप्रथमरेषजगमोरी॥ धिंगधरमध्वजधंधकधो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
७

री॥ जौं अपने अवगुन सब कहऊँ॥ बाढै कथा पार नहि लहऊँ॥ ताते मैं अति अलप बखाने॥ थो
रे महुँ जानिहहि सयाने॥ समुझि बिबिधि बिधि बिनती मोरी॥ कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी॥ एतेहु
पर करिहहि जे असंका॥ मोहि ते अधिक ते जड मति रंका॥ कबि न होउँ नहि चतुर कहावौं॥ मति
अनुरूप राम गुन गावौं॥ कहँ रघुपति के चरित अपारा॥ कहँ मति मोरि निरत संसारा॥ जेहि मारुत
गिरि मेरु उडाहीं॥ कहहु तूल केहि लेखे माहीं॥ समुझत अमित राम प्रभुताई॥ करत कथा मन
अति कदराई॥ दोहा॥ सारद सेष महेस बिधि आगम निगम पुरान॥ नेति नेति कहि जासु गुन
करहि निरंतर गान॥१२॥ सब जानत प्रभु प्रभुता सोई॥ तदपि कहे बिनु रहा न कोई॥ तहाँ बेद
अस कारन राखा॥ भजन प्रभाउ भाँति बहु भाषा॥ एक अनीह अरूप अनामा॥ अज सच्चिदानं
द परधामा॥ ब्यापक बिस्वरूप भगवाना॥ तेहि धरि देह चरित कृत नाना॥ सो केवल भगतन हि ७

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तलागी॥ परम कृपाल प्रनत (सरनागत) अनुरागी॥ जेहि जन पर ममता अति छोहू॥ जेहि करुना करि कीन्ह
न कोहू॥ गई बहोर गरीब नेवाजू॥ सरल सबल साहिब रघुराजू॥ बुध बरनेहि हरि जस अस जानी
करहि पुनीत सुफल निज बानी॥ तेहि बल मै रघुपति गुन गाथा॥ कहिहउँ नाइ राम पद माथा॥
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई॥ तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई॥ दोहा॥ अति अपार जे सरित
बर जौं न्रप सेतु कराहि॥ चढि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहि॥ ३॥ एहि प्रकार बल
मनहि दिषाई॥ करिहउँ रघुपति कथा सुहाई॥ व्यास आदि कबि पुंगव नाना॥ जिन्ह सादर हरि सु
जस बषाना॥ चरन कमल बंदौ तिन्ह केरे॥ पुरवहु सकल मनोरथ मेरे॥ कलि के कबिन करौ परना
मा॥ जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा॥ जे प्राकृत (नागभाषा) कबि परम सयाने॥ भाषा जिन्ह हरि चरित बषाने॥
भये जे अहहि जे होइहहि आगे॥ प्रनवौ सब निकपट छल त्यागे॥ होहु प्रसन्न देहु बरदान

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करहु अनुग्रह अस जियजानी
बिमल जसहि अनुहरै सुवानी ३

साधु समाज भनिति सनमानू॥ जो प्रबंध बुध नहि आदरहीं॥ सो श्रम बादि बाल कवि करहीं॥ कीरति
बा० भनिति भूति भलि सोई॥ सुरसरि सम सब कह हित होई॥ राम सुकीरति भनिति भदेसा॥ असमंजस
८ अस मोहि अंदेसा॥ तुम्हरी कृपा सुलभ सो उ मोरे॥ सियनि सुहावनि टाट पटोरे॥ दोहा॥ः सरल
कवित कीरति विमल सोइ आदरहि सुजान॥ सहज वयर विसराइ रिपु जो सुनि करहि वखान॥ सो
न होइ बिनु विमल मति मोहि मति बल अति थोर॥ करहु कृपा हरि जस कहउ पुनि पुनि करउ
निहोर॥ कवि कोविद रघुवर चरित मानस मंजु मराल॥ बाल विनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृ
दयाल॥ सोरठा॥ः बंदौ मुनि पद कंज रामायन जेहि निरमयउ॥ सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दू
षन सहित॥ बंदौ चारिउ वेद भव वारिधि वोहित सरिस॥ जिन्हहि न सपनेहु खेद वरनत रघुवर वि
सद जस॥ बंदौ विधि पद रेनु भव सागर जेहि कीन्ह जह॥ संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल विष वारुनी॥ ८ नु

दोहा॥ःः विबुधविप्रबुधग्रहचरनवंदिकहौंकरजोरि॥होइप्रसन्नपुरवहुसकलमंजुमनोरथमोरि॥१४॥पुनिवंदौसारदसुरसरिता॥जुगलपुनीतमनोहरचरिता॥मज्जनपानपापहरएका॥कहतसुनतएकहरअविवेका॥गुरपितुमातुमहेसभवानी॥प्रनवौंदीनबंधुदिनदानी॥सेवकस्वामिसखासियपीके॥हितनिरुपधिसवविधितुलसीके॥कलिविलोकिजगहितहरगिरिजा॥साबरमंत्रजालजिन्हसिरिजा॥अनमिलआषरअरथनजापू॥प्रगटप्रभावमहेसप्रतापू॥सोमहेसमोहिपरअनुकूला॥करउकथामुदमंगलमूला॥सुमिरिसिवासिवपाइपसाउ॥वरनउरामचरितचितचाउ॥भनितिमोरिसिवकृपाविभांती॥ससिसमाजमिलिमनहुसुराती॥जेयेहिकथहिसनेहसमेता॥कहिहहिंसुनिहहिंसमुझिसचेता॥होइहहिंरामचरनअनुरागी॥कलिमलरहितसुमंगलभागी॥दोहा॥ःः सपनेहुसाचेहुमोहिपरजौंहरगौ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० रिपसाउ॥ तौकुरहोइजोकहेउसबभाषाभनितिप्रभाउ॥ १५॥ वंदौंअवधपुरीअतिपावनि॥ सरज
९ सरिकलिकलुषनसावनि॥ प्रनवौंपुरनरनारिबहोरी॥ ममताजिन्हपरप्रभुहिनथोरी॥ सियनिं
दकअघओघनसाये॥ लोकबिसोकबनाइबसाये॥ वंदौंकौसल्यादिसिप्राची॥ कीरतिजासुसक
लजगमाची॥ प्रगटेउजहँरघुपतिससिचारू॥ बिस्वसुखदखलकमलतुसारू॥ दसरथराउसहि
तसबरानी॥ सुकृतसुमंगलमूरतिजानी॥ करौंप्रनामकरममनबानी॥ करहुकृपासुतसेवकजानी॥
जिन्हहिबिरचिबडभएउबिधाता॥ महिमाअवधिरामपितुमाता॥ सोरठा॥ वंदौंअवधभुआलस
त्यप्रेमजेहिरामपद॥ बिछुरतदीनदयालप्रियतनतृनइवपरिहरेउ॥ १६॥ प्रनवौंपुरजनसहित
बिदेहू॥ जाहिरामपदगूढसनेहू॥ जोगभोगमहराखेउगोई॥ रामबिलोकतप्रगटेउसोई॥ प्रन
वौंप्रथमभरतकेचरना॥ जासुनेमब्रतजाइनबरना॥ रामचरनपंकजमनजासू॥ लुबुधमधुपइ ९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वतजेनपास॥ वंदौलछिमनपदजलजाता॥ सीतलसुभगभक्तसुषदाता॥ रघुपतिकीरतिविम
लपताका॥ दंडसमानभयउजसजाका॥ सेषसहस्रसीसजगकारन॥ जोअवतरेउभूमिभयटारन
सदासोसानुकूलरहमोपर॥ कृपासिंधुसौमित्रिगुनाकर॥ रिपुसूदनपदकमलनमामी॥ सूरसुसी
लभरतअनुगामी॥ महावीरविनवौंहनुमाना॥ रामजासुजसआपुवषाना॥ सोरठा॥ प्रनवौंपव
नकुमारखलवनपावकज्ञानघन॥ जासुहृदयआगारवसहिरामसरचापधर॥ १७॥ कपिपतिरी
छनिसाचरराजा॥ अंगदादिजेकीससमाजा॥ वंदौसवकेचरनसोहाए॥ अधमसरीररामजिन्ह
पाए॥ रघुपतिचरनउपासकजेते॥ षगम्रगसुरनरअसुरसमेते॥ वंदौपदसरोजसवकेरे॥ जेविनु
कामरामकेचेरे॥ सुकसनकादिभगतमुनिनारद॥ जेमुनिवरविज्ञानविसारद॥ प्रनवौंसवहिधर
निधरिसीसा॥ करहुकृपाजनजानिमुनीसा॥ जनकसुताजगजननिजानकी॥ अतिसयप्रियक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० रुनानिधानकी॥ताकेयुगपदकमलमनावौं॥जासुकृपानिर्मलमतिपावौं॥पुनिमनवचनकर्मरघु
१० नायक॥चरनकमलवंदौंसवलायक॥राजिवनयनधरेंधनुसायक॥भक्तविपतिभंजनसुषदायक॥
दोहा॥ गिराअर्थजलवीचिसमदेखियतभिन्ननभिन्न॥वंदौंसीतारामपदजिन्हहिपरमप्रियखि
दीन तरंग बीज
न्न॥१८॥वंदौंनामरामरघुवरको॥हेतुकृसानुभानुहिमकरको॥विधिहरिहरमयवेदप्रानसो॥अ
गुनअनूपमगुननिधानसो॥महामंत्रजोइजपतमहेस॥कासीमुक्तिहेतुउपदेस॥महिमाजासु
वालमीक
जानगनराउ॥प्रथमपूजियतनामप्रभाउ॥जानआदिकविनामप्रतापू॥भएउसुद्धकरिउल
पारवती
टाजापू॥सहसनामसमसुनिसिववानी॥जपिजेईपियसंगभवानी॥हरषेहेतुहेरिहरहीको॥
कियभूषनतियभूषनतीको॥नामप्रभाउजानसिवनीको॥कालकूटफलदीन्हअमीको॥दो
धाई
हा॥ वरषारितुरघुपतिभगतितुलसीसालिसुदास॥रामनामवरवरनजुगसावनभादौंमास॥१९॥ १०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आषरमधुरमनोहरदोउ॥बरनबिलोचनजनजियजोउ॥सुमिरतसुलभसुषदसबकाहू॥लो
कलाहुपरलोकनिबाहू॥कहतसुनतसमुझतसुठिनीके॥रामलषनसमप्रियतुलसीके॥बरनतब
रनप्रीतिबिलगाती॥ब्रह्मजीवसमसहजसंघाती॥नरनारायनसरिससुभ्राता॥जगपालकबिसेषि
जनत्राता॥भगतिसुतियकलकरनबिभूषन॥जगहितहेतुबिमलबिधुपूषन॥स्वादतोषसमसुग
तिसुधाके॥कमठसेषसमधरबसुधाके॥जनमनमंजुकंजमधुकरसे॥जीहजसोमतिहरिहलधर
से॥दोहा॥एकछत्रएकमुकुटमनिसबबरननिपरजोउ॥तुलसीरघुबरनामकेबरनबिराजत
दोउ॥२०॥समुझतसरिसनामअरुनामी॥प्रीतिपरस्परप्रभुअनुगामी॥नामरूपदुइईसउपाधी
अकथअनादिसुसामुझिसाधी॥कोबडछोटकहतअपराधू॥सुनिगुनभेदसमुझिहहिसाधू॥देषि
अहिरूपनामआधीना॥रूपज्ञाननहिनामबिहीना॥रूपबिसेषनामबिनुजाने॥करतलगतनप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० ११

रहिं पहिचाने॥ सुमिरिय नाम रूप बिनु देषे॥ आवत हृदय सनेह बिसेषे॥ नाम रूप गुन अकथ कहा
नी॥ समुझत सुषद न परति बषानी॥ अगुन सगुन बिच नाम सुसाषी॥ उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी
दोहा॥ राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार॥ तुलसी भीतर बाहेरौ जौं चाहसि उजिआर॥२१॥ ना
म जीह जपि जागहिं जोगी॥ बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी॥ ब्रह्म सुषहि अनुभवहिं अनूपा॥ अकथ अ
नामय नाम न रूपा॥ जाना चहहिं गूढ गति जे ऊ॥ नाम जीह जपि जानहिं ते ऊ॥ साधक नाम जपहिं
लौ लाये॥ होहिं सिद्ध अनिमादिक पाये॥ जपहिं नाम जन आरत भारी॥ मिटहिं कुसंकट होहिं सुषा
री॥ राम भगत जग चारि प्रकारा॥ सुकृती चारि उ अनघ उदारा॥ चहूं चतुर कहु नाम अधारा॥ ज्ञानी प्र
भुहि बिसेषि पियारा॥ चहुं जुग चहुं श्रुति नाम प्रभाऊ॥ कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ॥ दोहा॥ ११
सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन॥ नाम प्रेम पीयूष ह्रद तिन्ह हु किये मन मीन॥२२॥ अ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा॥ अकथ अगाध अनादि अनूपा॥ हमरे मत बड नाम दुहू ते॥ किय जेहि
जुग निज बस निज बूते॥ प्रौढ सुजन जनि जानहि जन की॥ कहउ प्रतीति प्रीति रुचि मन की॥ एक दा
रुगत देखिय येकू॥ पावक सम जुग ब्रह्म विवेकू॥ उभय अगम जुग सुगम नाम ते॥ कहेउ नाम बड ब्रह्म
राम ते॥ व्यापक एक ब्रह्म अविनासी॥ सत चेतन घन आनंद रासी॥ अस प्रभु हृदय अछत अविकारी
सकल जीव जग दीन दुषारी॥ नाम निरूपन नाम जतन ते॥ सो उप्रगटत जिमि मोल रतन ते॥ दोहा
निरगुन ते एहि भांति बड नाम प्रभाउ अपार॥ कहउ नाम बड राम ते निज विचार अनुसार॥ २३॥
राम भगत हित नर तनु धारी॥ सहि संकट किए साधु सुषारी॥ नाम सप्रेम जपत अनयासा॥ भगत
होहि मुद मंगल वासा॥ राम एक तापस तिय तारी॥ नाम कोटि षल कुमति सुधारी॥ रिषि हित रा
म सुकेतु सुता की॥ सहित सेन सुत कीन्ह विवाकी॥ सहित दोष दुष दास दुरासा॥ दलइ नाम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० जिमिरविनिसिनासा॥भंजेउरामआपुभवचापू॥भवभयभंजननामप्रतापू॥दंडकवनप्रभुकी
१२ न्हसुहावन॥जनमनअमितनामकिएपावन॥निसिचरनिकरदलेरघुनंदन॥नामसकलक
लिकलुषनिकंदन॥दोहा॥सवरीगीधसुसेवकनिसुगतिदीन्हिरघुनाथ॥नामउधारेअमि
तखलवेदविदितगुनगाथ॥२४॥रामसुकंठविभीषनदोउ॥राखेसरनजानसवकोउ॥नाम
गरीवअनेकनिवाजे॥लोकवेदवरविरदविराजे॥रामभालुकपिकटकवटोरा॥सेतुहेतुश्रमकी
न्हनथोरा॥नामलेतभवसिंधुसुखाहीं॥करहुविचारसुजनमनमाहीं॥रामसकुलरनरावनमा
रा॥सीयसहितनिजपुरपगुधारा॥राजारामअवधरजधानी॥गावतगुनसुरमुनिवरवानी॥सेव
कसुमिरतनामसप्रीती॥विनुश्रमप्रवलमोहदलजीती॥फिरतसनेहमगनसुखअपने॥नाम १२
प्रसादसोचनहिंसपने॥दोहा॥ब्रह्मरामतेनामुवडवरदायकवरदानि॥रामचरितसतको

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

टिमुउलिटियमहेसजियजानि॥२५॥नामप्रसादसंभुअविनासी॥साजअमंगलमंगलरासी॥
सुकसनकादिसिधमुनिजोगी॥नामप्रसादब्रह्मसुखभोगी॥नारदजानेउनामप्रताप॥जग
प्रियहरिहरिहरप्रियआपू॥नामजपतप्रभुकीन्हप्रसादू॥भगतसिरोमनिभेप्रहलादू॥ध्रु
वसगलानिजपेउहरिनाँउ॥पायउअचलअनूपमठाँउ॥सुमिरिपवनसुतपावननामू
अपनेवसकरिराखेरामू॥अपतअजामिलगजगनिकाउ॥भयेमुकुतहरिनामप्रभाउ॥कहउ
कहालगिनामवडाई॥रामनसकहिनामगुनगाई॥दोहा॥नामरामकोकलपतरुकलिक
ल्याननिवास॥जोसुमिरतभयोभांगतेतुलसीतुलसीदास॥२६॥चहुजुगतीनिकालतिहुलो
का॥भएनामजपिजीवविसोका॥वेदपुरानसंतमतएहू॥सकलसुकृतफलरामसनेहू॥ध्यान
प्रथमजुगमखविधिदूजे॥द्वापरपरितोषनप्रभुपूजे॥कलिकेवलमलमूलमलीना॥पापप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० योनिधिजनमनमीना॥नामकामतरुकालकराला॥सुमिरतसमनसकलजगजाला॥रामनाम
२३ कलिअभिमतदाता॥हितपरलोकलोकपितुमाता॥नहिंकलिकरमनभगतिविवेकू॥राम
नामअवलंबनयेकू॥कालनेमिकलिकपटनिधानू॥नामसुमतिसमरथहनुमानू॥दोहा
रामनामनरकेसरीकनककसिपुकलिकाल॥जापकजनप्रहलादजिमिपालिहिदलिसुर
साल॥२७॥भायकुभायअनखआलसहूं॥नामजपतमंगलदिसिदसहूं॥सुमिरिसोनामरामगुन
गाथा॥करौंनाइरघुनाथहिमाथा॥मोरिसुधारिहिसोसबभांती॥जासुकृपानहिंकृपाअघाती॥राम
सुस्वामिकुसेवकुमोसो॥निजदिसिदेखिदयानिधिपोसो॥लोकहुवेदसुसाहिबरीती॥विनयसुन
तपहिचानतप्रीती॥गनीगरीबग्रामनरनागर॥पंडितमूढमलीनउजागर॥सुकविकुकविनि २३
जमतिअनुहारी॥न्रपहिसराहतसबनरनारी॥साधुसुजानसुसीलन्रपाला॥ईसअंसभवपर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मकृपाला॥ सुनिसनमानहिंसबहिसुबानी॥ भनितिभगतिनतिगतिपहिचानी॥ यहप्राकृतमहि
निस्रता॥
पालसुभाउ॥ जानसिरोमनिकोसलराउ॥ रीझतरामसनेहनिसोते॥ कोजगमंदमलिनमनमोते
प्रवाह ॥ जहाज
दोहा॥ सठसेवककीप्रीतिरुचिरषिहहिंरामकृपालु॥ उपलकिएजलजानजेहिंसचिवसुमतिकपि
भालु॥ हौंहुकहावतसबकहतरामसहतउपहास॥ साहिबसीतानाथसेसेवकतुलसीदास॥ २८॥ अ
तिबडिमोरिढिठाईषोरी॥ सुनिअघनरकहुनाकसकोरी॥ समुझिसहमसमोहिअपडरअपने॥ सोसुधि
रामकीन्हनहिंसपने॥ सुनिअवलोकिसुचितचषचाही॥ भगतिमोरिमतिस्वामिसराही॥ कहतनसाइ
होइहियनीकी॥ रीझतरामजानिजनजीकी॥ रहतिनप्रभुचितचूककियेकी॥ करतसुरतिसयवारहि
येकी॥ जेहिंअघवधेउव्याधजिमिवाली॥ फिरिसुकंठसोइकीन्हिकुचाली॥ सोइकरतूतिविभीषनके
री॥ सपनेहुंसोनरामहियहेरी॥ तेभरतहिभेटतसनमाने॥ राजसभारघुबीरबषाने॥ दोहा॥ प्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० भुतरुतरकपिडारपरतेकिए आपुसमान॥ तुलसीकहीनराम सेसाहिबसीलनिधान॥ रामनिकाईंरा
१४ वरीहैसवहीकोनीक॥ जौयहसाचीहैसदातौनीकोतुलसीक॥ एहिविधिनिजगुनदोषकहिसवहिबहु
रिसिरुनाइ॥ बरनउँरघुवरविसदजसुसुनिकलिकलुषनसाइ॥ २९॥ जागवलिकजोकथासुहाई॥
भरद्वाजमुनिवरहिसुनाई॥ कहिहौंसोइसंवादवखानी॥ सुनतसकलसज्जनसुखमानी॥ संभुकीन्ह
यहचरितसुहावा॥ वहुरिकृपाकरिउमहिसुनावा॥ सोइसिवकागभसुंडिहिदीन्हा॥ रामभगतअधि
कारीचीन्हा॥ तेहिसनजागवलिकपुनिपावा॥ तिन्हपुनिभरद्वाजप्रतिगावा॥ तेश्रोतावकतासमसी
ला॥ समदरसीजानहिहरिलीला॥ जानहितीनिकालनिजज्ञाना॥ करतलगतआमलकसमाना॥
दोहा॥ मैपुनिनिजगुरुसनसुनीकथासुसूकरखेत॥ समुझीनहितसिवालपनतवअतिरहेउँअ
चेत॥ श्रोतावकताज्ञाननिधिकथारामकैगूढ॥ किमिसमुझौमैजीवजडकलिमलग्रसितविमूढ॥ १४

३० ॥ तदपि कही गुर बारहि बारा ॥ समुझि परी कछु मति अनुसारा ॥ भाषा बंध करबि मैं सोई ॥ मोरे
मन प्रबोध जेहि होई ॥ जस कछु बुधि बिबेक बल मोरे ॥ तस कहि हौं हिय हरि के प्रेरे ॥ निज संदेह मो
ह भ्रम हरनी ॥ करौं कथा भव सरिता तरनी ॥ बुध बिश्राम सकल जन रंजनि ॥ राम कथा कलि कलुष बि
भंजनि ॥ राम कथा कलि पन्नग भरनी ॥ पुनि बिबेक पावक कहुं अरनी ॥ राम कथा कलि कामद गाई
सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥ सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि ॥ भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ॥ अ
सुर सेन सम नरक निकंदिनि ॥ साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि ॥ संत समाज पयोधि रमा सी ॥ बिश्व
भार भर अचल छमा सी ॥ जम गन मुंह मसि जग जमुना सी ॥ जीवन मुक्ति हेतु जनु कासी ॥ रामहि प्रि
य पावनि तुलसी सी ॥ तुलसिदास हित हिय हुलसी सी ॥ सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी ॥ सकल
सिद्धि सुख संपति रासी ॥ सदगुन सुरगन अंब अदिति सी ॥ रघुबर भगति प्रेम परमिति सी ॥ दोहा ॥ ३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० मकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित्त चारु॥ तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु॥३१॥ रामचरि
१५ त चिंतामनि चारू॥ संत सुमति तिय सुभग सिंगारू॥ जग मंगल गुनग्राम राम के॥ दानि मुकुति ध
अस्वनीकुमार
न धरम धाम के॥ सदगुर ज्ञान बिराग जोग के॥ बिबुध बैद भव भीम रोग के॥ जननि जनक सिय रा
म प्रेम के॥ बीज सकल ब्रत धरम नेम के॥ समन पाप संताप सोक के॥ प्रिय पालक परलोक लोक के
भू सचिव सुभट भूपति बिचार के॥ कुंभज लोभ उदधि अपार के॥ काम कोह कलिमल करिगन के॥ के
हरि सावक जन मन बन के॥ अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के॥ कामद घन दारिद दवारि के॥ मं
त्र महामनि बिषय ब्याल के॥ मेटत कठिन कुअंक भाल के॥ हरन मोह तम दिनकर कर से॥ सेव
क सालि पाल जलधर से॥ अभिमत दानि देवतरु बर से॥ सेवत सु[ल]भ सुखद हरि हर से॥ सुकबि १५
सरद नभ मन उडगन से॥ रामभगत जन जीवन धन से॥ सकल सुकृत फल भूरि भोग से॥ जग हित

निरुपधिसाधुलोगसे ॥ सेवकमनमानसमरालसे ॥ पावनगंगतरंगमालसे ॥ दोहा ॥ कुपथकुतरक
कुचालिकलिकपटदंभपाषंड ॥ दहनरामगुनग्रामजिमि ईधनअनलप्रचंड ॥ रामचरितराकेस
करसरिससुषदसबकाहु ॥ सज्जनकुमुदचकोरचितहितविसेषिवडलाहु ॥ ३२ ॥ कीन्हिप्रश्नजेहि
भाँतिभवानी ॥ जेहिविधिसंकरकहावषानी ॥ सोसवहेतुकहवमेंगाई ॥ कथाप्रवंधविचित्रवनाई ॥
जेहियहकथासुनीनहिहोई ॥ जनिआचरजुकरैसुनिसोई ॥ कथाअलौकिकसुनहिजेज्ञानी ॥
नहिआचरजुकरहिअसजानी ॥ रामकथाकैमितिजगनाहीं ॥ असिप्रतीतितिन्हकेमनमाहीं ॥
नानाभाँतिरामअवतारा ॥ रामायनसतकोटिअपारा ॥ कलपभेदहरिचरितसुहाए ॥ भाँतिअने
कमुनीसन्हगाये ॥ करियनसंसयअसउरआनी ॥ सुनियकथासादररतिमानी ॥ दोहा ॥ रामअ
त नंतअनंतगुनअमितकथाविस्तार ॥ सुनिआचरजुनमानिहहिंजिन्हकेविमलविचार ॥ ३३ ॥ ए

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ९६ हि बिधि सब संसय करि दूरी॥ सिर धरि गुर पद पंकज धूरी॥ पुनि सबही प्रनवौं कर जोरी॥ करत कथा
जेहि लाग न खोरी॥ सादर सिवहि नाइ अब माथा॥ बरनउँ बिसद राम गुन गाथा॥ संबत सोरह से
एकतीसा॥ करौं कथा हरि पद धरि सीसा॥ नौमी भौम बार मधु मासा॥ अवधपुरी यह चरित प्रकासा॥
जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहि॥ तीरथ सकल तहां चलि आवहि॥ असुर नाग षग नर मुनि
देवा॥ आइ करहि रघुनायक सेवा॥ जन्म महोत्सव रचहि सुजाना॥ करहि राम कल कीरति गाना॥
दोहा॥ मज्जहि सज्जन बृंद बहु पावन सरजू नीर॥ जपहि राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरी
र॥३४॥ दरस परस मज्जन अरु पाना॥ हरै पाप कह बेद पुराना॥ नदी पुनीत अमित महिमा अ
ति॥ कहि न सकै सारदा बिमल मति॥ राम धामदा पुरी सुहावनि॥ लोक समस्त बिदित अति पाव ९६
नि॥ चारि षानि जग जीव अपारा॥ अवध तजे तनु नहि संसारा॥ सब बिधि पुरी मनोहर जानी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सकलसिद्धिप्रदमंगलषानी॥ बिमलकथाकरकीन्हअरंभा॥ सुनतनसाहिंकाममददंभा॥ रा
मचरितमानसएहिनामा॥ सुनतश्रवनपाइयबिश्रामा॥ मनकरिबिषयअनलबनजरई॥ हो
इसुषीजौंइहिंसरपरई॥ रामचरितमानसमुनिभावन॥ बिरचेउसंभुसुहावनपावन॥ त्रिबिधि
दोषदुषदारिददावन॥ कलिकुचालिकुलिकलुषनसावन॥ रचिमहेसनिजमानसराषा॥ पा
इसुसमउसिवासनभाषा॥ तातेंरामचरितमानसबर॥ धरेउनामहियहेरिहरषिहर॥ कहौंकथा
सोइसुषदसुहाई॥ सादरसुनहुसुजनमनलाई॥ दोहा॥ जसमानसजेहिबिधिभएउजगप्रचार
जेहिहेतु॥ अबसोइकहौंप्रसंगसबसुमिरिउमाब्रषकेतु॥३५॥ संभुप्रसादसुमतिहियहुलसी॥ रा
मचरितमानसकबितुलसी॥ करउमनोहरमतिअनुहारी॥ सुजनसुचितसुनिलेहुसुधारी॥ सुम
तिभूमिथलहृदयअगाधू॥ बेदपुरानउदधिघनसाधू॥ बरषहिंरामसुजसबरबारी॥ मधुरमनो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० १७
हरमंगलकारी॥ लीलासगुनजोकहहिंबखानी॥ सोइस्वछताकरैमलहानी॥ प्रेमभगतिजो
बरनिनजाई॥ सोइमधुरतासुसीतलताई॥ सोजलसुकृतसालिहितहोई॥ रामभगतजनजी
वनसोई॥ मेधामहिगतसोजलपावन॥ सकिलिश्रवनमगचलेउसुहावन॥ भरेउसुमान
ससुथलथिरानी॥ सुखदसीतरुचिचारुचिरानी॥ दोहा॥ सुठिसुंदरसंवादवरविरचेबुद्धिवि
चारि॥ तेएहिपावनसुभगसरघाटमनोहरचारि॥३६॥ सप्तप्रबंधसुभगसोपाना॥ ज्ञाननयन
निरखतमनमाना॥ रघुपतिमहिमाअगुनअवाधा॥ वरनवसोइवरवारिअगाधा॥ रामसीय
जसुसलिलसुधासम॥ उपमावीचिविलासमनोरम॥ पुरइनिसघनचारुचौपाई॥ जुगुति
मंजुमनिसीपसुहाई॥ छंदसोरठासुंदरदोहा॥ सोइवहुरंगकमलकुलसोहा॥ अरथअनू
पसुभावसुभासा॥ सोइपरागमकरंदसुवासा॥ सुकृतपुंजमंजुलअलिमाला॥ ज्ञानविराग १७

विचारमराला॥धुनिअवरेब[वियंगता]कवितगुनजाती॥मीनमनोहरतेबहुभांती॥अरथधरमका
मादिकचारी॥कहबग्यानविग्यानविचारी॥नवरसजपतपजोगविरागा॥तेसबजलचरचा
रुतडागा॥सुकृतीसाधुनामगुनगाना॥तेविचित्रजलविहंगसमाना॥संतसभाचहुदिसि
अमराई॥श्रद्धारितुबसंतसमगाई॥भक्तिनिरूपनविविधिविधाना॥छमादयादमलताबि
ताना॥समजमनेमफूलफलग्याना॥हरिपदरतिरसवेदबखाना॥औरोकथाअनेकप्रसं
गा॥तेइसुकपिकबहुबरनविहंगा॥दोहा॥पुलकवाटिका[वगीचे]बागबनसुखविसुविहंगविहारु॥
मालीसुमनसनेहजलसींचतलोचनचारु॥३७॥जेगावहियहचरितसंभारे॥तेइयह
तालचतुररखवारे॥सदासुनहिसादरनरनारी॥तेइसुरबरमानसअधिकारी॥अतिखले
जेविषईबककागा॥एहिसरनिकटनजाहिअभागा॥संबुक[घोंगे]भेकसिवारसमाना॥इहांन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० विषयकथारसनाना॥ तेहिकारनआवतहियहारे॥ कामीकाकवलाकविचारे॥ आवतरहिहसर
९८ अतिकठिनाई॥ रामकृपाविनुआइनजाई॥ कठिनकुसंगकुपंथकराला॥ तिन्हकेवचनवाघह
रिव्याला॥ गरहकारजनानाजंजाला॥ तेअतिदुर्गमसैलविसाला॥ वनवहुविषममोहमद
माना॥ नदीकुतर्कभयंकरनाना॥ दोहा॥ जेश्रद्धासंवलरहिततनहिसंतनकरसाथ॥ तिन्हकहँमा
नसअगमअतिजिन्हहिनप्रियरघुनाथ॥३८॥ जोकरिकष्टजाइपुनिकोई॥ जातहिंनींदजुडा
ईहोई॥ जडताजाडविषमउरलागा॥ गएहुनमज्जनपावअभागा॥ करिनजाइसरमज्जनपा
ना॥ फिरिआवैसमेतअभिमाना॥ जौवहोरिकोउपूछनआवा॥ सरनिंदाकरिताहिवुझावा॥ सक
लविघ्नव्यापहिनहितेही॥ रामसुकृपाविलोकहिजेही॥ सोइसादरसरमज्जनकरई॥ महाघोर ९८
त्रयतापनजरई॥ तेनरयहसरतजहिनकाउ॥ जिन्हकेरामचरनभलभाउ॥ जोनहाइचहइय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हृसर भाई॥ सो सतसंग करौ मन लाई॥ अस मानस मानस चष चाही॥ भइ कवि बुद्धि विमल अवगा
देखी दाहे
हा॥ भयउ हृदय आनंद उछाहू॥ उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू॥ चली सुभग कविता सरिता सो॥ रा
म विमल जस जल भरिता सो॥ सरजू नाम सुमंगल मूला॥ लोक वेद मत मंजुल कूला॥ नदी पुनीत सु
मानस नंदिनि॥ कलिमल त्रिन तरु मूल निकंदिनि॥ दोहा॥ श्रोता त्रिविधि समाज पुर ग्राम नग
र दुहुँ कूल॥ संत सभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल॥ ३९॥ राम भगति सुरसरितहि जाई॥
मिली सुकीरति सरजु सुहाई॥ सानुज राम समर जस पावन॥ मिलेउ महानद सोन सुहावन॥ जुग
गंगा
विच भगति देवधुनि धारा॥ सोहति सहित सुविरति विचारा॥ त्रिविधि ताप त्रासक तिमुहानी॥ राम स
रूप सिंधु समुहानी॥ मानस मूल मिली सुरसरिही॥ सुनत सुजन मन पावन करिही॥ विच विच कथा वि
चित्र विभागा॥ जनु सरि तीर तीर वन वागा॥ उमा महेस विवाह वराती॥ ते जलचर अगनित वहु भाँती॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० रघुबर जनम अनंद बधाई॥ भवर तरंग मनोहरताई॥ दोहा॥ बालचरित चहुँ बंधु के बनज बिपुल
१९ बहुरंग॥ नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारि बिहंग॥४०॥ सीय स्वयंबर कथा सुहाई॥ सरित सु
हावनि सो छबि छाई॥ नदी नाव पटु प्रस्न अनेका॥ केवट कुसल उतर सबिबेका॥ सुनि अनुकथ
न परस्पर होई॥ पथिक समाज सोह सरि सोई॥ घोर धार भृगुनाथ रिसानी॥ घाट सुबंध राम बर
बानी॥ सानुज राम बिबाह उछाहू॥ सो सुभ उमग सुखद सब काहू॥ कहत सुनत हरषहि पुलका
हीं॥ ते सुकृती मन मुदित नहाहीं॥ राम तिलक हित मंगल साजा॥ परब जोग जनु जुरे समाजा॥
काई कुमति केकई केरी॥ परी जासु फल बिपति घनेरी॥ दोहा॥ समन अमित उतपात सब भरत च न
रित जप जाग॥ कलि अघ खल अवगुन कथन ते जलमल बक काग॥४१॥ कीरति सरित छहूँ रितु १९
रूरी॥ समय सुहावनि पावनि भूरी॥ हिम हिमसैलसुता सिव ब्याहू॥ सिसिर सुखद प्रभु जनम उ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

छाहू॥ वरनव राम विवाह समाजू॥ सो मुद मंगलमय रितुराजू॥ ग्रीषम दुसह राम वनगवनू॥
पंथकथा षर आतप पवनू॥ वरषा घोर निसाचर रारी॥ सुरकुल सालि सुमंगलकारी॥ राम राज सुष
विनय वडाई॥ विसद सुषद सोइ सरद सुहाई॥ सती सिरोमनि सिय गुन गाथा॥ सोइ गुन अमल
अनूपम पाथा॥ भरत सुभाउ सुसीतलताई॥ सदा एकरस वरनि न जाई॥ दोहा॥ अवलोकनि
वोलनि मिलनि प्रीति परस्पर हास॥ भायप भलि चहुँ वंधु की जल माधुरी सुवास॥ ४२॥ आरति वि
नय दीनता मोरी॥ लघुता ललित सुवारि न थोरी॥ अद्भुत सलिल सुनत गुनकारी॥ आस पिआ
स मनोमल हारी॥ राम सुप्रेमहि पोषत पानी॥ हरत सकल कलि कलुष गलानी॥ भव श्रम सो
षक तोषक तोषा॥ समन दुरित दुष दारिद दोषा॥ काम कोह मद मोह नसावन॥ विमल विवे
क विराग वढावन॥ सादर मज्जन पान किए ते॥ मिटहि पाप परिताप हिए ते॥ जिन्ह एहि वारि न

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० मानसघोरा॥ नेकायरकलिकालबिगोरा॥ त्रषितनिरषिरबिकरभववारी॥ फिरिहहिंम्रगजिमि
२० जीवदुषारी॥ दोहा॥ मतिअनुहारिसुबारिगुनगननिमनअन्हवाइ॥ सुमिरिभवानीसंकरहि
कहकबिकथासुहाइ॥ अबरघुपतिपदपंकरुहहियधरिपाउप्रसाद॥ कहौजुगलमुनिवर्यक
रमिलनसुभासंवाद॥४३॥ भरद्वाजमुनिबसहिंप्रयागा॥ तिन्हहिरामपदअतिअनुरागा॥ ता
पससमदमदयानिधाना॥ परमारथपथपरमसुजाना॥ माघमकरगतरबिजबहोई॥ तीरथपति
हिआवसबकोई॥ देवदनुजकिन्नरनरश्रेनी॥ सादरमज्जहिसकलत्रिवेनी॥ पूजहिमाधवपद
जलजाता॥ परसिअषयवटुहरषहिगाता॥ भरद्वाजआश्रमअतिपावन॥ परमरम्यमुनिवरम
नभावन॥ तहांहोइमुनिरिषयसमाजा॥ जाहिजेमज्जनतीरथराजा॥ मज्जहिप्रातसमेतउछा २०
हा॥ कहहिंपरस्परहरिगुनगाहा॥ दोहा॥ ब्रह्मनिरूपनधर्मविधिबरनहिंतत्वविभाग॥ कहहिंभ

ति भगवंत कै संजुत ज्ञान बिराग॥४४॥ एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं॥ पुनि सब निज निज आश्र
म जाहीं॥ प्रति संबत अति होइ अनंदा॥ मकर मज्जि गवनहिं मुनि बृंदा॥ एक बार भरि मकर नहा
ए॥ सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाए॥ जागबलिक मुनि परम बिबेकी॥ भरद्वाज राखे पद टेकी॥ सा
दर चरन सरोज पखारे॥ अति पुनीत आसन बैठारे॥ करि पूजा मुनि सुजस बखानी॥ बोले अति पु
नीत मृदु बानी॥ नाथ एक संसय बड मोरे॥ करगत तत्व बेद सब तोरे॥ कहत सु मोहि लागत भ
य लाजा॥ जौ न कहौं बड होइ अकाजा॥ दोहा॥ संत कहहिं असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गा
व॥ होइ न बिमल बिबेक उर गुर सन किए दुराव॥४५॥ अस बिचारि प्रगटौं निज मोहू॥ हरहु ना
थ करि जन पर छोहू॥ राम नाम कर अमित प्रभावा॥ संत पुरान उपनिषद गावा॥ संतत जपत
संभु अबिनासी॥ सिव भगवान ज्ञान गुन रासी॥ आकर चारि जीव जग अहहीं॥ कासी मरत पर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ४१ म पद लहहीं॥ सोपि राम महिमा मुनिराया॥ सिव उपदेस करत करि दाया॥ रामु कवन प्रभु पूछौं
तोही॥ कहिय बुझाइ कृपानिधि मोही॥ एक राम अवधेस कुमारा॥ तिन्ह कर चरित विदित सं
सारा॥ नारि विरह दुख लहेउ अपारा॥ भयउ रोष रन रावन मारा॥ दोहा॥ प्रभु सोइ राम कि
अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि॥ सत्यधाम सर्वज्ञ तुम्ह कहहु विवेक विचारि॥ ४६॥ जैसे मि
टै मोह भ्रम भारी॥ कहहु सो कथा नाथ विस्तारी॥ जागवलिक बोले मुसकाई॥ तुम्हहि विदि
त रघुपति प्रभुताई॥ रामभगत तुम्ह मन क्रम बानी॥ चतुराई तुम्हारि मैं जानी॥ चाहहु सुनै
राम गुन गूढा॥ कीन्हहु प्रश्न मनहु अति मूढा॥ तात सुनहु सादर मन लाई॥ कहउ राम
कै कथा सुहाई॥ महामोह महिषेस विसाला॥ रामकथा कालिका कराला॥ रामकथा ससि ४१
किरन समाना॥ संत चकोर करहिं जेहि पाना॥ ऐसेइ संसय कीन्हि भवानी॥ महादेव तब क

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

४०

हावचानी॥दोहा॥कहेंहिंसोमतिअनुहारिअबउमासंभुसंवाद॥भएउसमयजेहिहेतुजेहिसु
नुमुनिमिटिहिबिषाद॥४७॥एककालसेताजुगमाहीं॥संभुगएकुंभजरिषिपाहीं॥संगसतीज
गजननिभवानी॥पूजेरिषिअखिलेश्वरजानी॥रामकथामुनिवर्यबखानी॥सुनीमहेसपर
मसुखमानी॥रिषिपूछीहरिभगतिसुहाई॥कहासंभुअधिकारीपाई॥कहतसुनतरघुपति
गुनगाथा॥कछुदिनतहांरहेगिरिनाथा॥मुनिसनविदामांगित्रिपुरारी॥चलेभवनसंगद
क्षकुमारी॥तेहिअवसरभंजनमहिभारा॥हरिरघुवंसलीन्हअवतारा॥पितावचनतजिराज
उदासी॥दंडकवनविचरतअविनासी॥दोहा॥हृदयविचारतजातहरकेहिविधिदरसनहो
इ॥गुप्तरूपअवतरेउप्रभुगएजानसबकोइ॥सोरठा॥संकरउरअतिछोभसतीनजानहिं
मरमसोइ॥तुलसीदरसनलोभमनडरलोचनलालची॥४८॥रावनमरनमनुजकरजाचा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
२२
प्रभुविधिबचनकीन्हचहसाचा॥जौंनहिंजाउँरहैपछितावा॥करतबिचारुनबनतबना
वा॥रहिहिविधिभएसोचबसईसा॥तेहीसमयजाउदससीसा॥लीन्हनीचमारीचहिसंगा॥
भएउतुरतसोइकपटकुरंगा॥करिछलमूढहरीवैदेही॥प्रभुप्रभाउतसविदितनतेही॥
मृगबधिबंधुसहितप्रभुआए॥आश्रमदेषिनयनजलछाए॥बिरहबिकलइवनररघु
राई॥षोजतबिपिनफिरतदोउभाई॥कबहूंजोगबियोगनजाके॥देषाप्रगटदुसहदुषताके
दोहा॥ अतिबिचित्ररघुपतिचरितजानहिंपरमसुजान॥जेमतिमंदबिमोहबसहृदयधर
हिंकछुआन॥४८॥ संभुसमयतेहिरामहिदेषा॥उपजाहियंअतिहरषुबिसेषा॥भरिलो
चनछबिसिंधुनिहारी॥कुसमउजानिनकीन्हचिन्हारी॥जैसच्चिदानंदजगपावन॥असक २२
हिचलेमनोजनसावन॥चलेजातसिवसतीसमेता॥पुनिपुनिपुलकतकृपानिकेता॥स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तौसोदसासंभुकेदेषी॥ उरउपजासंदेहुविसेषी॥ संकरुजगतवंद्यजगदीसा॥ सुरनरमु

निसवनावहिसीसा॥ तिन्हनृपसुतहिकीन्हपरनामा॥ कहिसच्चिदानंदपरधामा॥ भएम

गनछवितासुविलोकी॥ अजहुप्रीतिउररहतिनरोकी॥ दोहा॥ व्रह्मजोव्यापकविरजअज

अकलअनीहअभेद॥ सोकिदेहधरिहोइनरजाहिनजानतवेद॥ ५०॥ विष्नुजोसुरहि

तनरतनुधारी॥ सोउसर्वज्ञजथात्रिपुरारी॥ षोजैसोकिअज्ञइवनारी॥ ज्ञानधामश्रीपति

असुरारी॥ संभुगिरापुनिम्रषानहोई॥ सिवसर्वज्ञजानसवकोई॥ अससंसयमनभएउअपा

रा॥ होइनहृदयप्रवोधप्रचारा॥ जद्यपिप्रगटनकहेउभवानी॥ हरअंतरजामीसवजानी॥ सु

नहिसतीतवनारिसुभाउ॥ संसयअसनधरियउरकाउ॥ जासुकथाकुंभजरिषिगाई॥ भ

गतिजासुमैमुनिहिसुनाई॥ सोइममइष्टदेवरघुवीरा॥ सेवतजाहिसदामुनिधीरा॥ छंद॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० मुनिधीरजोगीसिद्धसंततविमलमनजेहिध्यावहीं॥कहिनेतिनिगमपुरानआगमजासु
२३ कीरतिगावहीं॥सोइरामव्यापकब्रह्मभुवननिकायपतिमायाधनी॥अवतरेउअपनेभ
गतहितनिजतंत्रनितरघुकुलमनी॥सोरठा॥ लागनउरउपदेसजदपिकहेउसिववारव
हु॥बोलेविहसिमहेसहरिमायावलजानिजिय॥५१॥जौंतुम्हरेंमनअतिसंदेह॥तौकिन
जाइपरीछालेहू॥तवलगिवैठअहौंवटछाहीं॥जवलगितुम्हऐहहुमोहिपाहीं॥जैसेंजा
इमोहभ्रमभारी॥करेहुसोजतनविवेकविचारी॥चलीसतीसिवआयसुपाई॥करइविचार
करौंकाभाई॥इहांसंभुअसमनअनुमाना॥दक्षसुताकहुँनहिंकल्याना॥मोरेहुकहेंन
संसैजाहीं॥विधिविपरीतभलाईनाहीं॥होइहिसोजोरामरचिराखा॥कोकरितरकवढावैसा २३
षा॥असकहिजपनलगेहरिनामा॥गईसतीजहंप्रभुसुषधामा॥दोहा॥ पुनिपुनिहृदय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिचार करि धरि सीता कर रूप॥ आगे होइ चलि पंथ तेहि जेहि आवत नरभूप॥५२॥ लछि
मन दीख उमाकृत बेषा॥ चकित भए भ्रम हृदय बिसेषा॥ कहि न सकत कछु अति गंभीरा॥
प्रभु प्रभाव जानत मति धीरा॥ सती कपट जानेउ सुरस्वामी॥ सबदरसी सब अंतरजामी॥ सुमि
रत जाहि मिटै अज्ञाना॥ सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना॥ सती कीन्ह चह तहहु दुराऊ॥ देषहु ना
रि सुभाव प्रभाऊ॥ निज माया बल हृदय बषानी॥ बोले बिहसि राम मृदु बानी॥ जोरि पा
नि प्रभु कीन्ह प्रनामू॥ पिता समेत लीन्ह हरि नामू॥ कहेउ बहोरि कहा बृषकेतू॥ बिपि
न अकेलि फिरहु केहि हेतू॥ दोहा॥ राम बचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोचु॥ सती स
भीत महेस पहि चली हृदय बड़ सोचु॥५३॥ मैं संकर कर कहा न माना॥ निज अज्ञान राम प
र आना॥ जाइ उतर अब देहौं काहा॥ उर उपजा अति दारुन दाहा॥ जाना राम सती दु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षपावा॥ निज प्रभाव कछु प्रगट जनावा॥ सती दीष कौतुक मग जाता॥ आगे राम सहित श्री भ्राता
बा° फिरि चितवा पाछे प्रभु देषा॥ सहित बंधु सिय सुंदर वेषा॥ जहं चितवहि तहं प्रभु आसीना॥ सेवहि
२४ सिद्ध मुनीस प्रवीना॥ देषे सिव विधि विस्नु अनेका॥ अमित प्रभाउ एक ते एका॥ वंदत चरन कर
त प्रभु सेवा॥ विविधि वेष देषे सब देवा॥ दोहा॥ सती विधात्री इंदिरा देषी अमित अनूप॥ जेहि जे
हि वेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप॥५४॥ देषे जहं तहं रघुपति जेते॥ सक्तिन्ह सहित स
कल सुर तेते॥ जीव चराचर जे संसारा॥ देषे सकल अनेक प्रकारा॥ पूजहि प्रभुहि देव बहु वेषा॥
राम रूप दूसर नहि देषा॥ अवलोके रघुपति बहुतेरे॥ सीता सहित न वेष घनेरे॥ सोइ रघुवर सोइ
लछिमन सीता॥ देषि सती अति भई सभीता॥ हृदय कंप तन सुधि कछु नाही॥ नयन मूंदि वै २४
ठी मग माही॥ वहुरि विलोके उ नयन उघारी॥ कछु न दीष तहं दक्ष कुमारी॥ पुनि पुनि नाइ राम

पद सीसा॥ चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीसा॥ दोहा॥ गई समीप तब सिव पहँ हसि पूछी कुसलात॥ ली
न्हि परीछा कवनि बिधि कहहु सत्य सब बात॥५५॥ सती समुझि रघुबीर प्रभाउ॥ भय बस सिव सन की
न्ह दुराउ॥ कछु न परीछा लीन्हि गुसाँई॥ कीन्ह प्रनाम तुम्हारिहि नाई॥ जो तुम्ह कहा सो मृषा न
होई॥ मोरे मन प्रतीति अति सोई॥ तब संकर देखेउ धरि ध्याना॥ सती जो कीन्ह चरित सब जाना॥ बहु
रि राममायहि सिरु नावा॥ प्रेरि सतिहि जेहि झूठ कहावा॥ हरि इछा भावी बलवाना॥ हृदय बिचारत
संभु सुजाना॥ सती कीन्ह सीता कर बेषा॥ सिव उर भयउ बिषाद बिसेषा॥ जो अब करौं सती सन प्री
ती॥ मिटै भगति पथ होइ अनीती॥ दोहा॥ परम पुनीत न जाइ तजि किए प्रेम बड पाप॥ प्रगटि न
कहत महेस कछु हृदय अधिक संताप॥५६॥ तब संकर प्रभु पद सिरु नावा॥ सुमिरत राम हृदय अस
आवा॥ एहि तन सतिहि भेट मोहि नाहीं॥ सिव संकल्प कीन्ह मन माहीं॥ अस बिचारि संकर मति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० धीरा॥ चलेभवनसुमिरतरघुबीरा॥ चलतगगनभइगिरासुहाई॥ जयमहेसभलिभगतिदृढाई
२५ असपनतुमबिनुकरैकोआना॥ रामभगतसमरथभगवाना॥ सुनिनभगिरासतीउरसोचा॥
पूछासिवहिसमेतसकोचा॥ कीन्हकवनपनकहहुकृपाला॥ सत्यधामप्रभुदीनदयाला॥ ज
दपिसतीपूछाबहुभाँती॥ तदपिनकहेउत्रिपुरआराती॥ दोहा॥ सतीहृदयअनुमानकिय
सबजानेउसर्बज्ञ॥ कीन्हकपटमैंसंभुसननारिसहजजडअज्ञ॥ सोरठा॥ जलुपयसरिसबिका
इदेषहुप्रीतिकिरीतिभलि॥ बिलगहोइरसजाइकपटषटाईपरतही॥५७॥ हृदयसोचस
मुझतनिजकरनी॥ चिंताअमितजाइनहिबरनी॥ कृपासिंधुसिवपरमअगाधा॥ प्रगटनकहेउ
मोरअपराधा॥ संकररुषअवलोकिभवानी॥ प्रभुमोहितजेउहृदयअकुलानी॥ निजअघ २५
समुझिनकछुकहिजाई॥ तपैअवाँइवउरअधिकाई॥ सतिहिससोचजानिबृषकेतु॥ कही

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कथामुदितसुखहेतु॥ बरनतपंथविविधिइतिहासा॥ विस्वनाथपहुँचेकैलासा॥ तहँपुनिसं
भुसमुझिपनआपन॥ बैठेवटतरकरिकमलासन॥ संकरसहजसरूपसँभारा॥ लागिसमाधि
अखंडअपारा॥ दोहा॥ सतीवसहिंकैलासतवअधिकसोचमनमाहिं॥ मरमुनकोउजानकछु
जुगसमदिवससिराहिं॥ ५८॥ नितनवसोचसतीउरभारा॥ कवजैहौंदुखसागरपारा॥ मैजोकी
न्हरघुपतिअपमाना॥ पुनिपतिवचनमृषाकरिजाना॥ सोफलमोहिविधातादीन्हा॥ जोकछु
उचितरहासोइकीन्हा॥ अबविधिअसबूझियनहितोही॥ संकरविमुखजिआवसिमोही॥ क
हिनजाइकछुहृदयगलानी॥ मनमहरामहिसुमिरिसयानी॥ जौंप्रभुदीनदयालकहावा॥
आरतिहरनवेदजसगावा॥ तौमैंविनयकरौंकरजोरी॥ छूटैवेगिदेहयहमोरी॥ जौंमोरेंसिव
चरनसनेह॥ मनक्रमवचनसत्यव्रतएह॥ दोहा॥ तौसवदरसीसुनियप्रभुकरौसोवेगिउ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
२६

पाउ॥ होइ मरन जेहि बिनहि श्रम दुसह बिपत्ति बिहाउ॥५८॥ एहि बिधि दुषित प्रजे
सकुमारी॥ अकथनीय दारुन दुष भारी॥ बीते संबत सहस सतासी॥ तजी समाधि संभु
अबिनासी॥ राम नाम सिव सुमिरन लागे॥ जानें सती जगतपति जागे॥ जाइ संभु पद बं ७
दन कीन्हा॥ सनमुष संकर आसन दीन्हा॥ लगे कहन हरि कथा रसाला॥ दक्ष प्रजे
स भए तेहि काला॥ देषा बिधि बिचारि सब लायक॥ दक्षहि कीन्ह प्रजापति नायक॥
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा॥ अति अभिमान हृदय तब आवा॥ नहि अस कोउ जनमा
जग माहीं॥ प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं॥ दोहा॥ दक्ष लिए मुनि बोलि सब करन लगे
बड़ जाग॥ नेवते सादर सकल सुर जे पावत मष भाग॥६०॥ किन्नर नाग सिद्ध गंधर्बा॥ ब २६
धुन्ह समेत चले सुर सर्बा॥ बिष्नु बिरंचि महेस बिहाई॥ चले सकल सुर जान बनाई॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सतीविलोकेव्योमविमाना॥जातचलेसुंदरविधिनाना॥सुरसुंदरीकरहिंकलगाना
सुनतश्रवनछूटहिंमुनिध्याना॥पूछेउतबसिवकहेउवषानी॥पिताजग्यसुनिकछु
हरषानी॥जौंमहेसमोहिआयसुदेहीं॥कछुदिनजाइरहौंमिसएहीं॥पतिपरित्या
गहृदयदुषभारी॥कहइनिजअपराधविचारी॥वोलीसतीमनोहरवानी॥भयसं
कोचप्रेमरससानी॥दोहा॥पिताभवनउत्सवपरमजौंप्रभुआयसुहोइ॥तौमैंजाउं
कृपायतनसादरदेषनसोइ॥६१॥कहेहुनीकमोरेहुमनभावा॥यहअनुचितन
हिंनेवतपठावा॥दक्षसकलनिजसुताबुलाई॥हमरेवयरतुम्हौविसराई॥ब्रह्मसभा
हमसनदुषमाना॥तेहितेअजहुकरहिअपमाना॥जौंविनुवोलेजाहुभवानी॥र
हैनसीलसनेहुनकानी॥जदपिमित्रप्रभुपितुगुरगेहा॥जाइयविनुवोलेनसंदेहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ६७ नदपिविरोधमानजहँकोई॥तहाँगएकल्याननहोई॥भाँतिअनेकसंभुसमुझा
वा॥भावीवसनज्ञानउरआवा॥कहप्रभुजाहुजोविनहिंबुलाये॥नहिंभलिवातह
मारेहिभाये॥दोहा॥कहिदेखाहरजतनवहुरहैनदक्षकुमारि॥दिएमुष्यगनसं
गतवविदाकीन्हित्रिपुरारि॥६१॥पिताभवनजवगईभवानी॥दक्षत्रासकाहुनस
नमानी॥सादरभलेहिमिलीएकमाता॥भगिनीमिलीवहुतमुसकाता॥दक्षन
कछुपूछीकुसलाता॥सतिहिविलोकिजरेसवगाता॥सतीजाइदेषेउतवजागा॥
कतहुनदीषसंभुकरभागा॥तवचितचढेउजोसंकरकहेऊ॥प्रभुअपमानसमुझि
उरदहेऊ॥पाछिलदुषनअसहृदयनव्यापा॥जसयहभएउमहापरितापा॥जद्य ६७
पिजगदारुनदुषनाना॥सवतेकठिनजातिअपमाना॥समुझिसोसतिहिभएउअ

त्तिक्रोधा॥ बहुविधिजननीकीन्हप्रबोधा॥ दोहा॥ सिवअपमाननजाइसहिहृदयन
होइप्रबोध॥ सकलसभहिहठिहटकितबबोलीबचनसक्रोध॥६२॥ सुनहुसभासद
सकलमुनिंदा॥ कहीसुनीजिन्हसंकरनिंदा॥ सोफलुतुरतलहबसबकाहू॥ भलीभाँति
पछिताइपिताहू॥ संतसंभुश्रीपतिअपबादा॥ सुनियजहाँतँहअसिमरजादा॥ काटि
यतासुजीभजोबसाई॥ श्रवनमूँदिनतचलियपराई॥ जगदातमामहेसपुरारी॥ जगत
जनकसबकेहितकारी॥ पितामंदमतिनिंदततेही॥ दक्षसुक्रसंभवयहदेही॥ तजिहौं
तुरतदेहतेहिहेतू॥ उरधरिचंद्रमौलिबृषकेतू॥ असकहिजोगअगिनितनुजारा॥
भएउसकलमखहाहाकारा॥ दोहा॥ सतीमरनसुनिसंभुगनलगेकरनमखखीस॥ य
ज्ञविधंसबिलोकिभृगुरछाकीन्हिमुनीस॥६४॥ समाचारसबसंकरपाये॥ बीरभद्रुकरि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ३८

कोप पठार॥ जग्य विधंस जाइ तिन्ह कीन्हा॥ सकल सुरन्ह विधिवत फल दीन्हा॥ भै जग विदित द
क्ष गति सोई॥ जस कछु संभु विमुष के होई॥ यह इतिहास सकल जग जाना॥ ताते मैं संछेप वखा
ना॥ सती मरत हरि सन वर मागा॥ जन्म जन्म सिव पद अनुरागा॥ तेहि कारन हिमगिरि गृह जा
ई॥ जनमी पारवती तनु पाई॥ जव ते उमा सैल गृह जाई॥ सकल सिद्धि संपति तहँ छाई॥ जहँ त
हँ मुनिन्ह सु आश्रम कीन्हे॥ उचित वास हिम भूधर दीन्हे॥ दोहा॥ सदा सुमन फल सहित सव
द्रुम नव नाना जाति॥ प्रगटी सुंदर सैल पर मनि आकर वहु भाँति॥६५॥ सरिता सव पुनीत जल व
हहीं॥ षग मृग मधुप सुषी सव रहहीं॥ सहज वैर सव जीवन त्यागा॥ गिरि पर सकल करहि अनु
रागा॥ सोह सैल गिरिजा गृह आए॥ जिमि जन रामभगति के पाए॥ नित नूतन मंगल गृह तासु ने ३८
ब्रह्मादिक गावहि जस जासु॥ नारद समाचार सव पाए॥ कौतुकहीं गिरि गेह सिधाए॥ सैलराज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वड आदर कीन्हा॥ पद पखारि वर आसन दीन्हा॥ नारि सहित मुनि पद सिरु नावा॥ चरन सलिल
सव भवनु सिंचावा॥ निज सौभाग्य वहुत विधि वरना॥ सुता वोलि मेली मुनि चरना॥ दोहा॥ त्रिका
लज्ञ सर्वज्ञ तुम्ह गति सर्वत्र तुम्हारि॥ कहहु सुता के दोष गुन मुनिवर हृदय विचारि॥ ६६॥ कह मु
नि विहसि गूढ मृदु वानी॥ सुता तुम्हारि सकल गुन खानी॥ सुंदरि सहज सुसील सयानी॥ नाम
उमा अंबिका भवानी॥ सव लछन संपन्न कुमारी॥ होइहि संतत पियहि पियारी॥ सदा अचल ए
हि कर अहिवाता॥ एहि ते जस पैहहिं पितु माता॥ होइहि पूज्य सकल जग माहीं॥ एहि सेवत क
छु दुर्लभ नाहीं॥ एहि कर नाम सुमिरि संसारा॥ तिय चढिहहिं पतिव्रत असिधारा॥ सैल सुलक्षन
सुता तुम्हारी॥ सुनहु जे अव अवगुन दुइ चारी॥ अगुन अमान मातु पितु हीना॥ उदासीन सव
संसय छीना॥ दोहा॥ जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल वेष॥ अस स्वामी एहि कहँ मि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० लिहिपरीहस्तअस्सिरेषा॥६७॥सुनिमुनिगिरासत्यजियजानी॥दुषदंपतिहिउमाहरषानी
२९ २ नाँदहूँयहभेदनजाना॥दसाएकसमुझतबिलगाना॥सकलसषीगिरिजागिरिमैना॥पुलक
सरीरभरेजलनयना॥होइनम्रषादेवरिषिभाषा॥उमासोबचनहृदयधरिराषा॥उपजेउ
सिवपदकमलसनेहू॥मिलनकठिनभामनसंदेहू॥जानिकुअवसरप्रीतिदुराई॥सषीउछं
गवैठिपुनिजाई॥झूठिनहोइदेवरिषिवानी सोचहिंदंपतिसषीसयानी॥उरधरिधीरकहै
गिरिराउ॥कहहुनाथकाकरियउपाउ॥दोहा॥ कहमुनीसहिमवंतसुनुजोविधिलिषा
लिलार॥देवदनुजनरनागमुनिकोउनमेटनहार॥६८॥तदपिएकमैकहौंउपाई॥होइक
रैजौंदैवसहाई॥जसवरमैवरनेंउतुमपाहीं॥मिलिहिउमहितससंसयनाहीं॥जेजेवरकेदो २९
षवषाने॥तेसवसिवपहिंमैअनुमाने॥जौंविवाहसंकरसनहोई॥दोषौगुनसमकहसवकोई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जौं अहि सेज सयन हरि करहीं॥ बुध कछु तिन्ह कर दोष न धरहीं॥ भानु कृसानु सर्व रस खाहीं॥ ति
न्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं॥ सुभ अरु असुभ सलिल सब बहहीं॥ सुरसरि कोउ अपुनीत न कह
हीं॥ समरथ को नहिं दोस गुसाँई॥ रवि पावक सुरसरि की नाई॥ दोहा॥ जौं अस हिसिषा करहिं न
र जड़ विवेक अभिमान॥ परहिं कल्प भरि नरक महु जीव कि ईस समान॥ ६९॥ सुरसरि जल कृत
वारुनि जाना॥ कबहु न संत करहिं तेहि पाना॥ सुरसरि मिले सु पावन जैसे॥ ईस अनीसहि अं
तर तैसे॥ संभु सहज समरथ भगवाना॥ यह विवाह सब विधि कल्याना॥ दुराराध्य पै अहहिं म
हेस॥ आसु तोष पुनि किए कलेस॥ जौं तप करइ कुमारि तुम्हारी॥ भावि उ मेटि सकहिं त्रिपुरा
री॥ जद्यपि वर अनेक जग माहीं॥ एहि कह सिव तजि दूसर नाहीं॥ वरदायक प्रनतारति भंज
न॥ कृपासिंधु सेवक मन रंजन॥ इच्छित फल विनु सिव अवराधे॥ लहिय न कोटि जोग जप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० साधे॥दोहा॥असकहिनारदसुमिरिँगिरिजहिदीन्हिअसीस॥होइहिअबकल्यान हरि
३० सबसंसयतजहुगिरीस॥७०॥असकहिब्रह्मभवनमुनिगयऊ॥आगिलचरितसुन
हुजसभयऊ॥पतिहिएकांतपाइकहमैना॥नाथनमैसमुझेमुनिबैना॥जौघरबर
कुलहोइअनूपा॥करियबिवाहसुताअनुरूपा॥नतकन्याबरुरहउकुँआरी॥कंतउ
मामममप्रानपियारी॥जौनमिलिहिबरुगिरिजहिजोगू॥गिरिजडसहजकहिहिसबलो
गू॥सोइबिचारिपतिकरेहुबिवाहू॥जेहिनबहोरिहोइउरदाहू॥असकहिपरीचरननि
धरिसीसा॥बोलेसहितसनेहगिरीसा॥बरुपावकप्रगटैससिमाहीं॥नारदबचनअन्य
थानाहीं॥दोहा॥प्रियासोचुपरिहरहुसबसुमिरहुश्रीभगवान॥पारबतीहिनिरमएउ ३०
जेहिसोइकरिहिकल्यान॥७१॥अबजौतुम्हहिसुतापरनेहू॥तौअससजाइसिषावनदेहू॥

करइसोतपुजेहिमिलहिंमहेसू॥आनउपायनमिटिहिकलेसू॥नारदबचनसगर्भसहे
तू॥सुंदरसबगुननिधिब्रषकेतू॥असबिचारितुम्हतजहुअसंका॥सबहिभाँतिसंकरअक
लंका॥सुनिपतिबचनहरषिमनमाहीं॥गईतुरतउठिगिरिजाँहीं॥उमहिबिलोकिनय जा
नभरिबारी॥सहितसनेहगोदबैठारी॥बारहिबारलेइउरलाई॥गदगदकंठनकछुक
हिजाई॥जगतमातुसर्बज्ञभवानी॥मातुसुखदबोलीमृदुबानी॥दोहा॥ःसुनहिमातुमैं
दीखअससपनसुनाउँतोहि॥सुंदरगौरसुबिप्रबरअसउपदेसेउमोहि॥७२॥करहिजा
इतपुसैलकुमारी॥नारदकहासोसत्यबिचारी॥मातुपितहिपुनियहमतभावा॥तपसु
खप्रददुखदोषनसावा॥तपबलरचैप्रपंचबिधाता॥तपबलसेषधरहिमहिभारा॥तपअ
धारसबसृष्टिभवानी॥करहिजाइतपुअसजियजानी॥सुनतबचनबिसमितमहतारी॥स

तपबलबिष्नुसकलजगत्राता। तपबलसंभुकरहिसंघारा २

पनसुनाएउगिरिहिहकारी॥ मातुपितहिबहुविधिसमुझाई॥ चलीउमातपहितहरष
षाई॥ प्रियपरिवारपिताअरुमाता॥ भएउविकलमुषआवनवाता॥ दोहा॥ वेदसिरामु
निआइतवसवहिकहासमुझाइ॥ पारवतीमहिमासुनतरहेप्रवोधहिपाइ॥ ७३॥ उर
धरिउमाप्रानपतिचरना॥ जाइविपिनलागीतपकरना॥ अतिसुकुमारनतनतपजोग॥
पतिपदसुमिरितजेसवभोग॥ नितनवचरनउपजअनुरागा॥ विसरिदेहतपहिमनु
लागा॥ संवतसहसमूलफलषाए॥ साकुषाइसतवरषगँवाए॥ कछुदिनभोजनवारिव
तासा॥ किएकठिनकछुदिनउपवासा॥ वेलपातिमहिपरैसुषाई॥ तीनिसहससंवतसो
इषाई॥ पुनिपरिहरेसुषानेपरना॥ उमहिनामतवभएउअपरना॥ देषिउमहितपषी
नसरीरा॥ व्रह्मगिराभैगगनगभीरा॥ दोहा॥ भएउमनोरथसुफलतवसुनुगिरिराजकुमा ३१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रि॥ परिहरि दुसह कलेस सव अव मिलिहहिं त्रिपुरारि॥ ७४॥ अस तपु काहुँ न कीन्ह भ-
वानी॥ भए अनेक धीर मुनि ग्यानी॥ अव उर धरहु ब्रह्म वर वानी॥ सत्य सदा संतत सुचि
जानी॥ आवै पिता वुलावन जवहीं॥ हठ परिहरि घर जाएहु तवहीं॥ मिलहिं जव तुम्ह अव
सप्तरिषीसा॥ जानेहु तव प्रमान वागीसा॥ सुनत गिरा विधि गगन वषानी॥ पुलक गात गि-
रिजा हरषानी॥ उमा चरित सुंदर मैं गावा॥ सुनहु संभु कर चरित सुहावा॥ जव तें सती जाइ
तनु त्यागा॥ तव तें सिव मन भएउ विरागा॥ जपहिं सदा रघुनायक नामा॥ जहँ तहँ सुन-
हिं राम गुन ग्रामा॥ दोहा॥ चिदानंद सुखधाम सिव विगत मोह मद काम॥ विचरहिं महि
धरि हृदय हरि सकल लोक अभिराम॥ ७५॥ कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ग्याना॥ कतहुँ रा-
म गुन करहिं वषाना॥ जदपि अकाम तदपि भगवाना॥ भगत विरह दुष दुषित सुजा-

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० ना॥ एहि विधि गएउ काल बहु बीती॥ नित नइ होइ राम पद प्रीती॥ नेम प्रेम संकर क
३२ र देषा॥ अविचल हृदय भगति के रेषा॥ प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला॥ रूप सील निधि तेज
विसाला॥ बहु प्रकार संकरहि सराहा॥ तुम्ह विनु अस व्रत को निरवाहा॥ बहु विधि राम
सिवहि समुझावा पारवती कर जन्म सुनावा॥ अति पुनीत गिरिजा के करनी॥ विस्तर स
हित कृपानिधि वरनी॥ दोहा॥ अव विनती मम सुनहु सिव जो मो पर निज नेहु॥ जाइ वि
वाहहु सैलजहि यह मोहि मागे देहु॥ ७६॥ कह सिव जदपि उचित अस नाहीं॥ नाथ
बचन पुनि मेटि न जाहीं॥ सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा॥ परम धरम यह नाथ हमारा॥
मातु पिता गुरु प्रभु के वानी॥ विनहि विचार करिय सुभ जानी॥ तुम सव भाँति परम हि ३२
तकारी॥ अज्ञा सिर पर नाथ तुम्हारी॥ प्रभु तोषे सुनि संकर बचना॥ भगति विवेक धर्म जु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नरचना॥ कहप्रभुहरतुम्हारपनरहेऊ॥ अबउरराषेउजोहमकहेऊ॥ अंतरध्यानभ
एअसभाषी॥ संकरसोमूरतिउरराषी॥ तबहिंसप्तरिषिसिवपहिंआए॥ बोलेप्रभुअतिबच
नसुहाए॥ दोहा॥ पारबतीपहिंजाइतुम्हप्रेमपरीछालेहु॥ गिरिहिप्रेरपठवहुभवनदू
रिकरिहुसंदेहु॥ ७७॥ तबरिषितुरतउमापहिंगये॥ देषिदसामुनिविस्मयभये॥ रिषि
न्हगौरिदेषीतहँकैसी॥ मूरतवंततपस्याजैसी॥ बोलेमुनिसुनिसैलकुमारी॥ करहुकव
नकारनतपभारी॥ किहिअवराधहुकातुम्हचहहू॥ हमसनसत्यमरमुकिनकहहू॥ सु
नतरिषिन्हकेबचनभवानी बोलीगूढबचनम्रदुबानी॥ कहतबचनमनुअतिसकु
चाई॥ हसिहहुसुनिहमारिजडताई मनुहठपरानसुनैसिषावा॥ चहतबारिपरभीत
उठावा॥ नारदकहासत्यसोजाना॥ बिनपंषन्हहमचहहिंउडाना॥ देषोमुनिअव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वेकहमारा॥चाहिअसदासिवहिभरतारा॥दोहा॥ः सुनतबचनबिहसेरिषयगिरिसंभव

बा०
३३ तवदेह॥नारदकरउपदेससुनिकहहुबसेकिसुगेह॥७८॥दछ्छिसुतन्हउपदेसिन्हि

जाई॥तिन्हिफिरिभवननदेषाआई॥चित्रकेतुकरघरउन्हघाला॥कनककसिपुकरपुनि

असहाला॥नारदसिषजेसुनहिनरनारी॥अवसिहोहितजिभवनभिषारी॥मनकपटी

तनसज्जनचीन्हा॥आपुसरिससबहीचहकीन्हा॥तेहिकेबचनमानिबिस्वासा॥तुम्हचाहहु

पतिसहजउदासा॥निर्गुननिलजकुवेषकपाली॥अकुलअगेहदिगंवरव्याली॥कहहु

कवनसुषअसवरपाए॥भलभूलिहुठगकेवौराए॥पंचकहेसिवसतीविवाही॥पुनिअवडेरि

मराएन्हितांही॥दोहा॥अवसुषसोवतसोचनहिभीषमागिभवषाहिं॥सहजएकाकिन्हके

भवनकवहुकिनारिषटाहिं॥७९॥अजहूंमानहुकहाहमारा॥हमतुम्हकहंवरनीकविचा ३३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रा॥ अति सुंदर सुचि सुषद सुसीला॥ गावहिं बेद जासु जस लीला॥ दूषन रहित सकल गुन रासी॥
श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी॥ अस बर तुम्हहि मिलाउब आनी॥ सुनत बचन कहि बिहसि भवानी॥ स
त्य कहेहु गिरिभव तनु येहा॥ हठ न छूट छूटै बरु देहा॥ कनकौ पुनि पषान तें होई॥ जारेहु सह
ज न परिहर सोई॥ नारद बचन न मैं परिहरऊ॥ बसौ भवनु उजरौ नहि डरऊ॥ गुरु के बचन प्रती
जे ति न हीं॥ सपनेहु सुगम न सुष सिधि तेही॥ दोहा॥ महादेव अवगुन भवन बिष्नु सकल गुन धाम
जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम॥ ८०॥ जौ तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा॥ सुनति उ
सिष तुम्हारि धरि सीसा॥ अब मैं जनम संभु हित हारा॥ को गुन दूषन करै बिचारा॥ जौ तुम्हरे हठ हृ
दय बिसेषी॥ रहि न जाइ बिनु किए बरेषी॥ तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं॥ बर कन्या अनेक जग
माहीं॥ जनम कोटि लगि रगरि हमारी॥ बरौ संभु न त रहौं कुमारी॥ तजौ न नारद कर उपदेसा॥ आ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ३४ पुकहहिसतवारमहेसा॥ मैपापरौंकहैजगदंवा॥ तुम्हगृहगवनहुभयउविलंवा॥ देषिप्रे
मवोलेमुनिग्यानी॥ जयजयजगदंविकेभवानी॥ दोहा॥ तुम्हमायाभगवानसिवसकलज
गतपितुमातु॥ नाइचरनसिरमुनिचलेपुनिपुनिहरषिततगातु॥ ८१॥ जाइमुनिन्हहिमवं
तपठाए॥ करिविनतीगिरिजहिगृहल्याए॥ वहुरिसप्तरिषिसिवपहिंजाई॥ कथाउमा
कैसकलसुनाई॥ भएमगनसिवसुनतसनेहा॥ हरषिसप्तरिषिगवनेगेहा॥ मनुकरिथि
रुतवसंभुसुजाना॥ लगेकरनरघुनायकध्याना॥ तारकुअसुरभयउतेहिकाला॥ भुजप्र
तापवलतेजविसाला॥ तेहिसवलोकलोकपतिजीते भएदेवसुषसंपतिरीते॥ अजरअम
रसोजीतिनजाई॥ हारेसुरकरिविविधिलराई॥ तवविरंचिपहिंजाइपुकारे॥ देषेविधिस
वदेवदुषारे॥ दोहा॥ सवसनकहावुझाइविधिदनुजनिधनतवहोइ॥ संभुसुक्रसंभूतसु ३४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तरहिहिंजौंतेरनसोइ॥८२॥मोरकहासुनिकरहुउपाई॥होइहिईश्वरकरिहिसहाई॥
सतीजोंतजीदक्षमषदेहा॥जनमीजाइहिमाचलगेहा॥तेहितपुकीन्हसंभुपतिलागी
सिवसमाधिवैठेसवत्यागी॥जदपिअहैअसमंजसभारी॥तदपिवातएकसुनहुहमारी
पठवहुकामजाइसिवपाहीं॥करैछोभसंकरमनमाहीं॥तवहमजाइसिवहिसिरनाई
करवाउवविवाहवरिआई॥एहिविधिभलेहिदेवहितहोई॥मतअतिनीककहैसवु
कोई॥अस्तुतिसुरन्हकीन्हअसहेत॥प्रगटेउविषमवानझषकेत॥दोहा॥सुरन्हक
हीनिजविपतिसवसुनिमनकीन्हविचार।संभुविरोधनकुसलमोहिविहसिकहेउअस
मार॥८३॥तदपिकरवमैकाजतुम्हारा॥श्रुतिकहपरमधरमउपकारा॥परहितलागित
जैजेदेही॥संततसंतप्रसंसहितेही॥असकहिचलेउसवहिसिरनाई॥सुमनधनुष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० कर लेत सहाई॥ चलत मार अस हृदय बिचारा॥ सिव बिरोध ध्रुव मरन हमारा॥ तब आप
३५ न प्रभाउ बिस्तारा॥ निज बस कीन्ह सकल संसारा॥ कोपेउ जबहि बारिचर केतू॥ छन मह
मिटे सकल श्रुति सेतू॥ ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना॥ धीरज धरम ज्ञान बिज्ञाना॥ सदाचार
जप जोग बिरागा॥ सभय बिवेक कटक सब भागा॥ छंद॥ भागेउ बिवेक सहाइ सहित सो
ग सुभट संजुग महि मुरे॥ सदग्रंथ पर्वत कंदरनि महु जाइ तेहि अवसर दुरे॥ होनिहार का
करतार को रखवार जग खरभर परा॥ दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहु कोपि कर धनु स
रु धरा॥ दोहा॥ जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम॥ ते निज निज मरजाद तजि
भए सकल बस काम॥ ८४॥ सब के हृदय मदन अभिलाषा॥ लता निहारि नवहि तरु ३५
साखा॥ नदी उमगि अंबुधि कहु धाई॥ संगम करहि तलाव तलाई॥ जहँ असि दसा ज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

डन्हिकेवरनी॥कोकहिसकैसचेतनकरनी॥पशुपछीनभजलथलचारी॥भएका
मवससमयविसारी॥मदनअंधव्याकुलसवलोका॥निसिदिननहिअवलोकहिकोका
देवदनुजनरकिन्नरव्याला॥प्रेतपिसाचभूतवेताला॥इन्हकीदसानकहेउवखानी
सदाकामकेचेरेजानी॥सिद्धविरक्तमहामुनिजोगी॥तेपिकामवसभएवियोगी॥छंद॥
भएकामवसजोगीसतापसपावरनकीकोकहै॥देषहिचराचरनारिमयजेब्रह्ममयदे
षतरहे॥अवलाविलोकहिपुरुषमयजगपुरुषसवअवलामयं॥दुइदंडभरिब्रह्मांड
भीतरकामकृतकौतुकअयं॥सोरठा॥धरीनकाहूधीरसवकेमनमनसिजहरे॥जेराषेर
घुवीरतेउवरेतेहिकालमहु॥८५॥उभयघरीअसकौतुकभएउ॥जवलगिकामसंभु
पहिंगएउ॥सिवहिविलोकिससंकेउमारू॥भएजथाथितिसवसंसारू॥भएतुरतस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० वजीवसुखारे॥जिमिमद उतरिगएमतवारे॥रुद्रहिदेखिमदनभयमाना॥दुराध॰
८६ र्षदुर्गमभगवाना॥फिरतलाजकछुकरिनहिजाई॥मरनुठानिमनरचेसिउपाई॥प्र
गटेसितुरतरुचिररितुराजा॥कुसुमितनवतरुराजिबिराजा॥बनउपबनबापिकातडा
गा॥परमसुभगसबदिसाबिभागा॥जहँतहँजनुउमगतअनुरागा॥देखिमुएहुँमनम
नसिजजागा॥छंद॥जागेमनोभवमुएहुँमनबनसुभगतानपरैकही॥सीतलसु
गंधसुमंदमारुतमदनअनलसखासही॥बिकसेसरन्हिबहुकंजगुंजतपुंजमंजु
लमधुकरा॥कलहंसपिकसुकसरसरवकरिगाननाचहिंअपछरा॥दोहा॥सक
लकलाकरिकोटिबिधिहारेउसेनसमेत॥चलीनअचलसमाधिसिवकोपेउहृ ८६
दयनिकेत॥८६॥देखिरसालबिटपबरसाखा॥तेहिपरचढेउमदनमनमाखा॥सु

मनचापनिजसरसंधाने॥ अतिरिसताकिश्रवनलगिताने॥ छाडेविषमविसिषउर
लागे॥ छुटीसमाधिसंभुतवजागे॥ भयउईसमनछोभविसेषी॥ नयनउघारिसकल
दिसिदेषी॥ सौरभपल्लवमदनविलोका॥ भयउकोपकंपेउत्रयलोका॥ तवशिवतीस
रनयनउघारा॥ चितवतकामभयउजरिछारा॥ हाहाकारभयउजगभारी॥ डरपेसुर
भयेअसुरसुषारी॥ समुझिकामसुषसोचहिंभोगी॥ भयेअकंटकसाधकजोगी॥ छंद॥
जोगीअकंटकभयेपतिगतिसुनतरतिमुरछितभई॥ रोदतिवदतिबहुभांतिकरुनाक
रतिसंकरपहिंगई॥ अतिप्रेमकरिविनतीविविधिविधिजोरिकरसन्मुषरही॥ प्रभुआसु
तोषकृपालशिवअवलानिरषिवोलेसही॥ दोहा॥ अवतेंरतितवनाथकरहोइहिना
मअनंग॥ विनुवपुव्यापिहिसवहिंपुनिसुनुनिजमिलनप्रसंगु॥ ८७॥ जवजदुवंस

बा० ८७

कृस्न अवतारा॥ होइहि हरन महा महिभारा॥ कृस्न तनय होइहि पति तोरा॥ बचन
अन्यथा होइ न मोरा॥ रतिगवनी सुनि संकर बानी॥ कथा अपर अब कहौं बखानी॥
देवन समाचार सब पाए॥ ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाए॥ सब सुर बिस्नु बिरंचि समेता॥ गए
जहं सिव कृपानिकेता॥ पृथक पृथक तिन्ह कीन्ह प्रसंसा॥ भए प्रसन्न चंद्र अवतंसा॥
बोले कृपासिंधु बृषकेतू॥ कहहु अमर आए केहि हेतू॥ कह बिधि प्रभु तुम्ह अंतर
जामी॥ तदपि भगति बस बिनवौं स्वामी॥ दोहा॥ सकल सुरन्ह के हृदय अस संकर पर
म उछाहु॥ निज नयनन्हि देखा चहहिं नाथ तुम्हार बिबाहु॥ ८८॥ यह उत्सव देखिय
भरि लोचन॥ सोइ कछु करहु मदन मद मोचन॥ कामु जारि रति कहुं बरु दीन्हा॥ कृपा ८७
सिंधु यह अति भल कीन्हा॥ सासति करि पुनि करहि पसाउ॥ नाथ प्रभुन्ह कर सहज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुभाउ॥ पारबती तपु कीन्ह अपारा॥ करहु तासु अब अंगीकारा॥ सुनि बिधि बिनय समुझि
प्रभु बानी॥ ऐसइ होउ कहा सुष मानी॥ तब देवन्ह दुंदुभी बजाई॥ बरषि सुमन जय जय
सुरसाई॥ अवसर जानि सप्तरिषि आए॥ तुरतहि बिधि गिरिभवन पठाए॥ प्रथम गए जहं र
है भवानी॥ बोले मधुर बचन छल सानी॥ दोहा॥ कहा हमार न सुनेहु तब नारद के उपदे
स॥ अब भा झूठ तुम्हार पन जारेउ काम महेस॥ ७७॥ सुनि बोली मुसुकाइ भवानी॥ उचित
कहेहु मुनिवर बिज्ञानी॥ तुम्हरे जान काम अब जारा॥ अब लौं संभु रहे सबिकारा॥ हमरे
ज्ञान सदा सिव जोगी॥ अज अनवद्य अकाम अभोगी॥ जौं मै सिव सेये अस जानी॥ प्रीति
समेत करम मन बानी॥ तौ हमार पन सुनहु मुनीसा॥ करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा॥ तु
म्ह जो कहा हर जारेउ मारा॥ सोइ अति बड अबिबेक तुम्हारा॥ तात अनल कर सहज सु

भाऊ॥हिमतेहिनिकटजाइनहिकाऊ॥गएसमीपसोअवसिनसाई॥असिमनमथमहे
वा० सकैनाई॥दोहा॥हियहरषेमुनिवचनसुनिदेखिप्रीतिविश्वास॥चलेभवानिहिनाइसि
३८ रगएहिमाचलपास॥९०॥सवप्रसंगगिरिपतिहिसुनावा॥मदनदहनसुनिअतिदुषपा
वा॥वहुरिकहेउरतिकरवरदाना॥सुनिहिमवंतवहुतसुषमाना॥हृदयविचारिसंभुप्रभु
ताई॥सादरमुनिवरलिएवुलाई॥सुदिनसुनषतसुघरीसुचाई॥वेगिवेदविधिलगनधरा
ई॥पत्रीसप्तरिषिन्हसोदीन्ही॥गहिपदविनयहिमाचलकीन्ही॥जाइविधिहितिन्हदीन्हि
सोपाती॥वांचतप्रीतिनहृदयसमाती॥लगनवांचिविधिसवहिसुनाई॥हरषेमुनिसव
सुरसमुदाई॥सुमनवृष्टिनभवाजनवाजे॥मंगलसकलदसहुदिसिसाजे॥दोहा॥लगेस ३८
वारनसकलसुरवाहनविविधिविमान॥होहिंसगुनमंगलसुभगकरहिंअपछरागान॥

९१॥ सिवहि संभुगन करहि सिंगारा॥ जटामुकुट अहि मौरु संवारा॥ कुंडल कंकन पहिरे
व्याला॥ तन विभूति कटि केहरि छाला॥ ससि ललाट सुंदर सिर गंगा॥ नयन तीनि उपवीत
भुजंगा॥ गरल कंठ उर नर सिर माला॥ असिव वेष सिवधाम कृपाला॥ कर त्रिसूल अरु डम
रु विराजा॥ चले वसह चढि वाजहि वाजा॥ देखि सिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं॥ वर लायक दुल
हिनि जग नाहीं॥ विष्नु विरंचि आदि सुर व्राता॥ चढि चढि वाहन चले वराता॥ सुर समाज स
व भांति अनूपा॥ नहि वरात दूलह अनुरूपा॥ दोहा॥ विष्नु कहा तव विहसि करि वोलि स
कल दिसिराज॥ विलग विलग होइ चलहु सव निज निज सहित समाज॥ ९२॥ वर अनुहारि
वरात न भाई॥ हंसी करैहहु पर पुर जाई॥ विष्नु वचन सुनि सुर मुसुकाने॥ निज निज सेन स
हित विलगाने॥ मन ही मन महेस मुसुकाहीं॥ हरि के व्यंग्य वचन नहि जाहीं॥ अति प्रिय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
९३ वचनसुनतप्रियकेरे॥भृंगिहिप्रेरिसकलगनटेरे॥सिवअनुसासनसुनिसबआए॥प्रभुप
वि दजलजसीसतिन्हनाए॥नानावाहननानावेषा॥विहसेसिवसमाजनिजदेषा॥कोउमु
षहीनबिपुलमुषकाहू॥विनुपदकरकोउबहुपदबाहू॥विपुलनयनकोउनयनविहीना
रिष्टपुष्टकोउअतितनषीना॥छंद॥तनषीनकोउअतिपीनपावनकोउअपाव
नगतिधरे॥भूषनकरालकपालकरसबसद्यसोनिततनभरे॥षरस्वानसुअरसृकाल
मुषगनवेषअगनितकोगनै॥बहुजिनसप्रेतपिसाचजोगिजमातबरनतनहिवनै॥दो
हा॥नाचहिगावहिगीतपरमतरंगीभूतसब॥देषतअतिविपरीतबोलहिवचनवि
चित्रविधि॥९३॥जसदूलहतसिबनीबराता॥कौतुकविविधहोहिमगजाता॥इहाँहिमा ९३
चलरचेउविताना॥अतिविचित्रनहिजाइवषाना॥सैलसकलजहँलगिजगमाहीं॥ल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घुबिसालनहिंबरनिसिराहीं॥बनसागरसबनदीतलावा॥हिमगिरिसबकहुंनेवतिपठा
वा॥ कामरूपसुंदरतनुधारी॥सहितसमाजसहितबरनारी॥गएसकलतुहिनाचलगे
हा॥गावहिंमंगलसहितसनेहा॥प्रथमहिंगिरिसबगृहसवाए॥जथाजोगजहंतहंस
बछाए॥पुरसोभाअवलोकिसुहाई॥लागैलघुबिरंचिनिपुनाई॥छंद॥लघुलागिबिधि
कीनिपुनताअवलोकिपुरसोभासही॥बनबागकूपतडागसरितासुभगसबसककोकही
मंगलबिपुलतोरनपताकाकेतुगृहगृहसोहहीं॥बनितापुरुषसुंदरचतुरछबिदेखिमु
निमनमोहहीं॥दोहा॥जगदंबाजहंअवतरीसोपुरबरनिकिजाइ॥रिधिसिधिसंपतिसक
सुष लँनितनूतनअधिकाइ॥९४॥नगरनिकटबरातसुनिआई॥पुरषरभरसोभाअधिका
ई॥करिबनावसजिबाहननाना॥चलेलेनसादरअगवाना॥हियहरषेसुरसेननिहारी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हरिहि देषि अति भए सुषारी॥ सिव समाज जव देषन लागे॥ विडरि चले वाहन सब भागे।
धरि धीरज तहँ रहे सयाने॥ वालक सव लै जीव पराने॥ गए भवन पूछहि पितु माता॥ क
हहिं वचन भय कंपित गाता॥ कहिय काह कहि जाइ न वाता॥ जम कर धार किधौं वरिया
ता॥ वर वौराह वरद असवारा॥ व्याल कपाल विभूषन छारा॥ छंद॥ः तन छार व्याल क
पाल भूषन नगन जटिल भयंकरा॥ संग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि विकट मुष रजनीच
रा॥ जो जियत रहिहि वरात देषत पुन्य वड तेहि कर सही॥ देषिहि सो उमा विवाहु घर घर
वात असि लरिकन्ह कही॥ दोहा॥ समुझि महेस समाज सव जननि जनक मुसकाहिं
वाल वुझाए विविध विधि निडर होउ डर नाहिं॥ ९५॥ लै अगवान वरातहि आए॥ दि
ए सवहि जनवास सुहाए॥ मैना सुभ आरती सँवारी॥ संग सुमंगल गावहि नारी॥ कंच

नथा रस सोह वरषानी॥ परिछन चली हरहि हरषानी॥ विकट वेष रुद्रहि जब देषा॥ अवलन
उर भय भएउ विसेषा॥ भागि भवन पैठीं अति त्रासा॥ गए उमहेस जहाँ जनवासा॥ मैना हृद
य भए उदुष भारी॥ लीन्ही बोलि गिरीस कुमारी॥ अधिक सनेह गोद वैठारी॥ स्याम सरोज नै
न भरि वारी॥ जेहि विधि तुम्हहि रूप अस दीन्हा॥ तेहि जड वर वाउर कस कीन्हा॥ छंद॥ क
स कीन्ह वर वौराह विधि जेहि तुम्हहि सुंदरता दई॥ जो फल चहिय सुर तरु वरहि सो वरवस व
वूरहि लागई॥ तुम्ह सहित गिरि तें गिरौं पावक जरौं जलनिधि महु परौं॥ घर जाउ अपजस हो
उ जग जीवत विवाह न हौं करौं॥ दोहा॥ भई विकल अवला सकल दुषित देषि गिरि नारि
करि विलाप रोदति वदति सुता सनेह संभारि॥ ९६॥ नारद कर मैं काह विगारा॥ भवन मोर जि
न्ह वसत उजारा॥ अस उपदेस उमहि जिन्ह दीन्हा॥ वौरे वरहि लागि तपु कीन्हा॥ साचे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० हु उन्ह के मोह न माया॥ उदासीन धन धाम न जाया॥ पर घर घालक लाज न भीरा॥ बाँझ

४१ कि जान प्रसव कै पीरा॥ जननिहि बिकल बिलोकि भवानी॥ बोली जुत बिबेक मृदु बानी॥

अस बिचारि सोचहि जनि माता॥ सो न टरै जो रचै बिधाता॥ करम लिखा जौं बाउर नाहू॥ तौ क

त दोष लगाइय काहू॥ तुम्ह सन मिटहि कि बिधि के अंका॥ मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका॥

छंद॥ जनि लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अवसर नहीं॥ दुष सुष जो लिषा लिला

र हमरे जाव जहँ पाउव तहीं॥ सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं॥

बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं॥ दोहा॥ तेहि अवसर नारद सहि

त अरु रिषि सप्त समेत॥ समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत॥ ९७॥ तब नारद

सबही समुझावा॥ पूरब कथा प्रसंग सुनावा॥ मयना सत्य सुनहु मम बानी॥ जगदंबा तव ४१

सुताभवानी॥ अजाअनादिसक्तिअविनासिनि॥ सदासंभुअरधंगनिवासिनि॥ जग
संभवपालनलयकारिनि॥ निजइछालीलावपुधारिनि॥ जनमीप्रथमदक्षगृहजा
ई॥ नामसतीसुंदरतनुपाई॥ तहहुसतीसंकरहिविवाही॥ कथाप्रसिद्धसकलजगमा
ही॥ एकवारआवतसिवसंगा॥ देखेउरघुकुलकमलपतंगा॥ भएउमोहसिवकहान
कीन्हा॥ भ्रमवसवेषसीयकरलीन्हा॥ छंद॥ सीयवेषसतीजोकीन्हतेहिअपराधसं
करपरिहरी॥ हरविरहजाइवहोरिपितुकेजग्यजोगानलजरी॥ अवजनमितुम्हरेभव
ननिजपतिलागिदारुनतपकिया॥ अससजानिसंसयतजहुगिरिजासर्वदासंकरप्रि
या॥ दोहा॥ मुनिनारदकेवचनतवसवकरमिटाविषाद॥ छनमहुव्यापेउसकल
पुरघरघरयहसंवाद॥ ९८॥ तवमयनाहिमवंतअनंदे॥ पुनिपुनिपारवतीपदवंदे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० नारिपुरुषसिसुजुवासयाने॥नगरलोगसबअतिहरषाने॥लागेहोनपुरमंगलगाना॥
सजेसबहिहाटकघटनाना॥भाँतिअनेकभईजेवनारा॥सूपशास्त्रजसकछुब्यवहारा॥
८२ सोजेवनारकिजाइबखानी॥बसहिभवनजेहिमातुभवानी॥सादरबोलेसकलबराती॥
बिस्नुबिरंचिदेवसबजाती॥बिबिधिपाँतिबैठीजेवनारा॥लागेपरुसननिपुनसुआरा॥
नारिबृंदसुरजेवतजानी॥लगीदेनगारीमृदुबानी॥छंद॥गारीमधुरस्वरदेहिंसुंदरिबिं
गबचनसुनावहीं॥भोजनकरहिंसुरअतिबिलंब बिनोदसुनिसचुपावहीं॥जेवतजो
बढ्योअनंदसोमुखकोटिहूँनपरैकह्यो॥अँचवाइदीन्हेपानगवनेबासजेहँजाको
रह्यो॥दोहा॥बहुरिमुनिन्हहिमवंतकहुँलगनसुनाईआइ॥समयबिलोकिबिबा ८२
हकरपठएदेवबुलाइ॥९९॥बोलिसकलसुरसादरलीन्हे॥सबहिजथोचितआसन

नदीन्हे॥बेंदीबेदबिधानसँवारी॥सुभगसुमंगलगावहिनारी॥सिंहासनअतिदिब्यसु
हावा॥जाइनबरनिबिरंचिबनावा॥बैठेसिवबिप्रन्हसिरनाई॥हृदयसुमिरिनिजप्रभु
रघुराई॥बहुरिमुनीसन्हउमाबोलाई॥करिसिंगारसषीलैआई॥देषतरूपसकलसुर
मोहे॥बरनैछबिअसकबिजगकोहे॥जगदंबिकाजानिभवभामा॥सुरन्हमनहिमन
कीन्हप्रनामा॥सुंदरतामरजादभवानी॥जाइनकोटिहुबदनबषानी॥छंद॥कोटिहु
बदननहिबनैबरनतजगजननिसोभामहा॥सकुचहिकहतश्रुतिसेषसारदमंदमति
तुलसीकहाँ॥छबिषानिमातुभवानिगवनीमध्यमंडपसिवजहाँ॥अवलोकिसकहि
नसकुचिपतिपदकमलमनमधुकरतहाँ॥दोहा॥मुनिअनुसासनगनपतिहिपूजेउ
संभुभवानि॥कोउसुनिसंसयकरैजनिसुरअनादिजियजानि॥१००॥जसिबिबाहकैबि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

धिश्रुतिगाई॥ महामुनिन्हसोसबकरवाई॥ गहिगिरीसकुसकन्यापानी॥ भवहि
समरपीजानिभवानी॥ पानिग्रहनजबकीन्हमहेसा॥ हियहरषेतबसकलसुरेसा
वेदमंत्रमुनिवरउच्चरहीं॥ जयजयजयसंकरसुरकरहीं॥ बाजहिबाजनविविधिविधा
ना॥ सुमनवृष्टिनभभैविधिनाना॥ हरगिरिजाकरभएउविवाहू॥ सकलभुवन
भरिरहाउछाहू॥ दासीदासतुरंगरथनागा॥ धेनुवसनमनिवस्तुविभागा॥ अन्नक
नकभाजनभरिजाना॥ दाइजदीन्हनजाइवषाना॥ छंद॥ दाइजदियोवहुभाँतिपुनि
करजोरिहिमभूधरकह्यो॥ कादेउँपूरनकामसंकरचरनपंकजगहिरह्यो॥ सिवकृपासा
गरससुरकरसंतोषसवभाँतिहिकियो॥ पुनिगहेपदपाथोजमयनाप्रेमपरिपूरनहि
यो॥ दोहा॥ नाथउमाममप्रानप्रियगृहकिंकरीकरेउ॥ छमेहुसकलअपराधअव

होउप्रसन्नबरदेहू॥१०१॥बहुबिधिसंभुसासुसमुझाई॥गवनीभवनचरनसिरुनाई॥जननी
उमाबोलितबलीन्ही॥लैउछंगसुंदरसिषदीन्ही॥करेहुसदासंकरपदपूजा॥नारिध
रमपतिदेवनदूजा॥बचनकहतभरेलोचनबारी॥बहुरिलायउरलीन्हिकुमारी॥कत
बिधिसृजीनारिजगमाहीं॥पराधीनसपनेहुसुषनाहीं॥भइअतिप्रेमबिकलमहतारी॥
धीरजकीन्हकुसमयबिचारी॥पुनिपुनिमिलतिपरतिगहिचरना॥परमप्रेमकछुजाइ
नबरना॥सबनारिन्हमिलिभेटिभवानी॥जाइजननिउरपुनिलपटानी॥छंद॥जन
निहिबहुरिमिलिचली॥उचितअसीससबकाहूदई॥फिरिफिरिबिलोकतिमातुतनत
बसषीलैसिवपहिंगई॥जाचकसकलसंतोषिसंकर॥उमासहितभवनचले॥सबअ
मरहरषेसुमनबरषिनिसाननभबाजेभले॥दोहा॥चलेसंगहिमवंततबपहुचावनअ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० तिहेतु॥ बिबिधिभाँतिपरितोषकरिबिदाकीन्हवृषकेतु॥१०२॥ तुरतभवनआएगिरिराई
४४ सकलसैलसरलिएबुलाई॥ आदरदानबिनयबहुमाना॥ सबकरबिदाकीन्हहिमवाना॥
जबहिंसंभुकैलासहिंआए॥ सुरसबनिजनिजलोकसिधाए॥ जगतमातुपितुसंभुभवानी॥
तेहिंसिंगारुनकहउंबखानी॥ करहिंबिबिधिबिधिभोगबिलासा॥ गनन्हसमेतबसहिंकै
लासा॥ हरगिरिजाबिहारनितनयऊ॥ एहिबिधिबिपुलकालचलिगयऊ॥ तबजनमेउ
षटबदनकुमारा॥ तारकअसुरसमरजेहिंमारा॥ आगमनिगमप्रसिद्धपुराना॥ षनमुष
जनमसकलजगजाना॥ छंद॥ जगुजानषनमुषजनमकर्मप्रतापपुरुषारथमहा॥ ते
हिहेतुमैंवृषकेतुसुतकरचरितसंछेपहिंकहा॥ यहउमासंभुबिबाहजेनरनारिकहहिंजे ४४
गावहीं॥ कल्यानकाजबिबाहमंगलसर्बदासुषपावहीं॥ दोहा॥ चोरनसिंधुगिरिजारव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामहितेसपनेहुनसोहाहीं ४

नवेदनपावैपारु॥वरनैतुलसीदासकिमिअतिमतिमंदगवाँरु॥१०३॥संभुचरितसुनिसर
ससुहावा॥भरद्वाजमुनिअतिसुखपावा॥वहुलालसाकथापरवाढी॥नयननीररोमाव
लिठाढी॥प्रेमविवसमुखआवनवानी॥दसादेषिहरषेमुनिज्ञानी॥अहोधन्यतवजन्म
मुनीसा॥तुम्हहिप्रानसमप्रियगौरीसा॥सिवपदकमलजिन्हहिरतिनाहीं॥विनुछलविस्व
नाथपदनेहू॥रामभगतकरलछनएहू॥सिवसमकोरघुपतिव्रतधारी॥विनुअघतजीस
तीअसिनारी॥पनुकरिरघुपतिभगतिदेषाई॥कोसिवसमरामहिप्रियभाई॥दोहा॥प्रथ
महिकहिमैसिवचरितवूझामरमतुम्हार॥सुचिसेवकतुम्हरामकेरहितसमस्तविकार॥१०४
मैजानातुम्हारगुनसीला॥कहौंसुनहुअवरघुपतिलीला॥सुनुमुनिआजुसमागमतोरे
कहिनजाइजससुखमनमोरे॥रामचरितअतिअमितमुनीसा॥कहिनसकहिसतकोटिअहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० हीसा॥ तदपिजथाश्रुतकहौंवषानी॥ सुमिरिगिरापतिप्रभुधनुपानी॥ सारददारुनारिसम
४५ स्वामी॥ रामसूत्रधरअंतरजामी॥ जेहिपरकृपाकरहिंजनुजानी॥ कविउरअजिरनचावहिं
वानी॥ प्रनवौंसोइकृपालरघुनाथा॥ वरनौंविसदजासुगुनगाथा॥ परमरम्यगिरिवरकै
लासू॥ सदाजहांशिवउमानिवासू॥ दोहा॥ सिद्धतपोधनजोगिजनसुरकिन्नरमुनिवृंद
वसहिंतहांसुकृतीसकलसेवहिंसिवसुषकंद॥ १०५॥ हरिहरविमुषधर्मरतिनाहीं॥ ते
नरतहंसपनेहुनहिंजाहीं॥ तेहिगिरिपरवटविटपविसाला॥ नितनूतनसुंदरसवका
ला॥ त्रिविधिसमीरसुसुंदरछाया॥ सिवविश्रामविटपश्रुतिगाया॥ एकवारतेहितरप्र
भुगयऊ॥ तरुविलोकिउरअतिसुषभयऊ॥ निजकरडासिनागरिपुछाला॥ वैठेसहज ४५
हिंसंभुकृपाला॥ कुंददइंदुदरगौरसरीरा॥ भुजप्रलंवपरिधनमुनिचीरा॥ तरुनअरुनअं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वृजसमचरना॥नखदुतिभगतहृदयतमहरना॥भुजगभूतिभूषनत्रिपुरारी॥आननस
रदचंदछबिहारी॥दोहा॥जटामुकुटसुरसरितसिरलोचननलिनबिसाल॥नीलकंठला
वन्यनिधिसोहबालबिधुभाल॥१०६॥बैठेसोहकामरिपुकैसे॥धरेसरीरसांतरसजैसे॥पा
रवतीभलअवसरजानी॥गईसंभुपहिमातुभवानी॥जानिप्रियाआदरअतिकीन्हा॥बा
मभागआसनहरदीन्हा॥बैठीसिवसमीपहरषाई॥पूरबजन्मकथाचितआई॥पतिहि
यहेतुअधिकमनमाही॥बिहसिउमाबोलीप्रियपाही॥कथाजोसकललोकहितकारी
सोइपूछनचहसैलकुमारी॥बिस्वनाथममनाथपुरारी॥त्रिभुवनमहिमाबिदिततुम्हा
री॥चरअरुअचरनागनरदेवा॥सकलकरहिपदपंकजसेवा॥दोहा॥प्रभुसमरथसर्वग्यसि
वसकलकलागुनधाम॥जोगग्यानवैराग्यनिधिप्रनतकल्पतरुनाम॥१०७॥जौमोपरप्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
५६ सन्नसुषरासी॥जानियसत्यमोहिनिजदासी॥तौप्रभुहरहुमोरअज्ञाना॥कहिरघु
नाथकथाविधिनाना॥जासुभवनसुरतरुतरहोई॥सहिकिदरिद्रजनितदुषसोई॥ससि
भूषनअसहृदयविचारी॥हरहुनाथममतिभ्रमभारी॥प्रभुजेमुनिपरमारथवादी॥
कहहिंरामकहुब्रह्मअनादी॥सेससारदावेदपुराना॥सकलकरहिंरघुपतिगुनगाना॥
तुम्हपुनिराममरामदिनराती॥सादरजपहुअनंगआराती॥रामसोअवधनृपतिसुतसो रा
ई॥कीअजअगुनअलषगतिकोई॥दोहा॥जौंनृपतनयतौब्रह्मकिमिनारिविरहम
तिभोरि॥देषिचरितमहिमासुनतभ्रमतिबुद्धिअतिमोरि॥१०८॥जौंअनीहव्यापक
विभुकोउ॥कहहुबुझाइनाथमोहिसोउ॥अज्ञजानिरिसउरजनिधरहू॥जेहिविधि
मोहमिटैसोइकरहू॥मैंवनदीषिरामप्रभुताई॥अतिभयविकलनतुम्हहिसुनाई॥तद ५६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पिमलिनमनबोधनआवा॥ सोफलभलीभाँतिहमपावा॥ अजहूँकछुसंसेउमनमो
रे॥ करहुकृपाबिनवौंकरजोरे॥ प्रभुतबमोहिबहुभाँतिप्रबोधा॥ नाथसोसमुझिकरहु
जनिक्रोधा॥ तबकरअसबिमोहअबनाहीं॥ रामकथापररुचिमनमाहीं॥ कहहुपुनी
तरामगुनगाथा॥ भुजगराजभूषनसुरनाथा॥ दोहा॥ बंदौंपदधरिधरनिसिरुबिनयक
रौंकरजोरि॥ बरनहुरघुबरबिसदजसश्रुतिसिद्धांतनिचोरि॥ १०७॥ जदपिजोषिताअ
नअधिकारी॥ दासीमनक्रमबचनतुम्हारी॥ गूढौतत्वनसाधुदुरावहिं॥ आरतअधिका
रीजहँपावहिं॥ अतिआरतिपूछौंसुरराया॥ रघुपतिकथाकहहुकरिदाया॥ प्रथमसो
कारनकहहुबिचारी॥ निर्गुनब्रह्मसगुनबपुधारी॥ पुनिप्रभुकहहुरामअवतारा॥ बा
लचरितपुनिकहहुउदारा॥ कहहुजथाजानकीबिवाही॥ राजतजासोदूषनकाही

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ४७ वनवसि कीन्हे चरित अपारा॥ कहहु नाथ जिमि रावनु मारा॥ राज वैठि कीन्ही वहु ली
ला॥ सकल कहहु संकर सुषसीला॥ दोहा॥ वहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अच
रज राम॥ प्रजा सहित रघुवंसमनि किमि गवने निज धाम॥ ११०॥ पुनि प्रभु कहहु
सो तत्व वषानी॥ जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी॥ भक्ति ज्ञान विग्यान विरागा॥ पुनि
सव वरनहु सहित विभागा॥ औरौ राम रहस्य अनेका॥ कहहु नाथ अति विमल वि
वेका॥ जो प्रभु मै पूछा नहि होई॥ सो उ दयाल राषहु जनि गोई॥ तुम्ह त्रिभुवन गुर
वेद वषाना॥ आन जीव पांवर का जाना॥ प्रश्न उमा कै सहज सुहाई॥ छल विहीन
सुनि सिव मन भाई॥ हर हिय राम चरित सव आए॥ प्रेम पुलक लोचन जल छाए॥८ ४७
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा॥ परमानंद अमित सुष पावा॥ दोहा॥ मगन ध्यान रस दंड

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जुगपुनिमनवादेहरकीन्ह॥रघुपतिचरितमहेसतबहरषितबरनैलीन्ह॥१११॥झूठे
उसत्यजाहिबिनुजाने॥जिमिभुजंगबिनुरजुपहिचाने॥जेहिजानेजगजाइहेराई॥
जागेजथासपनेभ्रमजाई॥बंदौबालरूपसोइराम॥सबसिधिसुलभजपतजसुनामू॥
मंगलभवनअमंगलहारी॥द्रवौसोदसरथअजिरबिहारी॥करिप्रनामरामहित्रि
पुरारी॥हरषिसुधासमगिराउचारी॥धन्यधन्यगिरिराजकुमारी॥तुम्हसमाननहिको
उउपकारी॥पूछेहुरघुपतिकथाप्रसंगा॥सकललोकजगपावनिगंगा॥तुम्हरघुबी
रचरनअनुरागी॥कीन्हिहुप्रस्नजगतहितलागी॥दोहा॥रामकृपातेहिमसुतासप
नेहुतवमनमाहिं॥सोकमोहसंदेहभ्रममम बिचारकछुनाहिं॥११२॥तदपिअसंका
कीन्हिहुसोई॥कहतसुनतसबकरहितहोई॥जिन्हहरिकथासुनीनहिकाना॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रा०
५८
श्रवनरंध्रअहिभवनसमाना॥नयनन्हिसंतदरसनहिदेषा॥लोचनमोरपंषकरलेषा॥ते
सिरकटुतूंबरिसमतूला॥जेननमतहरिगुरुपदमूला॥जिन्हहरिभगतिहृदयनहिआनी
जीवतसवसमानतेप्रानी॥जोनहिकरैरामगुनगाना॥जीहसोदादुरजीहसमाना॥कुलिसक
ठोरनिठुरसोइछाती॥सुनिहरिचरितनजोहरषाती॥गिरिजासुनहुरामकैलीला॥सुरहितद
नुजविमोहनसीला॥दोहा॥रामकथासुरधेनुसमसेवतसबसुषदानि॥सतसमाजसुरलोक
सबकोनसुनैअसजानि॥११३॥रामकथासुंदरकरतारी॥संसयविहगउडावनहारी॥रामक
थाकलिविटपकुठारी॥सादरसुनुगिरिराजकुमारी॥रामनामगुनचरितसुहाए॥जनमकरम
अगिनितश्रुतिगाए॥जथाअनंतरामभगवाना॥तथाकथाकीरतिविधिनाना॥तदपिजथा ५८
श्रुतिजसिमतिमोरी॥कहिहौंदेषिप्रीतिअतितोरी॥उमाप्रस्नतवसहजसुहाई॥सुषदसंत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

संभ्रमनमोहिभाई॥ एकबातनहिंमोहिसुहानी॥ जदपिमोहबसकहेहुभवानी॥ तुम्हजोकहा
रामकोउआना॥ जेहिश्रुतिगावधरहिंमुनिध्याना॥ दोहा॥ कहहिंसुनहिंअसअधमनर
ग्रसेजेमोहपिसाच॥ पाषंडीहरिपदविमुखजानहिंझूठनसाच॥ ११४॥ अग्यअकोविदअंधअ
भागी॥ काईविषयमुकुरमनलागी॥ लंपटकपटीकुटिलविसेषी॥ सपनेहुसंतसभानहिंदे
षी॥ कहहिंतेवेदअसंमतवानी॥ जिन्हहिंनसूझलाभनहिंहानी॥ मुकुरमलिनअरुनयन
विहीना॥ रामरूपदेषहिंकिमिदीना॥ जिन्हकेअगुननसगुनविवेका॥ जल्पहिंकल्पितवच
नअनेका॥ हरिमायावसजगतभ्रमाहीं॥ तिन्हहिंकहतकछुअघटितनाहीं॥ वातुलभूत
विवसमतवारे॥ तेनहिंवोलहिंवचनविचारे॥ जिन्हकृतमहामोहमदपाना॥ तिन्हकरकहा
करियनहिंकाना॥ सोरठा॥ असनिजहृदयविचारितजुसंसयभजुरामपद॥ सुनुगिरिराजे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ५८ कुमारिभ्रमतमरविकरवचनमम॥११५॥सगुनहिअगुनहिनहिकछुभेदा॥गावहिमुनिपु
रानवुधवेदा॥अगुनअरूपअलखअजजोई॥भगतप्रेमवससगुनसोहोई॥जोगुनरहित
सगुनसोकैसे॥जलुहिमउपलविलगनहिजैसे॥जासुनामभ्रमतिमिरपतंगा॥तेहिकिमि
कहियविमोहप्रसंगा॥रामसच्चिदानंददिनेसा॥नहितहंमोहनिसालवलेसा॥सहजप्रका
सरूपभगवाना॥नहितहंपुनिविज्ञानविहाना॥हरषविषादज्ञानअज्ञाना॥जीवधर्मअ
हमितिअभिमाना॥रामब्रह्मव्यापकजगजाना॥परमानंदपरेसपुराना॥दोहा॥पुरुषप्र
सिद्धप्रकासनिधिप्रगटपरावरनाथ॥रघुकुलमनिममस्वामिसोइकहिसिवनाएउमा
थ॥११६॥निजभ्रमनहिसमुझहिअज्ञानी॥प्रभुपरमोहधरहिजडप्रानी॥जथागगनघनपट ५८
लनिहारी॥झांपेउभानुकहहिकुविचारी॥चितवजोलोचनअंगुलिलाए॥प्रगटजुगलससि

तेहि के भार॥ उमा राम विषइक अस मोहा। नभ तम धूरि धूम जिमि सोहा॥ विषय करन सु
र जीव समेता। सकल एक तें एक सचेता॥ सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवध
पति सोई॥ जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ज्ञान गुन धामू॥ जासु सत्यता तें जड़ मा
या। भास सत्य इव मोह सहाया॥ दोहा॥ रजत सीप महु भास जिमि जथा भानु कर वारि॥ ज
दपि म्रषा तिहु काल सोइ भ्रम न सकै कोउ टारि॥ ११७॥ एहि विधि जग हरि आश्रित रहई।
जदपि असत्य देत दुख अहई॥ ज्यौं सपने सिर काटै कोई। विनु जागे न दूरि दुख होई॥ जा
सु कृपा अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई॥ आदि अंत कोउ जासु न पावा।
मति अनुमान निगम अस गावा॥ विनु पद चलै सुनै विनु काना। कर विनु कर्म करै विधि
नाना॥ आनन रहित सकल रस भोगी। विनु वानी वकता वड जोगी॥ तन विनु परस नयन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
५०

बिनुदेषा॥ गहैघ्रानबिनुबासबिसेषा॥ असिसबभाँतिअलौकिककरनी॥ महिमाजासु
जाइनहिबरनी॥ दोहा॥ जेहिइमिगावहिबेदबुधजाहिधरहिमुनिध्यान॥ सोइदसर
थसुतभगतहितकोसलपतिभगवान॥ ११८॥ कासीमरतजंतुअवलोकी॥ जासुनामबल
करौंबिसोकी॥ सोइप्रभुमोरचराचरस्वामी॥ रघुबरसबउरअंतरजामी॥ बिबसहुजासुनाम
नरकहहीं॥ जनमअनेकरचितअघदहहीं॥ सादरसुमिरनजेनरकरहीं॥ भवबारिधिगो
पदइवतरहीं॥ रामसोपरमातमाभवानी॥ तहँभ्रमअतिअबिहिततवबानी॥ अससंसय
आनतउरमाहीं॥ ज्ञानबिरागसकलगुनजाहीं॥ सुनिसिवकेभ्रमभंजनबचना॥ मिटिग
इसबकुतर्ककैरचना॥ भइरघुपतिपदप्रीतिप्रतीती॥ दारुनअसंभावनाबीती॥ दोहा॥ ५०
पुनिपुनिप्रभुपदकमलगहिजोरिपंकरुहपानि॥ बोलीगिरि बचनबरमनहुप्रेमरससा

जा

नि॥११८॥ससिकरसमसुनिगिरातुम्हारी॥मिटामोहसरदातपभारी॥तुम्हकृपालसबसंस सव
यहरेउ॥रामसरूपजानिमोहिपरेउ॥नाथकृपांअबगएउबिषादा॥सुषीभइउंप्रभु
चरनप्रसादा॥अबमोहिआपनिकिंकरिजानी॥जदपिसहजजडनारिअयानी॥प्रथ
मजोमैपूछासोइकहहू॥जौमोपरप्रसन्नप्रभुअहहू॥रामब्रह्मचिन्मयअविनासी
सर्वरहितसबउरपुरवासी॥नाथधरेउनरतनकेहिहेतू॥मोहिसमुझाइकहहुबृषके
तू॥उमाबचनसुनिपरमबिनीता॥रामकथापरप्रीतिपुनीता॥दोहा॥हियहरषेकामा
रितबसंकरसहजसुजान॥बहुबिधिउमहिप्रसंसिपुनिबोलेकृपानिधान॥सोरठा॥
सुनुसुभकथाभवानिरामचरितमानसबिमल॥कहाभुसुंडिबषानिसुनाबिहगनाय
कगरुड॥सोसंबादउदारजेहिबिधिभाआगेकहब॥सुनहुरामअवतारचरितपरम॰

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
५१

सुंदरश्रवनघ॥हरिगुननामअपारकथारूपअगनितअमित॥मैंनिजमतिअनुसारक
हउँउमासादरसुनहु॥१२०॥सुनुगिरिजाहरिचरितसुहावा॥विपुलविसदनिगमाग
मगावा॥हरिअवतारहेतुजेहिहोई॥इदमित्थंकहिजाइनसोई॥रामअतर्क्यबुद्धिम
नवानी॥मतहमारअससुनहुसयानी॥तदपिसंतमुनिवेदपुराना॥जसकछुकहहिंस्व
मतिअनुमाना॥तसमैंसुमुखिसुनावौंतोही॥समुझिपरैजसकारनमोही॥जवजवहोइध
र्मकैहानी॥वाढहिंअसुरअधमअभिमानी॥करहिंअनीतिजाइनहिंवरनी॥सीदहिंवि
प्रधेनुसुरधरनी॥तवतवप्रभुधरिविविधिसरीरा॥हरहिंकृपानिधिसज्जनपीरा॥दोहा॥अ
सुरमारिथापहिंसुरन्हराखहिंनिजश्रुतिसेतु॥जगविस्तारहिंविसदजसरामजन्मकर ५१
हेतु॥१२१॥सोइजसगाइभगतभवतरहीं॥कृपासिंधुजनहिततनुधरहीं॥रामजनमके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हेतु अनेका॥ परम विचित्र एक तें एका॥ जन्म एक दुइ कहौं वषानी॥ सावधान सुनु सुम
ति भवानी॥ द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ॥ जय अरु विजय जान सव कोऊ॥ विप्र स्राप ते
द्वौ भाई॥ तामस असुर देह तिन्ह पाई॥ कनककसिपु अरु हाटकलोचन॥ जगत वि
दित सुरपति मद मोचन॥ विजई समर वीर विष्याता॥ धरि वराह वपु एक निपाता॥ हो
इ नरहरि दूसर पुनि मारा॥ जन प्रहलाद सुजस विस्तारा॥ दोहा॥ भए निसाचर जाइ तेइ
महावीर वलवान॥ कुंभकरन रावन सुभट सुर विजई जग जान॥ १२२॥ मुकुत न भए हते
भगवाना॥ तीनि जनम द्विज वचन प्रमाना॥ एक वार तिन्ह के हित लागी॥ धरेउ सरीर
भगत अनुरागी॥ कस्यप अदिति तहां पितु माता॥ दसरथ कौसल्या विष्याता॥ एक क
लप एहि विधि अवतारा॥ चरित पवित्र किए संसारा॥ एक कलप सुर देषि दुषारे॥ समर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
५२ जलंधरसोसबहारे॥संभुकीन्हसंग्रामअपारा॥दनुजमहाबलमरउनमारा॥परमस
तीअसुराधिपनारी॥तेहिबलताहिनजितहिपुरारी॥दोहा॥छलकरिटारेउतासुब्रत
प्रभुसुरकारजकीन्ह॥जबतेहिजानेउमरमतबसापकोपकरिदीन्ह॥१२३॥तासुसा
पहरिकीन्हप्रवाना॥कौतुकनिधिकृपालभगवाना॥तहांजलंधररावनभएउ॥रन
हतिरामपरमपददएउ॥एकजनमकरकारनयेहा॥जेहिलगिरामधरीनरदेहा॥प्र
तिअवतारकथाप्रभुकेरी॥सुनिमुनिबरनीकबिन्हघनेरी॥नारदसापदीन्हएकबारा॥
कलपएकतेहिलगिअवतारा॥गिरिजाचकितभईसुनिबानी॥नारदबिष्णुभगतपुनि
ज्ञानी॥कारनकवनसापमुनिदीन्हा॥कांअपराधरमापतिकीन्हा॥यहप्रसंगमोहि ५२
कहहुपुरारी॥मुनिमनमोहआचरजभारी॥दोहा॥बोलेबिहसिमहेसतबज्ञानीमूढ़न

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोउ॥ जेहिजसरघुपतिकरहिजबसोतसतेहिछनहोउ॥ सोरठा॥ कहौंरामगुनगाथ
भरद्वाजसादरसुनहु॥ भवभंजनरघुनाथभजुतुलसीतजिमानमद॥१२४॥ हिमगिरिगु
हाएकअतिपावनि॥ बहसमीपसुरसरीसुहावनि॥ आश्रमपरमपुनीतसुहावा॥ देखिदे
वरिषिमनअतिभावा॥ निरखिसैलसरिबिपिनबिभागा॥ भएउरमापतिपदअनुरागा॥
सुमिरतहरिहिश्रापगतिबाधी॥ सहजबिमलमनलागिसमाधी॥ मुनिगतिदेखिसुरेस
डराना॥ कामहिबोलिकीन्हसनमाना॥ सहितसहायजाहुममहेतू॥ चलेउहरषिहि
यजलचरकेतू॥ सुनासीरमनमहुअसित्रासा॥ चहतदेवरिषिममपुरबासा॥ जेकामीलो
लुपजगमाहीं॥ कुटिलकाकइवसबहिडराहीं॥ दोहा॥ सूखहाडलैभागसठस्वाननिर
खिमृगराज॥ छीनिलेइजनिजानिजडतिमिसुरपतिहिनलाज॥१२५॥ तेहिआश्रमहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मदनजवगारउ॥निजमायावसंतनिरमएउ॥कुसुमितविविधिविटपवहुरंगा॥कूजहिंको
बा० ५३ किलगुंजहिंभंगा॥चलीसुहावनित्रिविधिवयारी॥कामकृसानुवढावनिहारी॥रंभादि
कसुरनारिनिवीना॥सकलअसमसरकलाप्रवीना॥करहिंगानवहुतानतरंगा॥वहु
विधिक्रीडहिंपानिपतंगा॥देषिसहायमदनहरषाना॥कीन्हेसिपुनिप्रपंचविधिना
ना॥कामकलाकछुमुनिहिंनव्यापी॥निजभयडरेउमनोभवपापी॥सीमकिचापिस
कैकोउतासू॥वडरषवाररमापतिजासू॥दोहा॥सहितसहायसभीतअतिमानिहारि
मनमैन॥गहेसिजाइमुनिचरनकहिसुठिआरतमृदुवैन॥१२६॥भएउननारदमनक
छुरोषा॥कहिप्रियवचनकामपरितोषा॥नाइचरनसिरुआयसुपाई॥गएउमदनतवस
हितसहाई॥मुनिसुसीलताआपनिकरनी॥सुरपतिसभाजाइसववरनी॥मुनिसवकेम ५३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नअचरजआवा॥मुनिहिप्रसंसिहरिहिसिरुनावा॥तवनारदगवनेसिवपाहीं॥जिताकाम
अहमितिमनमाहीं॥मारचरितसंकरहिसुनाए॥अतिप्रियजानिमहेससिखाए॥वारवारवि
नवौंमुनितोही॥जिमियहकथासुनाएहुमोही॥तिमिजनिहरिहिसुनाएहुकवहूं॥चले
हुप्रसंगदुराएहुतवहूं॥दोहा॥संभुदीन्हउपदेसहितनहिनारदहिसुहान॥भरद्वा
जकौतुकसुनहुहरिइछावलवान॥१२७॥रामकीन्हचाहहिंसोइहोई॥करैअन्यथाअ
सनहिकोई॥संभुवचनमुनिमननहिंभाए॥तवविरंचिकेलोकसिधाए॥एकवारकरतल
वरवीना॥गावतहरिगुनगानप्रवीना॥छीरसिंधुगवनेमुनिनाथा॥जहंवसश्रीनिवासश्रु
तिमाथा॥हरषिउठेप्रभुकृपानिकेता॥वैठेआसनरिषिहिसमेता॥वोलेविहसिचराचररा
या॥वहुतेदिननकीन्हिमुनिदाया॥कामचरितनारदसवभाषे॥जद्यपिप्रथमवरजिसि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० वराषे॥ अतिप्रचंडरघुपतिकैमाया॥ जेहिनमोहअसकोजगजाया॥ दोहा॥ रुखवदनकरि
५४ वचनम्रदुवोलेश्रीभगवान॥ तुम्हरेसुमिरनतेंमिटहिंमोहमारमदमान॥ १२८॥ सुनुमु
निमोहहोइमनताके॥ ग्यानविरागहृदयनहिंजाके॥ ब्रह्मचरजव्रतरतमतिधीरा॥ तुम्हहि
किकरइमनोभवपीरा॥ नारदकहेउसहितअभिमाना॥ कृपातुम्हारिसकलभगवाना॥
करुनानिधिमनदीखविचारी॥ उरअंकुरेउगरवतरुभारी॥ वेगिसोमैंडारिहौंउपारी॥ प
नहमारसेवकहितकारी॥ मुनिकरहितममकौतुकहोई॥ अवसिउपायकरविमैंसोई॥
तवनारदहरिपदसिरनाई॥ चलेहृदयअहमितिअधिकाई॥ श्रीपतिनिजमायातव
प्रेरी॥ सुनहुकठिनकरनीतेहिकेरी॥ दोहा॥ विरचेउमगमहुनगरतेहिंसतजोजनविस्ता ५४
र॥ श्रीनिवासपुरतेंअधिकरचनाविविधिप्रकार॥ १२९॥ वसहिंनगरसुंदरनरनारी॥ जनु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वहुमनसिजरतितनुधारी॥ तेहिपुरवसैसीलनिधिराजा॥ अगिनितहयगयसहितसमा
जा॥ सतसुरेससमविभवविलासा॥ रूपतेजवलनीतिनिवासा॥ विश्वमोहनीतासुकुमारी॥
श्रीविमोहजेहिरूपनिहारी॥ सोइहरिमायासवगुनषानी॥ सोभातासुकिजाइवषानी॥ करै
स्वयंवरसोनृपवाला॥ आएतहँअगिनितमहिपाला॥ मुनिकौतुकीनगरतेहिगएउ॥ पुर
वासिन्हसवपूछतभएउ॥ सुनिसवचरितभूपगृहआए॥ करिपूजामुनिनृपवैठाए॥ दोहा
आनिदिषाईनारदहिभूपतिराजकुमारि॥ कहहुनाथगुनदोषसवएहिकेहृदयविचारि
१३०॥ देषिरूपमुनिविरतिविसारी॥ वडीवारलगिरहेनिहारी॥ लछनतासुविलोकिभुलाने
हृदयहरषनहिप्रगटवषाने॥ जोएहिवरइअमरसोइहोई॥ समरभूमितेहिजीतनकोई॥ से
वहिसकलचराचरताही॥ वरैसीलनिधिकन्याजाही॥ लछनसवविचारिउरराषे॥ कछुकव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० नाइभूपसनभाये॥सुतासुलछनकहिन्रपपाहीं॥नारदचलेसोचमनमाहीं॥करौंजाउसो
५५ उजतनविचारी॥जेहिप्रकारमोहिवरइकुमारी॥जपतपकछुनहोइतेहिकाला॥हेविधि
मिलैकवनिविधिवाला॥दोहा॥एहिअवसरचाहियपरमसोभारूपविसाल॥जोविलोकिरी
झैकुंवरितवमेलैजयमाल॥१३१॥हरिसनमागौंसुंदरताई॥होइहिजानगहरुमोहिभाई॥
मोरेहितहरिसमनहिकोई॥एहिअवसरसहायसोहोई॥बहुविधिविनयकीन्हतेहिका
ला॥प्रगटेप्रभुकौतुकीकृपाला॥प्रभुविलोकिमुनिनयनजुडाने॥होइहिकाजुहिएहरषा
ने॥अतिआरतिकहिकथासुनाई॥करहुकृपाप्रभुहोहुसहाई॥आपनरूपदेहुप्रभुमो
ही॥आनभांतिनहिपावौंओही॥जेहिविधिनाथहोइहितमोरा॥करहुसोवेगिदासमैंतो
रा॥निजमायावलदेखिविसाला॥हियहसिवोलेदीनदयाला॥दोहा॥जेहिविधिहोइ ५५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हिपरमहितनारदसुनहुतुम्हार॥सोइहमकरबनकँछुबचननम्रषाहमार॥१३२॥कुपथ आन
मागरुजब्याकुलरोगी॥बैदनदेइसुनहुमुनिजोगी॥एहिबिधिहितनुम्हारमैठयऊ॥कहि
असअंतरहितप्रभुभयऊ॥मायाबिबसभएमुनिमूढा॥समुझीनहिहरिगिरानिगूढा॥गव
नेतुरततहाँरिषिराई॥जहाँस्वयंबरभूमिबनाई॥निजनिजआसनबैठेराजा॥बहुबनावकरि
सहितसमाजा॥मुनिमनहरषरूपअतिमोरे॥मोहितजिआनहिबरिहिनभोरे॥मुनिहित
कारनकृपानिधाना॥दीन्हकुरूपनजाइबषाना॥सोचरित्रलषिकाहुनपावा॥नारदजानिस
बहिसिरनावा॥दोहा॥रहेतहाँदुइरुद्रगनतेजानहिसबभेउ॥बिप्रबेषदेषतफिरहिपरम
कौतुकीतेउ॥१३३॥जेहिसमाजबैठेमुनिजाई॥हृदयरूपअहमितिअधिकाई॥तहँबैठेम
हेसगनदोउ॥बिप्रबेषगतिलषइनकोउ॥करहिकूटिनारदहिसुनाई॥नीकिदीन्हि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
५६
हरिसुंदरताई॥ रीझिहिराजकुंवरिछविदेषी॥ उन्हहिवरिहिहरिजानिविसेषी॥ मुनिहि
मोहमनहाथपराएं॥ हसहिसंभुगनअतिसचुपाए॥ जदपिसुनहिमुनिअटपटिवानी॥
समुझिनपरैवुद्धिभ्रमसानी॥ काहुनलषासोचरितविसेषा॥ सोसरूपनृपकन्यादेषा॥
मर्कटवदनभयंकरदेही॥ देषतहृदयक्रोधभातेही॥ दोहा॥ सषीसंगलैकुंअरितवच
लिजनुराजमराल॥ देषतफिरइमहीपसव करसरोजजयमाल॥१३४॥ जेहिदिसिवैठे
नारदफूली॥ सोदिसितेहिनविलोकीभूली॥ पुनिपुनिमुनिउकसहिअकुलाहीं॥ देषि
दसाहरगनमुसुकाहीं॥ धरिनृपतनतहंगएउकृपाला॥ कुंअरिहरषिमेलेउजयमा
ला॥ दुलहिनिलैगेलछिनिवासा॥ नृपसमाजसवभएउनिरासा॥ मुनिअतिविकल ५६
मोहमतिनाठी॥ मनिगिरिगईछूटिजनुगांठी॥ तवहरगनवोलेमुसकाई॥ निजमुषमु

कुर विलोकहु जाई॥ अस कहि दोउ भागे भय भारी॥ वदन दीष मुनि वारि निहारी॥ वेष
विलोकि क्रोध अति वाढा॥ तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढा॥ दोहा॥ होहु निसाचर जा
इ तुम्ह कपटी पापी दोउ॥ हसेहु हमहि सो लेहु फल वहुरि हसेहु मुनि कोउ॥ १३५॥
पुनि जल दीष रूप निज पावा॥ तदपि हृदय संतोष न आवा॥ फरकत अधर कोप मन मा
हीं॥ सपदि चले कमलापति पाहीं॥ देहौं साप कि मरिहौं जाई॥ जगत मोरि उपहास करा
ई॥ वीचहि पंथ मिले दनुजारी॥ संग रमा सोइ राजकुमारी॥ वोले मधुर वचन सुरसाईं॥ मुनि
कहँ चले विकल की नाईं॥ सुनत वचन उपजा अति क्रोधा॥ माया वस न रहा मन वोधा॥ पर
संपदा सकहु नहि देषी॥ तुम्हरे इरषा कपट विसेषी॥ मथत सिंधु रुद्रहि वौराएहु॥ सुरन्ह
प्रेरि विषपान कराएहु॥ दोहा॥ असुर सुरा विष संकरहि आपु रमा मनि चारु॥ स्वारथ साध

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० रुकुटिलतुम्हसदाकपटव्यवहारु॥१३६॥परमस्वतंत्रनसिरपरकोई॥भावैमनहिकरहुतु
५८ म्हसोई॥भलेहिमंदमंदहिभलकरहू॥विसमयहरषनहियकछुधरहू॥डहकिडहकि
परचेहुसवकाहू॥अतिअसंकमनसदाउछाहू॥कर्मसुभासुभतुम्हहिनवाधा॥अवल
गितुम्हहिनकाहूसाधा॥भलेभवनअववायनदीन्हा॥पावहुगेफलआपनकीन्हा॥
वंचेहुमोहिजवनिधरिदेहा॥सोइतनुधरहुसापममयेहा॥कपिआकृतितुम्हकीन्हि
हमारी॥करिहहिकीससहायतुम्हारी॥ममअपकारकीन्हतुम्हभारी॥नारिविरहतुम्ह
होवदुखारी॥दोहा॥सापसीसधरिहरषिहियप्रभुवहुविनतीकीन्हि॥निजमायाकैप्रव
लताकरषिकृपानिधिलीन्हि॥१३७॥जवहरिमायादूरिनिवारी॥नहितहरमानराजकु ५७
मारी॥तवमुनिअतिसभीतहरिचरना॥गहेपाहिप्रननारतिहरना॥मृषाहोउममसाप

कृपाला॥ मम उछा कहहु दीनदयाला॥ मैं दुर्वचन कहे वहुतेरे॥ कह मुनि पाप मिटिहि
किमि मेरे॥ जपहु जाउ संकर सत नामा॥ होउहि हृदय तुरत विश्रामा॥ कोउ नहि सिव समा
न प्रिय मोरे॥ असि परतीति तजहु जनि भोरे॥ जेहि पर कृपा न करहि पुरारी॥ सो न पाव मुनि
भगति हमारी॥ अस उर धरि महि विचरहु जाई॥ अव न तुम्हहि माया नियराई॥ दोहा॥
वहु विधि मुनिहि प्रवोधि प्रभु तव भए अंतरध्यान॥ सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गा
न॥ रु॥ हरगन मुनिहि जात पथ देखी॥ विगतमोह मन हरष विसेषी॥ अति सभीत नारद
पहि आए॥ गहि पद आरत वचन सुनाए॥ हरगन हम न विप्र मुनिराया॥ वड अपराध
कीन्ह फल पाया॥ श्राप अनुग्रह करहु कृपाला॥ वोले नारद दीनदयाला॥ निसिचर जा
इ होहु तुम्ह दोउ॥ वैभव विपुल तेज वल होउ॥ भुजवल विस्व जितव तुम्ह जहिया॥ धरि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० ५८ हरिहिं विष्नु मनुजतनु तहिया ॥ समर मरन हरि हाथ तुम्हारा ॥ होइहहु मुकुत न पुनि
संसारा ॥ चले जुगल मुनि पद सिर नाई ॥ भए निसाचर कालहि पाई ॥ दोहा ॥ एक कल
प एहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ॥ सुर रंजन सज्जन सुषद हरि भंजन भुवि भार ॥ १
३९ ॥ एहि विधि जनम करम हरि केरे ॥ सुंदर सुषद विचित्र घनेरे ॥ कलप कलप प्रति प्र
भु अवतरहीं ॥ चारु चरित नाना विधि करहीं ॥ तव तव कथा मुनीसन्ह गाई ॥ परम विचि
त्र प्रबंध बनाई ॥ विविधि प्रसंग अनूप बषाने ॥ करहि न कछु आचरज सयाने ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ हरि अनंत हरि कथा अ
नंता ॥ कहहिं सुनहि बहु विधि सब संता ॥ रामचंद्र के चरित सुहाए ॥ कलप कोटि लगि ५८
जाहि न गाए ॥ यह प्रसंग मै कहा भवानी ॥ हरिमाया मोहहि मुनि ज्ञानी ॥ प्रभु कौतुकी

प्रनतहितकारी॥ सेवतसुलभसकलदुषहारी॥ सोरठा॥ सुरनरमुनिकोउनाहिंजे
हिनमोहमायाप्रवल॥ असविचारिमनमाहिंकसनभजियमायापतिहि॥१४०॥
अपरहेतुसुनुसैलकुमारी॥ कहौंविचित्रकथाबिस्तारी॥ जेहिकारनअजअगुनअ
नूपा॥ ब्रह्मभयउकोसलपुरभूपा॥ जोप्रभुविपिनफिरततुम्हदेषा॥ बंधुसमेतधरेमु
निवेषा॥ जासुचरितअवलोकिभवानी॥ सतीसरीररहिहुबौरानी॥ अजहुंनछायामि
टतितुम्हारी॥ तासुचरितसुनुभ्रमरुजहारी॥ लीलाकीन्हजोतेहिअवतारा॥ सोसवक
हिहौंमतिअनुसारा॥ भरद्वाजसुनिसंकरवानी॥ सकुचिसप्रेमउमाहरषानी॥ लगेव
हुरिवरनैब्रषकेतू॥ सोअवतारभयउजेहिहेतू॥ दोहा॥ सोमैतुम्हसनकहौंसवसु
नुमुनीसमनलाउ॥ रामकथाकलिमलहरनिमंगलकरनिसुहाउ॥१४१॥ स्वयं

बा०
५८ भूमनुअरुसतरूपा॥ जिन्हतेंभउनरसृष्टिअनूपा॥ दंपतिपरमआचरननीका॥ अजहुँगा
वश्रुतिजिन्हकैलीका॥ न्रपउत्तानपादसुततासू॥ ध्रुवहरिभक्तभएउसुतजासू॥ लघुसुत
नामप्रेमव्रततताही॥ वेदपुरानप्रसंसहिंजाही॥ देवहूतीपुनितासुकुमारी॥ जोमुनिकर्दम
कैप्रियनारी॥ आदिदेवप्रभुदीनदयाला॥ जठरधरेउतेहिंकपिलकृपाला॥ सांख्यशा
स्त्रजिन्हप्रगटवषाना॥ तत्वविचारनिपुनभगवाना॥ तेहिंमनुराजकीन्हवहुकाला॥ प्र
भुआयसुवहुविधिप्रतिपाला॥ सोरठा॥ होउनविषयविरागभवनवसतभाचौथपन॥ हृ
दयवहुतदुषलागजनमगएउहरिभक्तिविनु॥ १४२॥ वरवसराजसुतहिपुनिदीन्हा॥ ना
रिसमेतगवनवनकीन्हा॥ तीरथवरनैमिषविख्याता॥ अतिपुनीतसाधकसिधिदाता॥ ५८
वसहिंतहांमुनिसिद्धसमाजा॥ तहँहियहरषिचलेमनुराजा॥ पंथजातसोहहिंमतिधीरा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्यानभगतिजनुधरेंसरीरा॥पहुँचेजाउधेनुमतितीरा॥हरषिनहानेनिर्मलनीरा॥आएमि
लनसिद्धमुनिग्यानी॥धरमधुरंधरनृपरिषिजानी॥जहँजहँतीरथरहेसुहाए॥मुनिन्हस
कलसादरकरवाए॥कृससरीरमुनिपटपरिधाना॥संतसमाजनितसुनहिंपुराना॥दोहा॥
द्वादसअक्षरमंत्रपुनिजपहिंसहितअनुराग॥बासुदेवपदपंकरुहदंपतिमनअतिलाग
१४३॥करहिंअहारसाकफलकंदा॥सुमिरहिंब्रह्मसच्चिदानंदा॥पुनिहरिहेतुकरनतप
लागे॥बारिअहारमूलफलत्यागे॥उरअभिलाषनिरंतरहोई॥देखियनयनपरमप्रभु
सोई॥अगुनअखंडअनंतअनादी॥जेहिचिंतहिंपरमारथवादी॥नेतिनेतिजेहिवेदनिरू
पा॥निजानंदनिरुपाधिअनूपा॥संभुविरंचिविष्णुभगवाना॥उपजहिंजासुअंसतेनाना॥
ऐसेउप्रभुसेवकबसअहई॥भगतहेतुलीलातनुगहई॥जौंयहबचनसत्यश्रुतिभाषा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० तौ हमार पूजिहि अभिलाषा॥ दोहा॥ एहि विधि बीते वरष षट सहस्र बारि आहार॥ संवत
६० सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार॥१४४॥ वरष सहस दस त्यागेउ सोऊ॥ ठाढे रहे एक पद
दोऊ॥ विधि हरि हर तप देषि अपारा॥ मनु समीप आए बहु वारा॥ मागहु वर बहु भाँति लो
भाए॥ परम धीर नहि चलहि चलाए॥ अस्थि मात्र होइ रहे सरीरा॥ तदपि मनाग मन नहि
हि पीरा॥ प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी॥ गति अनन्य तापस नृप रानी॥ मागु मागु धुनि भै न
भवानी॥ परम गभीर कृपामृत सानी॥ मृतक जियावनि गिरा सुहाई॥ श्रवन रंध्र होइ उर ज
व आई॥ ह्रिष्टपुष्ट तन भए सुहाए॥ मानौ अवहि भवन ते आए॥ दोहा॥ श्रवन सुधा सम व
चन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात॥ बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदय समात॥१४५॥ सुनु से ६०
वक सुरतरु सुरधेनू॥ विधि हरि हर वंदित पद रेनू॥ सेवत सुलभ सकल सुषदायक॥ प्रन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नपालसचराचरनायक॥ जोअनाथहितहमपरनेहू॥ तौप्रसन्नहोइयहबरदेहू॥ जोसरू
पबससिवमनमाहीं॥ जेहिकारनमुनिजतनकराहीं॥ जोभुसुंडिमनमानसहंसा॥ सगुन
अगुनजेहिनिगमप्रसंसा॥ देषहिंहमसोरूपभरिलोचन॥ कृपाकरहुप्रनतारतिमोचन॥
दंपतिबचनपरमप्रियलागे॥ म्रदुलबिनीतप्रेमरसपागे॥ भगतबछलप्रभुकृपानिधाना॥
बिस्वबासप्रगटेभगवाना॥ दोहा॥ नीलसरोरुहनीलमनिनीलनीरधरस्याम॥ लाज
हितनसोभानिरषिकोटिकोटिसतकाम॥१४६॥ सरदमयंकबदनछबिसींवां॥ चारुकपो
लचिबुकदरग्रीवां॥ अधरअरुनरदसुंदरनासा॥ बिधुकरनिकरबिनिंदकहासा॥ नवअं
बुजअंबकछबिनीकी॥ चितवनिललितभावतीजीकी॥ भ्रकुटिमनोजचापछबिहारी॥ ति
लकललाटपटलदुतिकारी॥ कुंडलमकरमुकुटसिरभ्राजा॥ कुटिलकेसजनुमधुपसमाजा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० उरश्रीबत्सरुचिरबनमाला॥पदिकहारभूषनमनिजाला॥केहरिकंधरचारुजनेऊ॥बाहु
६१ बिभूषनसुंदरतेऊ॥करिकरसरिससुभगभुजदंडा॥कटिनिषंगकरसरकोदंडा॥दोहा॥
तडितबिनिंदकपीतपटउदररेखबरतीनि॥नाभिमनोहरलेतिजनुजमुनभवरछबिछी
नि॥१४७॥पदराजीवबरनिनहिंजाहीं॥मुनिमनमधुपबसहिंजिन्हमाहीं॥बामभागसो
भितअनुकूला॥आदिशक्तिछबिनिधिजगमूला॥जासुअंसउपजहिंगुनखानी॥अगिनि
रा तछिउमाब्रह्मानी॥भ्रकुटिबिलासजासुजगहोई॥रामबामदिसिसीतासोई॥छबिसमु
द्रहरिरूपबिलोकी॥एकटकरहेनयनपटरोकी॥चितवहिंसादररूपअनूपा॥तृप्तिनमा
नहिंमनुसतरूपा॥हरषबिबसतनदसाभुलानी॥परेदंडइवगहिपदपानी॥सिरपरसे ६१
प्रभुनिजकरकंजा॥तुरतउठाएकरुनापुंजा॥दोहा॥बोलेकृपानिधानपुनिअतिप्रस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न्नमोहिजानि॥मागहुवरजोइभावमनमहादानिअनुमानि॥१४८॥सुनिप्रभुवचनजोरि
जुगपानी॥धरिधीरजवोलेम्रदुवानी॥नाथदेषिपदकमलतुम्हारे॥अवपूरेसवकामहमारे
एकलालसावडिउरमाहीं॥सुगमअगमकहिजातिसुनाहीं॥तुम्हहिदेतअतिसुगमगुसां
ई॥अगमलागमोहिनिजक्रपनाई॥जथादरिद्रविवुधतरुपाई॥वहुसंपतिमागतसकुचाई
तासुप्रभावनजानहिसोई॥तथाहृदयममसंसयहोई॥सोतुम्हजानहुअंतरजामी॥पुर
वहुमोरमनोरथस्वामी॥सकुचविहाइमागुनृपमोही॥मोरेनहिअदेयकछुतोही॥दोहा॥
दानिसिरोमनिक्रपानिधिनाथकहौंसतिभाउ॥चाहौंतुम्हहिसमानसुतप्रभुसनकवनदु
राउ॥१४९॥देषिप्रीतिसुनिवचनअमोले॥येवमस्तुकरुनानिधिवोले॥आपुसरिसषोज
उकहजाई॥नृपतवतनयहोवमैआई॥सतरूपहिविलोकिकरजोरे॥देविमागुवरजोरुचितो

बा०
६९

रे॥ जोवरनाथचतुरन्हपमागा॥ सोउकृपालमोहिअतिप्रियलागा॥ प्रभुपरंतुसुठिहोतिढिठा
ई॥ जदपिभगतहिततुम्हहिसुहाई॥ तुम्हब्रह्मादिजनकजगस्वामी॥ ब्रह्मसकलउरअंत
रजामी॥ असससमुझतअसंसयहोई॥ कहाजोप्रभुप्रवानपुनिसोई॥ जेनिजभगतनाथतव
अहहीं॥ जोसुखपावहिंजोगतिलहहीं॥ दोहा॥ सोइसुखसोइगतिसोइभगतिसोइनिजच
रनसनेहु॥ सोइविवेकसोइरहनिप्रभुहमहिकृपाकरिदेहु॥ १५०॥ सुनिमृदुगूढरुचिरब
ररचना॥ कृपासिंधुबोलेमृदुबचना॥ जोकछुरुचितुम्हरेमनमाहीं॥ मैंसोदीन्हसबसंस
यनाहीं॥ मातुविवेकअलौकिकतोरे॥ कबहुंनमिटिहिअनुग्रहमोरे॥ बंदिचरनमनुकहे
उबहोरी॥ अवरएकबिनतीप्रभुमोरी॥ सुतविषइकतवपदरतिहोऊ॥ मोहिबडमूढकहै
किनकोऊ॥ मनिबिनुफनिजिमिजलबिनुमीना॥ ममजीवनतिमितुम्हहिअधीना॥ अ ६९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सवरमागिअचरनगहिरहेउ॥ एवमस्तुकरुनानिधिकहेउ॥ अवतुम्हममअनुसासनमानी
वसहुजाइसुरपतिरजधानी॥ सोरठा॥ः तहँकरिभोगविसालतातगए कछुकालपुनि॥ हो
इहहुअवधभुआलतवमैहोवतुम्हारसुत॥१५१॥ इछामयनरवेषसँवारे॥ होइहौप्रगट
निकेततुम्हारे॥ अंसन्हसहितदेहधरिताता॥ करिहौचरितभगतसुखदाता॥ जेसुनिसाद
रनरवडभागी॥ भवतरिहहिंममतामदत्यागी॥ आदिसक्तिजेहिजगउपजाया॥ सोउअ
वतरिहिमोरियहमाया॥ पूरवमैअभिलाषतुम्हारा॥ सत्यसत्यपनसत्यहमारा॥ पुनिपु
निअसकहिकृपानिधाना॥ अंतरधानभएभगवाना॥ दंपतिउरधरिभगतिकृपाला॥ तेहि
आश्रमनिवसेकछुकाला॥ समयपाइतनुतजिअनयासा॥ जाइकीन्हअमरावतिवासा॥ दो
हा॥ः यहइतिहासपुनीतअतिउमहिकहीवृषकेतु॥ भरद्वाजसुनुअपरपुनिरामजनम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ६३

करहेतु ॥ १५२ ॥ सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी ॥ जो गिरिजा प्रति संभु बखानी ॥ बिस्व बिदित ए
कै कैकय देसू ॥ सत्यकेतु तहँ बसै नरेसू ॥ धरम धुरंधर नीति निधाना ॥ तेज प्रताप सील बल
वाना ॥ तेहि के भए जुगल सुत बीरा ॥ सब गुन धाम महा रनधीरा ॥ राज धनी जो जेठ सुत आ
ही ॥ नाम प्रतापभानु अस ताही ॥ अपर सुतहि अरिमर्दन नामा ॥ भुजबल अतुल अचल
संग्रामा ॥ भाइहि भाइ परम सुमीती ॥ सकल दोष छल बरजित प्रीती ॥ जेठे सुतहि राज नृ
प दीन्हा ॥ हरि हित आपु गवन बन कीन्हा ॥ दोहा ॥ जब प्रताप रबि भए उ नृप फिरी दुहा
ई देस ॥ प्रजा पाल अति वेदविधि कतहुँ नहीं अघ लेस ॥ १५३ ॥ नृप हित कारक सचिव स
याना ॥ नाम धरमरुचि सुक्र समाना ॥ सचिव सयान बंधु बलबीरा ॥ आपु प्रतापपुंज रन ६३
धीरा ॥ सेन संग चतुरंग अपारा ॥ अमित सुभट सब समर जुझारा ॥ सेन बिलोकि राउ हरषा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ना॥अरुवाजेगहगहेनिसाना॥विजयहेतुकटकईवनाई॥सुदिनसोधिन्रपचलेउवजा
ई॥जहँतहँपरीअनेकलराई॥जीतेसकलभूपवरिआई॥सप्तदीपभुजवलवसकीन्हे॥ले
लेदंडछाडिसवदीन्हे॥सकलअवनिमंडलतेहिकाला॥एकप्रतापभानुमहिपाला॥दो
हा॥ स्ववसविस्वकरिवाहुवलनिजपुरकीन्हप्रवेस॥अरथधरमकामादिसुखसेवैसमय
नरेस॥१५४॥भूपप्रतापभानुवलपाई॥कामधेनुभइभूमिसुहाई॥सवदुखवरजितप्रजा
सुखारी॥धरमसीलसुंदरनरनारी॥सचिवधरमरुचिहरिपदप्रीती॥न्रपहितहेतुसिखव
नितनीती॥गुरसुरसंतपितरमहिदेवा॥करइसदान्रपसवकैसेवा॥भूपधरमजेवेदवखा
ने॥सकलकरैसादरसुखमाने॥दिनप्रतिदेइविविधिविधिदाना॥सुनैशास्त्रवरवेदपु
राना॥नानावापीकूपतडागा॥सुमनवाटिकासुंदरवागा॥विप्रभवनसुरभवनसुहाए॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा°
६४

सबतीरथन्ह विचित्र बनाए ॥दोहा॥ जहँलगि कहे पुरान श्रुति एक एक सब जाग ॥ बार सह
स्र सह स्र न्रप किए सहित अनुराग ॥१५५॥ हृदय न कछु फल अनुसंधाना ॥ भूप विवेकी
परम सुज्ञाना ॥ करउ जे धरम करम मन बानी ॥ बासुदेव अरपित न्रप ज्ञानी ॥ चढि बर बाजि
बार एक राजा ॥ म्रगया कर सब साजि समाजा ॥ विंध्याचल गंभीर बन गए उ ॥ म्रग पुनीत ब
हु मारत भए उ ॥ फिरत बिपिन न्रप दीष बराहू ॥ जनु बन दुरे उ ससिहि ग्रसि राहू ॥ बड बि
धु नहि समात मुष माहीं ॥ मनहु क्रोध बस उगिलत नाहीं ॥ कोल कराल दसन छबि गाई ॥
तनु बिसाल पीवर अधिकाई ॥ घुरघुरात हय आरौ पाए ॥ चकित बिलोकत कान उठाए
॥दोहा॥ नील महीधर सिषर सम देषि बिसाल बराहु ॥ चपरि चले उ हय सुटुकि न्रप ६४
हाँकि न होइ निबाहु ॥१५६॥ आवत देषि अधिक रव बाजी ॥ चले उ बराहु मरुत गति भाजी ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तुरतकीन्हनृपसरसंधाना॥महिमिलिगएउबिलोकतबाना॥तकितकितीरमहीसचला
वा॥करिछलसुअरसरीरबचावा॥प्रगटतदुरतजाइमृगभागा॥रिसबसभूपचलेउसं
गलागा॥गएउदूरिबनगहनबराहू॥जहँनाहिनगजबाजिनिबाहू॥अतिअकेलबनबि
पुलकलेसू॥तदपिनमृगमगतजइनरेसू॥कोलबिलोकिभूपबडधीरा॥भागिपैठगिरिगु
हागभीरा॥अगमदेखिनृपअतिपछिताई॥फिरेउमहाबनपरेउभुलाई॥दोहा॥ः खेद
खिन्नछुद्धिततृषितराजाबाजिसमेत॥खोजतब्याकुलसरितसरजलबिनुभएउअचेत
॥१५७॥फिरतबिपिनआश्रमएकदेखा॥जहँबसनृपतिजतीकेवेषा॥जासुदेसनृपलीन्ह
छोडाई॥समरसेनतजिगएउपराई॥समयप्रतापभानुकरजानी॥आपनअतिअसमय
अनुमानी॥गएउनग्रहमनबहुतगलानी॥मिलानराजहिनृपअभिमानी॥रिसउरमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ६५

रिरंक जिमि राजा॥ बिपिन बसै तापस के साजा॥ नासु समीप गवन न्टप कीन्हा॥ यह प्रताप रबि

तेहि तब चीन्हा॥ रा उ न्ट षित न हि सो पहिचाना॥ देषि सुवेष महामुनि जाना॥ उ तरि तुरग

ते कीन्ह प्रनामा॥ परम चतुर न कहे उ निज नामा॥ दोहा॥ भूपति तृषित बिलोकि तेहि सर

वरु दीन्ह दिषाइ॥ मज्जन पान समेत हय कीन्ह न्टपति हरषाइ॥ १५८॥ गै श्रम सकल

सुषी न्टप भए उ॥ निज आश्रम तापस लै गए उ॥ आसन दीन्ह अस्त रबि जानी॥ पुनि

तापस बोले उ म्रदु बानी॥ को तुम्ह कस बन फिरहु अकेले॥ सुंदर जुवा जीव पर हेले॥ चक्र

वर्ती के लछन तोरे॥ देषत दया लागि अति मोरे॥ नाम प्रतापभानु अवनीसा॥ तासु सचिव

मै सुनहु मुनीसा॥ फिरत अहेरे परे उ भुलाई॥ बडे भाग देषे उ पग आई॥ हम कहु दुर्लभ

दरस तुम्हारा॥ जानत हौं कछु भल होनिहारा॥ कह मुनि तात भए उ अंधियारा॥ जोजन ६५

सन्नारिनगरतुम्हारा॥दोहा॥निसाघोरगंभीरवनपंथनसुनहुसुजान॥वसहुआजुतम्ह
जानिअसजाएहुहोतविहान॥तुलसीजसिभवितव्यतातैसीमिलैसहाउ॥नाहिंलैआवै
ताहिपहिंताहितहांलैजाउ॥१५९॥भलेहिंनाथआयसुधरिसीसा॥बांधितुरगतरुबैठ
महीसा॥नृपबहुभांतिप्रसंसेउताही॥चरनबंदिनिजभाग्यसराही॥पुनिबोलेउमृदुगि
रासुहाई॥जानिपिताप्रभुकरउँढिठाई॥मोहिमुनीससुतसेवकजानी॥नाथनामनिजक
हहुबखानी॥तेहिनजाननृपनृपहिसोजाना॥भूपसुहृदसोकपटसयाना॥बैरीपुनिछ
त्रीपुनिराजा॥छलबलकीन्हचहैनिजकाजा॥समुझिराजसुखदुखितअराती॥अवाअन
लइवसुलगैछाती॥सरलवचननृपकेसुनिकाना॥वयरसंभारिहृदयहरषाना॥दो
हा॥कपटबोरिबानीमृदुलबोलेउजुगुतिसमेत॥नामहमाभिखारिअबनिर्धनरहित

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा°

निकेत॥१६०॥कहहुनाथजेविज्ञाननिधाना॥तुम्हसारिखेगलितअभिमाना॥सदारहहिंअ
पनपौदुराए॥सबविधिकुसलकुवेषबनाए॥तेहितेकहहिंसंतश्रुतिटेरे॥परमअकिंचन
प्रियहरिकेरे॥तुम्हसमअधनभिखारिअगेहा॥होतबिरंचिसिवहिसंदेहा॥जोसिसोसि
तवचरननमामी॥मोपरकृपाकरियअबस्वामी॥सहजप्रीतिभूपतिकैदेखी॥आपुविषयवि
स्वासविसेषी॥सबप्रकारराजहिअपनाई॥बोलेउअधिकसनेहजनाई॥सुनुसतिभा
उकहौंमहिपाला॥इहांबसतबीतेबहुकाला॥दोहा॥अबलगिमोहिनमिलेउकोउमै
नजनावौंकाहु॥लोकमान्यताअनलसमकरतपकाननदाहु॥सोरठा॥तुलसीदेखिसुवे
षुभूलहिंमूढनचतुरनर॥सुंदरकेकिहिपेखुबचनसुधासमअसनअहि॥१६१॥तातेंगुप्त
रहौंजगमाहीं॥हरितजिकिमपिप्रयोजननाहीं॥प्रभुजानतसबबिनहिंजनाए॥कहहु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवनसिधिलोगरिझाए॥ तुम्हसुनिसुमतिपरमप्रियमोरे॥ प्रीतिप्रतीतिमोहिपरतोरे॥ अ
वजौंतातदुरावौंतोही॥ दारुनदोषघटैअतिमोही॥ जिमिजिमितापसकथइउदासा॥ ति
मितिमिनृपहिउपजैविश्वासा॥ देखास्ववसकर्ममनवानी॥ तववोलातापसवगध्यानी॥
नामहमारएकतनुभाई॥ सुनिनृपवोलेउपुनिसिरुनाई॥ कहहुनामकरअरथवखा
नी॥ मोहिसेवकअतिआपनजानी॥ दोहा॥ आदिसृष्टिउपजीजवहितवउतपतिभ
इमोरि॥ नामएकतनुहेतुतेहिदेहनधरीवहोरि॥१६२॥ जनिआचरजकरहुमनमाहीं॥
सुनुतपतेदुर्लभकछुनाहीं॥ तपवलतेजगसृजैविधाता॥ तपवलविष्नुभएपरित्राता॥
तपवलसंभुकरहिंसंघारा॥ तपतेअगमनकछुसंसारा॥ भएउनृपहिसुनिअतिअनु
रागा॥ कथापुरातनकहैसोलागा॥ करमधरमइतिहासअनेका॥ करइनिरूपनविर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिबिवेका॥ उदभवपालनप्रलयकहानी॥ कहेसिअमितआचरजबषानी॥ सुनिम
बा॰ हीसतापसबसभएउ॥ आपननामकहनतवलएउ॥ कहतापसन्टपजानौंतोही
६७ कीन्हेहकपटलागभलमोही॥ सोरठा॥ सुनुमहीसअसिनीतिजहँतहँनामनकह
अति हिंन्टप॥ मोहितोहिपरअतिप्रीतिसोइचतुरताबिचारितव॥१६३॥ नामतुम्हारप्रतापदिने
सा॥ सत्यकेतुतवपितानरेसा॥ गुरप्रसादसबजानेअराजा॥ कहिंनआपनजानिअ ५
काजा॥ देषितातनवसहजसुधाई॥ प्रीतिप्रतीतिनीतिनिपुनाई॥ उपजिपरीमम
तामनमोरे॥ कहौंकथानिजपूछेतोरे॥ अवप्रसन्नमैंसंसयनाहीं॥ मागुजोभूपभाव
मनमाहीं॥ सुनिसुवचनभूपतिहरषाना॥ गहिपदविनयकीन्हिविधिनाना॥ कृपा ६७
सिंधुमुनिदरसनतोरे॥ चारिपदारथकरतलमोरे॥ प्रभुहितथापिप्रसन्नविलोकी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मांगिअगामवरहोउविसोकी॥ दोहा ॥ जरामरनदुषरहिततनसमरजितैजनिकोउ

एकछत्ररिपुहीनमहिराजकलपसतहोउ॥ १६४ ॥ कहतापसन्नपऐसइहोउ॥ कार

नएककठिनसुनुसोउ॥ कालौतुवपदनाइहिसीसा॥ एकविप्रकुलछाडिमहीसा॥ तपव

लविप्रसदावरिआरा॥ तिन्हकेकोपनकोउरषवारा॥ जौविप्रन्हवसकरहुनरेसा॥ तौ

तुअवसविधिविष्णुमहेसा॥ चलनब्रह्मकुलसनवरिआई॥ सत्यकहौंदोउभुजाउठा

इ॥ विप्रसापविनुसुनुमहिपाला॥ तोरनासनहिकवनेहुकाला॥ हरषेउराउवचन

सुनितासू॥ नाथनहोइमोरअवनासू॥ तवप्रसादप्रभुकृपानिधाना॥ मोकहसर्वकाल

कल्याना॥ दोहा ॥ एवमस्तुकहिकपटमुनिवोलाकुटिलवहोरि॥ मिलवहमारभुला

वनिजकहहुतहमहिनषोरि॥ १६५ ॥ तातेमैतोहिवरजौराजा॥ कहेकथातवपरमअ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ९८ काजा॥ छठेंश्रवनयहपरतकहांनी॥ नासतुम्हारसत्यममवानी॥ यहप्रगटेंअथवा
द्विजसापा॥ नासतोरसुनुभानुप्रतापा॥ आनउपाउनिधनतवनाहीं॥ जौंहरिहरकोप
हिमनमाहीं॥ सत्यनाथपदगहिन्टपभाषा॥ द्विजगुरकोपकहहुकोराषा॥ राषइ
गुरजौंकोपविधाता॥ गुरविरोधनहिकोउजगत्राता॥ जौंनचलवहमकहेतुम्हारें॥ हो
उनासनहिसोचहमारें॥ एकहिडरडरपतमनमोरा॥ प्रभुमहिदेवसापअतिघोरा
॥ दोहा ॥ होहिंविप्रवसकवनिविधिकहहुकृपाकरिसोउ॥ तुम्हतजिदीनदयाल
अवहितूनदेषौंकोउ॥ १६६॥ सुनुन्टपविविधिजतनजगमाहीं॥ कष्टसाध्यपुनिहोहिं
किनाहीं॥ अहइएकअतिसुगमउपाई॥ तहांपरंतुएककठिनाई॥ ममआधीनजुगु ९८
तिन्टपसोई॥ मोरजावतवनगरनहोई॥ आजुलगेअरुजवतेभएउँ॥ काहूकेगृह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्रामनगरउं॥ जौंनजाउँतौहोइअकाजू॥ बनाआउअसमंजसआजू॥ सुनिमहीस
बोलेमृदुबानी॥ नाथनिगमअसिनीतिबखानी॥ बडेसनेहलघुन्हपरकरहीं॥ गिरि
निजसिरन्हिसदातृनधरहीं॥ जलधिअगाधमौलिवहफेनू॥ संततधरनिधरतसिररे
नू॥ दोहा॥ असकहिगहेनरेसपदस्वामीहोहुकृपाल॥ मोहिलागिदुखसहियप्रभुस
ज्जनदीनदयाल॥ १६७॥ जानिनृपहिआपनआधीना॥ बोलातापसकपटप्रबीना॥
सत्यकहौंभूपतिसुनुतोही॥ जगनाहिनदुर्लभकछुमोही॥ अवसिकाजमैंकरिहौंतोरा॥
मनक्रमवचनभगततैंमोरा॥ जोगजुगुतितपमंत्रप्रभाउ॥ फलैतवहिंजवकरियदुराउ॥
जौंनरेसमैंकरौंरसोई॥ तुम्हपरसहुमोहिजाननकोई॥ अन्नसोजोइजोइभोजनकरई॥
सोइसोइतवआयसुअनुसरई॥ पुनितिन्हकेग्रहजेवैंजोउ॥ तववसहोइभूपसुनुसोउ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० जाउ उपाउ रचहु न्टप येह॥ संवत भरि संकल्प करेहू॥ दोहा॥ नित नूतन द्विज सहस सत
६९ बरेहु सहित परिवार॥ मै तुम्हरे संकल्प लगि दिनहि करव जिवनार॥१६८॥ एहि विधि भू
प कष्ट अति थोरे॥ होइ हहि विप्र सकल वस तोरे॥ करिहहि विप्र होम मख सेवा॥ तेहि
प्रसंग सहजहि वस देवा॥ और एक तोहि कहौं लखाऊ॥ मै एहि वेष न आउव काऊ॥ तु
म्हरे उपरोहित कहं राया॥ हरि आनव मै करि निज माया॥ तपवल तेहि करि आपु समा
ना॥ रखिहौं इहां वरष परवाना॥ मै धरि तासु वेष सुनु राजा॥ सब विधि तोर संवारव काजा
गै निसि वहुत सैन अव कीजे॥ मोहि तोहि भूप भेट दिन तीजे॥ मै तपवल तोहि तुरग समे
ता॥ पुहचैहौं सोवतहि निकेता॥ दोहा॥ मै आउव सोइ वेष धरि पहिचानेहु तव मोहि ६९
जव एकांत वुलाइ सव कथा सुनावौं तोहि॥१६९॥ सयन कीन्ह न्टप आपसु मानी॥ आ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सनजाउबैठछलज्ञानी॥अमितभूपनिद्राअतिआई॥सोकिमिसोवसोचअधिकाई॥का
लकेतुनिसिचरतहँआवा॥जेउसूकरहोउनृपहिभुलावा॥परममित्रतापसनृपकेरा।
जानैसोअतिकपटघनेरा॥तेहिकेसतसुतअरुदसभाई॥खलअतिअजयदेवदुखदा
ई॥प्रथमहिभूपसमरसबमारे॥विप्रसंतसुरदेखिदुखारे॥तेहिखलपाछिलवयरुसंभारा।
तापसनृपमिलिमंत्रविचारा॥जेहिरिपुछयसोउरचेन्हिउपाऊ॥भावीवसनजानकछु
राऊ॥दोहा॥रिपुतेजसीअकेलअपिलघुकरिगनियनताहु॥अजहुदेतदुखरविससि
हिसिरअवसेषितराहु॥१७०॥तापसनृपनिजसखहिनिहारी॥हरषिमिलेउउठिभ
एउसुखारी॥मित्रहिसबकहिकथासुनाई॥जातुधानबोलासुखपाई॥अवसाधेउंरिपु
सुनहुनरेसा॥जौतुम्हकीन्हमोरउपदेसा॥परिहरिसोचरहहुतुम्हसोई॥विनुऔषध

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
७०

बिश्राधिबिधिबोई॥ कुलसमेतरिपुमूलवहाई॥ चौथेदिवसमिलवमैआई॥ तापसनृप
हिवकृतपरितोषी॥ चलामहाकपटीअतिरोषी॥ भानुप्रतापहिवाजिसमेता॥ पहुचायेसि
छनमाऊनिकेता॥ नृपहिनारिपहिसैनकराई॥ हयगृहवाँधेसिवाजिवनाई॥ दोहा॥
राजाकेउपरोहितहिहरिलैगएउवहोरि॥ लैराषेसिगिरिषोहमहुमायामतिभोरि॥
१७१॥ आपुबिरचिउपरोहितरूपा॥ परेउजाइतेहिसेजअनूपा॥ जागेउनृपअनभएं
उबिहाना॥ देषिभवनअतिअचरजमाना॥ मुनिमहिमामनमहुअनुमानी॥ उठेउग
वहिजेहिजाननरानी॥ काननगएउवाजिचढितेहीं॥ पुरनरनारिनजानेउकेहीं॥ ग
एजामजुगभूपतिआवा॥ घरघरउत्सववाजवधावा॥ उपरोहितहिदेषजवराजा॥ चकि ७०
तविलोकिसुमिरिसोइकाजा॥ जुगसमनृपहिगएउदिनतीनी॥ कपटीमुनिपदरहिम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिलीनी॥ समयजानिउपरोहितआवा॥ नृपहिमतेसवकहिसमुझावा॥ नृपहरषेअप दो०
हिचानिगुरभ्रमवसरहानचेत॥ वरेतुरतसतसहस्रवरविप्रकुटुंवसमेत॥१७२॥ उपरोहित
जेवनारवनाई॥ छरसचारिविधिजसिश्रुतिगाई॥ मायामयतेहिकीन्हरसोई॥ विंजनव
हुगनिसकैनकोई॥ विविधिमृगन्हकरआमिषराधा॥ तेहिमहविप्रमांसखलसाधा॥ भो
जनकहंसवविप्रवुलाए॥ पदपखारिसादरवैठाए॥ परसनजवहिलागमहिपाला॥ भइ
अकासवानीतेहिकाला॥ विप्रवृंदउठिउठिग्रहजाहू॥ हैवडिहानिअन्नजनिखाहू॥
भएरसोईभूसुरमासू॥ सवद्विजउठेमानिविश्वासू॥ भूपविकलमतिमोहभुलानी॥ भा
वीवसमुखआवनवानी॥ दोहा॥ः वोलेविप्रसकोपितवनहिकछुकीन्हविचार॥ जाइनि
साचरहोहुनृपमूढसहितपरिवार॥१७३॥ छत्रवंटतैविप्रवुलाई॥ घालैलिएसहित

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा०
७१

समुदाई॥ ईश्वरराषाधर्महमारा॥ जेहसितैसमेतपरिवारा॥ संवतमध्यनासतवहो
ऊ॥ जलदानानरहैकुलकोऊ॥ न्टपसुनिसापविकलअतित्रासा॥ भइबहोरिवर
गिराअकासा॥ विप्रउसापविचारिनदीन्हा॥ नहिअपराधभूपकछुकीन्हा॥ च
कितविप्रसवसुनिनभवानी॥ भूपगए उजहंभोजनषानी॥ तहंनअसननहि
विप्रसुआरा॥ फिरेउराउमनसोचअपारा॥ सवप्रसंगमहिसुरन्हसुनाई॥ त्रसि
तपरेउअवनीअकुलाई॥ दोहा॥ भूपतिभावीमिटैनहिजदपिनदूषनतोर॥ कि
एअन्यथाहोइनहिविप्रसापअतिघोर॥ १७४॥ असकहिसवमहिदेवसिधाए॥ स
माचारपुरलोगनपाए॥ सोचहिदूषनदैवहिदेही॥ विरचतहंसकागकियजेही॥ ७१
उपरोहितहिभवनपहुचाई॥ असुरतापसहिषवरिजनाई॥ तेहिषलजहंतहंपत्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पठाए॥ सजिसजिसेनभूपसबधाए॥ घेरेन्हिनगरनिसाँकन्हजाई॥ बिबिधिभाँतिनित न
होतिलराई॥ जूझेसकलसुभटकरिकरनी॥ बंधुसमेतपरेउनृपधरनी॥ सत्यकेतु
कुलकोउनहिंबाँचा॥ बिप्रस्रापकिमिहोइअसाँचा॥ रिपुजितिसबनृपनगरबसा
ई॥ निजपुरगवनेजयजसुपाई॥ दोहा॥ भरद्वाजसुनुजाहिजबहोइबिधाताबाम॥
धूरिमेरुसमजनकजमताहिब्यालसमदाम॥१७५॥ कालपाइमुनिसुनिसोइरा
जा॥ भएउनिसाचरसहितसमाजा॥ दससिरताहिबीसभुजदंडा॥ रावननामबीर
बरबंडा॥ भूपअनुजअरिमर्द्दननामा॥ भएउसोकुंभकरनबलधामा॥ सचिवजोर
हाधरमरुचिजासू॥ भएउबिमात्रबंधुलघुतासू॥ नामबिभीषनजेहिजगुजाना
बिष्णुभगतिबिज्ञाननिधाना॥ रहेजेसुतसेवकनृपकेरे॥ भएनिसाचरघोरघनेरे॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ७२ कामरूपखलजिनिसअनेका॥कुटिलभयंकरविगतविवेका॥कृपारहितहिंसकस
वपापी॥वरनिनजाहिंविस्वपरितापी॥दोहा॥ उपजेजदपिपुलस्तकुलपावनअ
मलअनूप॥तदपिमहीसुरस्रापवसभएसकलअघरूप॥१७६॥कीन्हविविधितप
तीनिउभाई॥परमउग्रसोवरनिनजाई॥गएउनिकटतपदेखिविधाता॥मागहु
वरप्रसन्नमैंताता॥करिविनतीपदगहिदससीसा॥वोलेउवचनसुनहुजगदी
सा॥हमकाहूकेमरहिंनमारे॥वानरमनुजजातिदुइवारे॥एवमस्तुतुमवडतप
कीन्हा॥मैंव्रह्मामिलितेहिवरदीन्हा॥पुनिप्रभुकुंभकरनपहिंगएउ॥तेहिविलो
किमनविसमयभएउ॥जौंयहखलनितकरवअहारू॥होइहिसवउजारिसंसारू ७२
सारदप्रेरितासुमतिफेरी॥मांगेसिनींदमासषटकेरी॥दोहा॥गएविभीषनपास

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुनि कहेउ अस बर मागूँ॥ तेहि मागेउ भगवंतपदकमल अमल अनुरागु॥१७७॥ तिन्ह
हि देउ बर ब्रह्म सिधाए॥ हरषित ते अपने ग्रह आए॥ मय तनुजा मंदोदरि नामा॥ प
रम सुंदरी नारि ललामा॥ सोइ मय दीन्हि रावनहि आनी॥ होइहि जातुधानपति जा
नी॥ हरषित भए उ नारि भलि पाई॥ पुनि दोउ बंधु बिआहेसि जाई॥ गिरि त्रिकूट एक
सिंधु मझारी॥ बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी॥ सोइ मय दानव बहुरि सँवारा॥ कनक र
चित मनि भवन अपारा॥ भोगावति जसि अहिकुल बासा॥ अमरावति जसि सक्र निवासा॥
तिन्ह ते अधिक रम्य अति बंका॥ जग बिख्यात नाम तेहि लंका॥ दोहा॥ खाईं सिंधु गंभी
र अति चारिहु दिसि फिरि आव॥ कनक कोट मनि षचित दृढ बरनि न जाइ बनाव॥ हरि
प्रेरित जेहि कलप जोइ जातुधानपति होइ॥ सूर प्रतापी अतुल बल दल समेत बस सोइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ७३ १७८ ॥ रहे तहाँ निसिचर भट भारे ॥ ते सब सुरन्ह समर संघारे ॥ अब तहाँ रहहि सक्र के प्रेरे ॥
रछक कोटि जछपति केरे ॥ दसमुख कतहु खबरि असि पाई ॥ सेन साजि गढ घेरेसि जाई ॥ दे
षि बिकट भट बडि कटकाई ॥ जछ जीव लै गए पराई ॥ फिरि सब नगर दसानन देषा ॥ गए
उ सोच सुष भए उ बिसेषा ॥ सुंदर सहज अगम अनुमानी ॥ कीन्हि तहाँ रावन रजधानी ॥
जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे ॥ सुषी सकल रजनीचर कीन्हे ॥ एक बार कुबेर पर धावा ॥
पुष्पक जान जीति लै आवा ॥ दोहा ॥ कौतुक ही कैलास पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ ॥ मन
हु तौलि निज बाहु बल चला बहुत सुष पाइ ॥ १७९ ॥ सुष संपति सुत सेन सहाई ॥ जय
प्रताप बल बुद्धि बडाई ॥ नित नूतन सब बाढत जाई ॥ जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ॥
अतिबल कुंभकरन अस भ्राता ॥ जेहि कहुँ नहि प्रतिभट जग जाता ॥ करइ पान सोवइ ७३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षट मासा॥ जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा॥ जौ दिन प्रति अहार कर सोई॥ बिश्व बेगि सब चौपट
होई॥ समर धीर नहि जाइ बषाना॥ तेहि सम अमित बीर बलवाना॥ वारिदनाद जेठ सुत ता
सु॥ भट महँ प्रथम लीक जग जासु॥ जेहि न होइ रन सन्मुष कोई॥ सुर पुर नितहि परावन होई॥ २त
दोहा॥ कुमुष अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय॥ एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट
निकाय॥१८०॥ कामरूप जानहि सब माया॥ सपनेहु जिन्ह के धरम न दाया॥ दसमुष बैठ स
भा एक बारा॥ देषि अमित आपन परिवारा॥ सुत समूह जन परिजन नाती॥ गनै को पार निसा
चर जाती॥ सेन बिलोकि सहज अभिमानी॥ बोला बचन क्रोध मद सानी॥ सुनहु सकल रजनी
चर जूथा॥ हमरे बैरी बिबुध बरूथा॥ ते सन्मुष नहि लरहि लराई॥ देषि सबल रिपु जाहि परा
ई॥ तिन्ह कर मरन एक बिधि होई॥ कहौ बुझाइ सुनहु अब सोई॥ द्विज भोजन मष होम सरा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रा०
८४

धा॥सवकैजाउकरहुतुम्हवाधा॥दोहा॥छुधाछीनवलहीनसुरसहजहिंमिलिहहिंआ
उ॥नवमारिहौंकिछाडिहौंभलीभांतिअपनाउ॥१८१॥मेघनादकहंपुनिहकरावा॥दी
न्हीसिषवलवयरुवढावा॥जेसुरसमरधीरवलवाना॥जिन्हकेलरिवेकरअभिमाना॥
तिन्हहिजीतिरनआनेसुवांधी॥उठिसुतपितुअनुसासनकांधी॥एहिविधिसवही
अज्ञादीन्ही॥आपुनचलागदाकरलीन्ही॥चलतदसाननडोलतिअवनी॥गर्जत
गर्भश्रवतसुररवनी॥रावनआवतसुनेअसकोहा॥देवन्हतकेमेरुगिरिषोहा॥दिगपा
लन्हकेलोकसुहाए॥सूनेसकलदसाननपाए॥पुनिपुनिसिंहनादकरिभारी॥देइ
देवतन्हगारिप्रचारी॥रनमदमत्तफिरैजगधावा॥प्रतिभटषोजतकतहुनपावा॥र ८४
विससिपवनवरुनधनधारी॥अगिनिकालजमसवअधिकारी॥किन्नरसिद्धमनुज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुरनागा॥ हठिसवहीकेपंथहिंलागा॥ ब्रह्मसृष्टिजहँलगितनुधारी॥ दसमुखवसवर्ती
नरनारी॥ आयसुकरहिंसकलभयभीता॥ नवहिंआइनितचरनविनीता॥ दोहा॥ भुज
वलविश्ववस्यकरिराखेसिकोउनसुतंत्र॥ मंडलीकमनिरावनराजकरैनिजमंत्र॥ देवज
क्षगंधर्वनरकिन्नरनागकुमारि॥ जीतिवरीनिजवाहुवलवहुसुंदरिवरनारि॥ १८२॥ इंद
जीतसनजोकछुकहेउ॥ सोसवजनुपहिलेकरिरहेउ॥ प्रथमहिजिन्हकहँआयसुदी
न्हा॥ तिन्हकरचरितसुनहुजोकीन्हा॥ देषतभीमरूपसवपापी॥ निसिचरनिकरदेवप
रितापी॥ करहिंउपद्रवअसुरनिकाया॥ नानारूपधरहिंकरिमाया॥ जेहिविधिहोइध
र्मनिर्मूला॥ सोसवकरहिंवेदप्रतिकूला॥ जेहिंजेहिंदेसधेनुद्विजपावहिं॥ नगरगाउंपुर
आगिलगावहिं॥ सुभआचरनकतहुंनहिहोई॥ देवविप्रगुरुमाननकोई॥ नहिंहरि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भगतिजग्यजपदाना॥सपनेहुसुनियनवेदपुराना॥छंद॥जपजोगविरागातपमखभा
गाश्रवनसुनैदससीसा॥आपुनउठिधावैरहैनपावैधरिसवघालेषीसा॥असभ्रष्टअ
चाराभासंसाराधर्मसुनियनहिंकाना॥तेहिवहुविधित्रासैदेसनिकासैजोकहवेदपुरा
ना॥सोरठा॥वरनिनजाइअनीतिघोरनिसाचरजोकरहिं॥हिंसापरअतिप्रीतितिन्हके
पापहिकवनिमिति॥१८३॥वाढेषलवहुचोरजुवारा॥जेलंपटपरधनपरदारा॥मानहिं
मातुपितानहिंदेवा॥साधुन्हसनकरवावहिंसेवा॥तिन्हकेयहआचरनभवानी॥तेजा
नहुनिसिचरसमप्रानी॥अतिसयदेखिधर्मकैहानी॥परमसभीतधराअकुलानी॥गि
रिसरिसिंधुभारनहिंमोही॥जसमोहिगरुअएकपरद्रोही॥सकलधर्मदेषैविपरीता
कहिनसकैरावनभयभीता॥धेनुरूपधरिहृदयविचारी॥गईतहांजहंसुरमुनिझारी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निजसंतापसुनाएसिरोई॥काहूतेंकछुकाजनहोई॥छंद॥ सुरमुनिगंधर्वामिलिक
रिसर्वागेविरंचिकेलोका॥संगगोतनुधारीभूमिविचारीपरमविकलभयसोका॥ब्रह्मास
वजानामनअनुमानामोरकछूनवसाई॥जाकरितंइदासीसोअविनासीहमरोतोरस
हाई॥सोरठा॥ धरनिधरहिमनधीरकहविरंचिहरिपदसुमिरि॥जानतजनकीपीरप्र
भुभंजेहिदारुनविपति॥१८४॥वैठेसुरसवकरहिविचारा॥कहंपाइयप्रभुकरियपुकारा॥
पुरवैकुंठजानकहकोई॥कोउकहपयनिधिवसप्रभुसोई॥जाकेहृदयभगतिजसिप्रीती
प्रभुतेहिप्रगटसदायहनीती॥तेहिसमाजगिरिजामेंरहेउं॥अवसरपाइवचनएकक
हेउं॥हरिव्यापकसर्वत्रसमाना॥प्रेमतेंप्रगटहोहिंमेंजाना॥देसकालदिसिविदिसहु
माहीं॥कहहुसोकहांजहांप्रभुनाहीं॥अगजगमयसवरहितविरागी॥प्रेमतेंप्रभुप्रग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०१
७६

टै जिमि आगी॥ मोर वचन सब के मन माना॥ साधु साधु करि ब्रह्म बखाना॥ दोहा॥ सुनि
बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर॥ अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधी
र॥१८५॥ छंद॥ जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता॥ गो द्विज हि
तकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता॥ पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानै
कोई॥ जो सहज कृपाला दीनदयाला करौ अनुग्रह सोई॥ जय जय अविनासी सब घट
बासी ब्यापक परमानंदा॥ अविगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा॥ जेहि ला
गि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृंदा॥ निसि बासर ध्यावहिं गुनगावहिं जय गन
ति सच्चिदानंदा॥ जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिधि बनाई संग सहाइ न दूजा॥ सो करउ अघारी चिं ७६
त हमारी जानिय भगति न पूजा॥ जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा॥ मन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बचक्रमबानीछाडिसयानीस्रनसकलसुरजूथा॥सारदस्रुतिसेषारिषयअसेषाजाक
हुँकोउनहिजाना॥जेहिदीनपियारेवेदपुकारेद्रवौसोश्रीभगवाना॥भववारिधिमंदर
सबबिधिसुंदरगुनमंदिरसुखपुंजा॥मुनिसिद्धसकलसुरपरमभयातुरनमतनाथपद
कंजा॥दोहा॥जानिसभयसुरभूमिसुनिबचनसमेतसनेह॥गगनगिरागंभीरभइहरनि
सोकसंदेह॥१८६॥जनिडरपहुमुनिसिद्धसुरेसा॥तुम्हहिलागिधरिहौंनरबेसा॥अं
सन्हसहितमनुजअवतारा॥लेहौंदिनकरबंसउदारा॥कस्यपअदितिमहातपकी
न्हा॥तिन्हकहँमैंपूरबबरदीन्हा॥तेदसरथकौसल्यारूपा॥कोसलपुरीप्रगटनरभू
पा॥तिन्हकेगृहअवतरिहौंजाई॥रघुकुलतिलकसोचारिउभाई॥नारदबचनस
त्यसबकरिहौं॥परमसक्तिसमेतअवतरिहौं॥हरिहौंसकलभूमिगरुआई॥निर्भय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्र

बा॰ ७७

होहुदेवसमुदाई॥ गगनब्रह्मबानीसुनिकाना॥ तुरतफिरेसुरहृदयजुडाना॥ तबब्र
ह्माधरनिहिसमुझावा॥ अभयभईभरोसजियआवा॥ दोहा॥ निजलोकहिबिरंचिगेदे
वन्हइहैसिषाइ॥ बानरतनुधरिधरिमहिहरिपदसेवहुजाइ॥ १८७॥ गएदेवसबनि
जनिजधामा॥ भूमिसहितनिजमनबिश्रामा॥ जोकछुआयसुब्रह्मादीन्हा॥ हरषे
देवबिलंबनकीन्हा॥ बनचरदेहधरीछितिमाहीं॥ अतु
लितबलप्रतापतिन्हपाहीं॥ गिरितरुनखआयुधसबबीरा॥ हरिमारगचितवहिंम
तिधीरा॥ गिरिकाननजहँतहँभरिपूरी॥ रहेनिजनिजअनीकरचिरूरी॥ यहसबरु
चिरचरितमैंभाषा॥ अबसोसुनहुजोबीचहिंराषा॥ अवधपुरीरघुकुलमनिराऊ॥ बे ७७
दबिदिततेहिदसरथनाऊं॥ धर्मधुरंधरगुननिधिग्यानी॥ हृदयभगतिमतिसारंगपानी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नी॥ दोहा॥ कौसिल्यादि नारि सब प्रिय आचरन पुनीत॥ पति अनुकूल प्रेम दृढ हरि पद
कमल विनीत॥१८८॥ एक समै भूपति मन माहीं॥ भै गलानि मोरें सुत नाहीं॥ गुर गृह ग
यउ तुरत महिपाला॥ चरन लागि करि विनय विसाला॥ निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ
कहि वसिष्ठ बहु विधि समुझायउ॥ धरहु धीर होइहहिं सुत चारी॥ त्रिभुवन विदित भगत
भय हारी॥ श्रृंगी रिषिहि वसिष्ठ बुलावा॥ पुत्रकाम लगि जज्ञ करावा॥ भक्ति सहित मुनि आ
हुति दीन्हे॥ प्रगटे अगिनि चरु कर लीन्हे॥ जो वसिष्ठ कछु हृदय विचारा॥ सकल काज भा
सिद्ध तुम्हारा॥ यह हवि बाँटि देहु नृप जाई॥ जथा जोग जेहि भाग बनाई॥ दोहा॥ तब अदृ
स्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ॥ परमानंद मगन नृप हरष न हृदय समाइ॥१८९॥
तवहिं राय प्रिय नारि बुलाईं॥ कौसिल्यादि तहाँ चलि आईं॥ अर्द्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ७८

उभय भाग आधे कर लीन्हा॥ कैकेई कहँ न्रप सों दयउ॥ रह्यो सो उभय भाग पुनि भयउ॥
कौसल्यां कैकई हाथ धरि॥ दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि॥ एहि विधि गर्भ सहित सब
नारी॥ भई हृदय हरषित सुष भारी॥ जा दिन ते हरि गर्भहि आए॥ सकल लोक सुष संपति
छाये॥ मंदिर महँ सब राजहि रानी॥ सोभा सील तेज की षानी॥ सुष जुत कछुक काल चलि
गए उ॥ जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भए उ॥ दोहा॥ जोग लगन ग्रह वार तिथि सकल भ
ए उ अनुकूल॥ चर अरु अचर हरषजुत राम जन्म सुषमूल॥१९०॥ नौमी तिथि मधुमा
स पुनीता॥ सुकुल पछ अभिजित हरिप्रीता॥ मध्य दिवस अति सीत न घामा॥ पावन स
कल लोक विश्रामा॥ सीतल मंद सुरभि वह वाउ॥ हरषित सुर संतन मन चाउ॥ वन कु ७८
सुमित गिरिगन मनिआरा॥ श्रवहि सकल सरितामृतधारा॥ सो अवसर विरंचि जव जा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ना॥ चलेसकलसुरसाजिबिमाना॥ गगनबिमलसंकुलसुरजूथा॥ गावहिंगुनगंधर्बबरू-
था॥ बरषहिंसुमनसुअंजलिसाजी॥ गहगहिगगनदुंदुभीबाजी॥ अस्तुतिकरहिंनागमु-
निदेवा॥ बहुबिधिलावहिंनिजनिजसेवा॥ दोहा॥ सुरसमूहबिनतीकरिपहुंचेनिजनिज
धाम॥ जगनिवासप्रभुप्रगटेअखिललोकबिश्राम॥१९१॥ छंद॥ भएप्रगटकृपाला
परमदयालाकौसिल्याहितकारी॥ हरषितमहतारीमुनिमनहारीअद्भुतरूपबिचारी॥
लोचनअभिरामंतनघनस्यामंनिजआयुधभुजचारी॥ भूषनबनमालानयनबिसाला
सोभासिंधुखरारी॥ कहदुइकरजोरीअस्तुतितोरीकेहिबिधिकरौंअनंता॥ मायागुनग्या-
नातीतअमानाबेदपुरानभनंता॥ करुनासुखसागरसबगुनआगरजेहिगावहिंश्रुति
संता॥ सोममहितलागीजनअनुरागीभयउप्रगटश्रीकंता॥ ब्रह्मांडनिकायानिर्मित

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० मायारोमरोमप्रतिवेदकहै॥ममउरवासीयहउपहासीसुनतधीरमनथिरनरहै॥उप
७९ जाजवज्ञानाप्रभुमुसुकानाचरितवहुतविधिकीन्हचहै॥कहिकथासुहाईमातुवुझाई
जेहिप्रकारसुतप्रेमलहै॥मातापुनिवोलीसोमतिडोलीतजहुतातयहरूपा॥कीजैसिसु
लीलाअतिप्रियसीलायहसुषपरमअनूपा॥सुनिवचनसुजानारोदनठानाहोइ
वालकसुरभूपा॥यहचरितजेगावहिहरिपदपावहितेनपरहिभवकूपा॥ दोहा॥वि
प्रधेनुसुरसंतहितलीन्हमनुजअवतार॥निजइछानिर्मिततनुमायागुनगोपार॥१
९२॥ सुनिसिसुरुदनपरमप्रियवानी॥संभ्रमचलिआईसववरानी॥हरषितजहँतहँ
धाईदासी॥आनंदमगनसकलपुरवासी॥दसरथपुत्रजन्मसुनिकाना॥मानहुब्रह्मा ७९
नंदसमाना॥परमप्रेममनपुलकसरीरा॥चाहतउठनकरतमतिधीरा॥जाकरनामे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुनतसुभहोई॥ मोरेंग्रहआवाप्रभुसोई॥ परमानंदपूरिमनराजा॥ कहीवुलाइवजा
वहुवाजा॥ गुरवसिष्ठकहगएउहकारा॥ आएद्विजन्हसहितनृपद्वारा॥ अनुपमवा
लकदेषहिजाई॥ रूपरासिगुनकहिनसिराई॥ दोहा॥ नंदीमुषसराधकरिजातकर
मसवकीन्ह॥ हाटकधेनुवसनमनिनृपविप्रन्हकहंदीन्ह॥ १९३॥ ध्वजपताकतोर
नपुरछावा॥ कहिनजाइजेहिभांतिवनावा॥ सुमनवृष्टिअकासतेहोई॥ व्रह्मानंदम
गननरलोई॥ वृंदवृंदमिलिचलीलोगाई॥ सहजसिंगारकिएउठिधाई॥ कनकक
लसमंगलभरिथारा॥ गावतपैठहिभूपदुआरा॥ करिआरतीनिछावरिकरहीं॥ वारवारसि
सुचरननिपरहीं॥ मागधसूतवंदिगनगायक॥ पावनगुनगावहिरघुनायक॥ सर्वसदान
दीन्हसवकाहू॥ जेहिपावाराषानहिताहू॥ मृगमदचंदनकुंकुमकीचा॥ मचीसकलवी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

थिन्हभ्रिचवीचा॥ दोहा॥ः गहगहवाजवधावशुभप्रभुप्रगटेसुषकंद॥ हरषवंतसव
बा० ८० जहंतहंनगरनारिनरवृंद॥१९४॥ कैकैसुतासुमित्रादोउ॥ सुंदरसुतजनमतभईवो
उ॥ वहसुषसंपतिसमयसमाजा॥ कहिनसकैसारदअहिराजा॥ अवधपुरीसोहैएहि
भांती॥ प्रभुहिमिलनआईजनुराती॥ देषिभानुजनुमनसकुचानी॥ तदपिवनीसंध्या
अनुमानी॥ अगरधूपवहुजनुअंधियारी॥ उडइअवीरमनहुअरुनारी॥ मंदिरमनि
समूहजनुतारा॥ नृपगृहकलससोइंदुउदारा॥ भवनवेदधुनिअतिमृदुवानी॥ ज
नुषगमुषरसमयजनुसानी॥ कौतुकदेषिपतंगभुलाना॥ एकमासतेहिजाततजाना॥
दोहा॥ः मासदेवसकरदेवसभामरमुनजानैकोउ॥ रथसमेतरविथाकेउनिसाकवनिवि
धिहोइ॥१९५॥ यहरहस्यकाहूनहिजाना॥ दिनमनिचलेकरतगुनगाना॥ देषिम ८० वि

होत्सवसुरमुनिनागा॥ चलेभवनवरनतनिजभागा॥ औरौएककहौंनिजचोरी॥ सुनुगि
रिजाअतिदृढमतितोरी॥ काकभसुंडिसंगहमदोउ॥ मनुजरूपजानैनहिकोउ॥ परमा
नंदप्रेमसुषफूले॥ बीथिन्हफिरहिसकलरसभूले॥ यहसुभचरितजानपैसोई॥ कृपा
रामकेजापरहोई॥ तेहिअवसरजोजेहिविधिआवा॥ दीन्हभूपजोजेहिमनभावा॥ गज
रथतुरगहेमगोहीरा॥ दीन्हेनृपनानाविधिचीरा॥ दोहा॥ मनसंतोषसवनिकेज
हतंहदेहिअसीस॥ सकलतनयचिरजीवहुतुलसिदासकेईस॥ १९६॥ कछुकदेवस
वीतेएहिभांती॥ जातनजानियदिनअरुराती॥ नामकरनकरअवसरजानी॥ भूपवोलि
पठएमुनिज्ञानी॥ करिपूजाभूपतिअसभाषा॥ धरियनामजोमुनिगुनिराषा॥ इन्हके
नामअनेकअनूपा॥ मैनृपकहवस्वमतिअनुरूपा॥ जोआनंदसिंधुसुषरासी॥ सीक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रतै त्रैलोकसुपासी॥ सोसुषधाम राम अस नामा॥ अषिललोकदायकविश्रामा॥ विस्व
भरनपोषनकरजोई॥ ताकरनाम भरत अस होई॥ जाकेसुमिरनतेरिपुनासा॥ नामस
त्रुहनवेदप्रकासा॥ दोहा॥ लछनधाम राम प्रियसकलजगतआधार॥ गुरवसिष्ठते
हिराषालछिमननाम उदार॥ १९७॥ धरेनाम गुरहृदयविचारी॥ वेदतत्वन्टपतव
सुतचारी॥ मुनिधनजनसर्वससिवप्राना॥ वालकेलिरसतेहिसुषमाना॥ वारहितेनि
जहितपतिजानी॥ लछिमनरामचरनरतिमानी॥ भरतसत्रुहनदूनोभाई॥ प्रभुसेव
कजसप्रीतिवडाई॥ स्यामगौरसुंदरदोउजोरी॥ निरषहिछविजननीत्रिनतोरी॥ चा
रिउसीलरूपगुनधामा॥ तदपिअधिकसुषसागररामा॥ हृदयअनुग्रहइंदुप्रकासा॥ ८१
सूचतकिरिनमनोहरहासा॥ कवहुउछंगकवहुवरपलना॥ मातुदुलारैकहिप्रिय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ललना॥ दोहा॥ व्यापक व्रह्म निरंजन निर्गुन विगत विनोद॥ सो अज प्रेम भगति वस
कौसल्या के गोद॥१९८॥ काम कोटि छवि स्याम सरीरा॥ नील कंज वारिद गंभीरा॥ अरुन
चरन पंकज नष जोती॥ कमल दलन्हि वैठे जनु मोती॥ रेष कुलिस ध्वज अंकुस सोहे॥ नू
पुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे॥ कटि किंकिनी उदर त्रय रेषा॥ नाभि गंभीर जान जिन्ह दे
षा॥ भुज विसाल भूषन जुत भूरी॥ हिय हरि नष अति सोभा रूरी॥ उर मनिहार पदिक की
सोभा॥ विप्र चरन देषत मन लोभा॥ कंवु कंठ अति चिवुक सुहाई॥ आनन अमित मदन
छवि छाई॥ दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे॥ नासा तिलक को वरनै पारे॥ सुंदर श्रवन
सुचारु कपोला॥ अति प्रिय मधुर तोतरे वोला॥ चिक्कन कच कुंचित गभुआरे॥ वहु प्रकार
रचि मातु सँवारे॥ पीत झगुलिया तनु पहिराई॥ जानु पानि विचरनि मोहि भाई॥ रूप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सकहि न सकहिं श्रुति सेषा॥ सो जानै सपनेहुं जेहि देषा॥ दोहा॥ सुषसंदोह मोहप

बा०
८२
र ज्ञान गिरा गोतीत॥ दंपति परम प्रेम बस कर सिसु चरित पुनीत॥१९९॥ एहि बिधि

राम जगत पितु माता॥ कोसलपुर बासिन्ह सुषदाता॥ जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी॥

तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी॥ रघुपति बिमुष जतन कर कोरी॥ कवन सकै भव बंधन

छोरी॥ जीव चराचर बस करि राषे॥ सो माया प्रभु सों भय भाषे॥ भ्रकुटि बिलास नचावै ता

ही॥ अस प्रभु छाडि भजिय कहु काही॥ मन क्रम बचन छाडि चतुराई॥ भजत कृपा करि

हैं रघुराई॥ एहि बिधि सिसु बिनोद प्रभु कीन्हा॥ सकल नगर बासिन्ह सुष दीन्हा॥ लै

उछंग कबहुं क हलरावै॥ कबहुं पालने घालि झुलावै॥ दोहा॥ प्रेम मगन कौसल्या ८२

निसि दिन जात न जान॥ सुत सनेह बस माता बाल चरित कर गान॥२००॥ एक बार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जननीअन्हवाए॥ करिसिंगारपलनापोढाए॥ निजकुलइष्टदेवभगवाना॥ पूजाहे
तुकीन्हअस्नाना॥ करिपूजानैवेद्यचढावा॥ आपुगईजहंपाकवनावा॥ वहुरिमातु
तहँवाचलिआई॥ भोजनकरतदेषिसुतजाई॥ गईजननिसिसुपहिंभयभीता॥ देषा
वालतहांपुनिसूता॥ वहुरिआइदेषासुतसोई॥ हृदयकंपमनधीरनहोई॥ इहांउ
हांदुइवालकदेषा॥ मतिभ्रममोरिकिआनविसेषा॥ देषारामजननिअकुलानी॥ प्रभु
हसिदीन्हमधुरमुसुकानी॥ दोहा॥ देषरावामातहिनिजअद्भुतरूपअषंड॥ रोमरो
मप्रतिलागेकोटिकोटिब्रह्मंड॥ १०१॥ अगनितरविससिसिवचतुरानन॥ वहुगिरिस
रितसिंधुमहिकानन॥ कालकर्मगुनज्ञानसुभाउ॥ सोउदेषाजोसुनानकाउ॥ दे
षीमायासवविधिगाढी॥ अतिसभीतजोरेंकरठाढी॥ देषाजीवनचावैजाही॥ देषीभ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गतिजोछोरैताही॥ननपुलकितमुषवचननआवा॥ नैनमूदिचरननिसिरनावा॥वि
वा० स्मयवंतदेषिमहतारी॥भएवहुरिसिसुरूपषरारी॥अस्तुतिकरिनजाइभयमाना॥ज
८३ गतपितामैसुतकरिजाना॥हरिजननिहिवहुविधिसमुझाई॥यहजनिकतहुँक
हहुसुनिमाई॥दोहा॥ वारवारकौसल्याविनयकरइकरजोरि॥अवजनिकवहूँव्या
पैप्रभुमोहिमायातोरि॥२०२॥वालचरितहरिवहुविधिकीन्हा॥अतिअनंददासन्ह
कहँदीन्हा॥कछुककालवीतेसवभाई॥वडेभएपरिजनसुषदाई॥चूडाकरनकीन्ह
गुरजोई॥विप्रन्हपुनिदछिनावहुपाई॥परममनोहरचरितअपारा॥करतफिरत
चारिउसुकुमारा॥मनक्रमवचनअगोचरजोई॥दसरथअजिरविचरप्रभुसोई॥भो ८३
जनकरतवोलजवराजा॥नहिंआवततजिवालसमाजा॥कौसल्याजववोलनजाई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ठुमुक ठुमुक हरि चलहि पराई॥ निगम नेति सिव अंत न पावा॥ ताहि धरै जननी हठि
धावा॥ धूसर धूरि भरे तन आये॥ भूपति बिहसि गोद बैठाये॥ दोहा॥ भोजन करत चप
॥ चावल
लचित इत उत अवसर पाइ॥ भागि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाय॥२०३॥ बा
लचरित अति सरल सुहाए॥ सारद सेष संभु श्रुति गाए॥ जिन्ह कर मन इन्ह सन नहि रा
ता॥ ते जन बंचित किए बिधाता॥ भए कुमार जबहि सब भ्राता॥ दीन्ह जनेउ गुर पितु मा
ता॥ गुरगृह गए पढ़न रघुराई॥ अलप काल बिद्या सब आई॥ जाकी सहज स्वास श्रुति
चारी॥ सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी॥ बिद्या बिनय निपुन गुन सीला॥ खेलहि खेल सकल
न्रपलीला॥ करतल बान धनुष अति सोहा॥ देखत रूप चराचर मोहा॥ जिन्ह बीथिन्ह
बिहरहि सब भाई॥ थकित होहिं सब लोग लुगाई॥ दोहा॥ कोसलपुर बासी नर ना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० रिझउ अरु बाल॥ प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहँ राम कृपाल॥२०४॥ बंधु सखा संग ले-
९४ हिं बुलाई॥ बन मृगया नित खेलहिं जाई॥ पावन मृग मारहिं जिय जानी॥ दिन प्रति नृप
हि देखावहिं आनी॥ जे मृग राम बान के मारे॥ ते तनु तजि सुरलोक सिधारे॥ अनुज सखा
संग भोजन करहीं॥ मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं॥ जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा॥ कर
हिं कृपानिधि सोइ संजोगा॥ बेद पुरान सुनहिं मन लाई॥ आपु कहहिं अनुजन्ह स
मुझाई॥ प्रात काल उठि कै रघुनाथा॥ मातु पिता गुरु नावहिं माथा॥ आयसु मांगि
करहिं पुर काजा॥ देखि चरित हरषै मन राजा॥ दोहा॥ ब्यापक अकल अनीह अ
ज निर्गुन नाम न रूप॥ भगत हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप॥२०५॥ यह सब च ९४
रित कहा मैं गाई॥ आगिल कथा सुनहु मन लाई॥ बिश्वामित्र महामुनि ज्ञानी॥ ब

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सहिविपिनसुभआश्रमजानी॥जहँजपजोगजग्यमुनिकरहीं॥अतिमारीचसुवाहु
हिडरहीं॥देषतजग्यनिसाचरधावहिं॥करहिंउपद्रवमुनिदुषपावहिं॥गाधितन
यमनचिंताव्यापी॥हरिविनुमरहिंननिसिचरपापी॥तवमुनिवरमनकीन्हविचा
रा॥प्रभुअवतरेउहरनमहिभारा॥एहिमिसिमैंदेषौंपदजाई॥करिविनतीआनौंउ
दोउभाई॥ज्ञानविरागसकलगुनअयना॥सोप्रभुमैंदेषवभरिनयना॥दोहा॥व
हुविधिकरतमनोरथजातलागिनहिंवार॥करिमज्जनसरजूजलगएभूपदरवा
र॥२०६॥मुनिआगमनसुनाजवराजा॥मिलनगएउलैविप्रसमाजा॥करिदंडव
तमुनिहिसनमानी॥निजआसनवैठारेन्हिआनी॥चरनपषारिकीन्हिअतिपू
जा॥मोसमआजुधन्यनहिंदूजा॥विविधिभांतिभोजनकरवावा॥मुनिवरहृदयँ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ८५

सुख अति पावा॥ पुनि चरननि मेले सुत चारी॥ राम देषि मुनि देह बिसारी॥ भए म
गन देषत मुख सोभा॥ जनु चकोर पूरन ससि लोभा॥ तब मन हरषि बचन कह राउ॥ मु
नि अस कृपा न कीन्हेहु काउ॥ केहि कारन आगमन तुम्हारा॥ कहहु सो करत न ला
वौं बारा॥ असुर समूह सतावहिं मोही॥ मैं जाचन आयउँ नृप तोही॥ अनुज समे
त देहु रघुनाथा॥ निसिचर बध मैं होब सनाथा॥ दोहा॥ देहु भूप मन हरषित तजहु
मोह अज्ञान॥ धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहु अति कल्यान॥ २०७॥ सुनि राजा अ
ति अप्रिय बानी॥ हृदय कंप मुष दुति कुम्हिलानी॥ चौथेपन पायेउ सुत चारी॥ बिप्र बचन
नहि कहेहु बिचारी॥ मांगहु भूमि धेनु धन कोसा॥ सर्बस देउँ आजु सहरोसा॥ देह प्रान ते
प्रिय कछु नाहीं॥ सो उ मुनि देउ निमिष एक माहीं॥ सब सुत प्रिय मोहि प्रान की नाईं॥ ८५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामदेतनहिंबनइगोसांईं॥कहंनिसिचरअतिघोरकठोरा॥कहंसुंदरसुतपरमकिसो
रा॥मुनिन्टपगिराप्रेमरससानी॥हृदयहरखमानामुनिज्ञानी॥तबवसिष्टबहुविधिस
मुझावा॥न्टपसंदेहनासकहंपावा॥अतिआदरदोउतनयबुलाए॥हृदयलाइबहु
भांतिसिखाए॥मेरेप्राननाथसुतदोउ॥तुममुनिपिताआननहिंकोउ॥दोहा॥सौंपे
भूपरिखिहिसुतबहुविधिदेइअसीस॥जननीभवनगएप्रभुचलेनाइपदसीस॥सोरठा
पुरुखसिंहदोउवीरहरखिचलेमुनिभयहरन॥कृपासिंधुमतिधीरअखिलविश्वकार
नकरन॥२०८॥अरुननयनउरबाहुविसाला॥नीलजलजतनस्यामतमाला॥कटिप
टपीतकसेवरभाथा॥रुचिरचापसायकदुहुंहाथा॥स्यामगौरसुंदरदोउभाई॥विश्वामि
त्रमहानिधिपाई॥प्रभुब्रह्मन्यदेवमेंजाना॥मोहिनितिपितातजेउभगवाना॥चले

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० जातमुनिदीन्हदिखाई॥सुनिताड़िकाक्रोधकरिधाई॥एकहिंबानप्रानहरिलीन्हा॥दी
८६ नजानितेहिनिजपददीन्हा॥तबरिषिनिजनाथहिजियचीन्ही॥बिद्यानिधिकहँबि
द्यादीन्ही॥जातेलागनछुधापिआसा॥अतुलितबलतनतेजप्रकासा॥दोहा॥आयुध
सर्वसमर्पिकैप्रभुनिजआश्रमआनि॥कंदमूलफलभोजनदीन्हभगतिहितजानि॥
२०९॥प्रातकहामुनिसनरघुराई॥निर्भयजग्यकरहुतुम्हजाई॥होमकरनलागेमुनि
झारी॥आपुरहेमखकींरखवारी॥सुनिमारीचनिसाचरक्रोही॥लैसहाइधावामुनिद्रोही॥ ३
बिनुफरबानरामतेहिमारा॥सतजोजनगासागरपारा॥पावकसरसुबाहुपुनिमारा॥अ
नुजनिसाचरकटकुसंघारा॥मारिअसुरद्विजनिर्भयकारी॥अस्तुतिकरहिंदेवमुनिझा ८६
री॥तहंपुनिकछुकदेवसरघुराया॥रहेकीन्हिबिप्रन्हपरदाया॥भगतिहेतुबहुकथा

पुराना॥ कहेबिप्रजद्यपिप्रभुज्ञाना॥ तबमुनिसादरकहाबुझाई॥ चरितएकप्रभुदेषिय
जाई॥ धनुषजग्यसुनिरघुकुलनाथा॥ हरषिचलेमुनिबरकेसाथा॥ आश्रमएकदीषमग
माहीं॥ षगमृगजीवजंतुतहँनाहीं॥ पूछामुनिहिसिलाप्रभुदेषी॥ सकलकथामुनिकही
बिसेषी॥ दोहा॥ गौतमनारिस्रापबसउपलदेहधरिधीर॥ चरनकमलरजचाहतिकृपा
करहुरघुबीर॥ २१०॥ छंद॥ परसतपदपावनसोकनसावनप्रगटभईतपपुंजसही॥ देष
तरघुनायकजनसुषदायकसनमुषहोइकरजोरिरही॥ अतिप्रेमअधीरापुलकसरी
न रामुषनहिंआवैबचनकही॥ अतिसयबड़भागीचरनन्हिलागीजुगनयनन्हिजलधारब
ही॥ धीरजमनकीन्हाप्रभुकहँचीन्हारघुपतिकृपाभगतिपाई॥ अतिनिर्मलबानीअस्तु
तिठानीज्ञानगम्यजयरघुराई॥ मैनारिअपावनप्रभुजगपावनरावनरिपुजनसुषदाई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ८७ राजीवबिलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिसरनहिंआई॥मुनिसापजोदीन्हाअतिभ
लकीन्हापरमअनुग्रहमैमाना॥देखेउँभरिलोचनहरिभवमोचनइहैलाभसंकरजा
ना॥बिनतीप्रभुमोरीमैमतिभोरीनाथनमागौवरआना॥पदकमलपरागारसअनुरा
गाममनमधुपकरैपाना॥जेहिपदसुरसरितापरमपुनीताप्रगटभईसिवसीसधरी
सोइपदपंकजजेहिपूजतअजममसिरधरेउकृपालहरी॥एहिभाँतिसिधारीगौतम
नारीवारवारहरिचरनपरी॥जोअतिमनभावासोवरपावागैपतिलोकअनंद॥दोहा॥ भरी
असप्रभुदीनबंधुहरिकारनरहितकृपाल॥तुलसिदाससठतेहिभजुछाडिकपटजंजा
ल॥२११॥चलेरामलछिमनमुनिसंगा॥गएजहाँजगपावनिगंगा॥गाधिसूनुसवकथा ८७
सुनाई॥जेहिप्रकारसुरसरिमहिआई॥तवप्रभुरिषिन्हसमेतनहाए॥विविधदानम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हि देवन्हु पार॥ हरषि चले मुनि बृंद सहाया॥ वेगि विदेह नगर नियराया॥ पुर रम्यता रा
म जब देखी॥ हरषे अनुज समेत विसेषी॥ वापी कूप सरित सर नाना॥ सलिल सुधा सम म
नि सो पाना॥ गुंजत मत्त रहत रस भृंगा॥ कूजत कल बहु वरन विहंगा॥ वरन वरन विकसे
वनजाता॥ त्रिविधि समीर सदा सुखदाता॥ दोहा॥ सुमन वाटिका वाग वन विपुल विहंग नि
वास॥ फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास॥ २१२॥ वनइ न वरनत नगर निकाई॥
जहां जाइ मन तहां लुभाई॥ चारु वजार विचित्र अवारी॥ मनिमय विधि जनु स्वकर संवारी॥
धनिक वनिक वर धनद समाना॥ वैठे सकल वस्तु लै नाना॥ चौहट सुंदर गलीं सुहाई॥ सं
तत रहहिं सुगंध सिंचाई॥ मंगलमय मंदिर सव केरे॥ चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे॥ पुर नर
नारि सुभग स वसंता॥ धरमसील ज्ञानी गुनवंता॥ अति अनूप जहँ जनक निवासू॥ विथ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० कहिविवुधविलोकिविलासू॥हेतन्चकितचितकोटविलोकी॥सकलभुवनसोभाजनुरो
२८ की॥दोहा॥धवलधाममनिपुरटपटसुघटितनानाभाँति॥सियनिवाससुंदरसदनुसो
भाकिमिकहिजाति॥२१३॥सुभगद्वारसवकुलिसकपाटा॥भूपभीरनटमागधभाटा॥
वनीविसालवाजिगजसाला॥हयगयरथसंकुलसवकाला॥सूरसचिवसेनपवहुते
रे॥न्रपग्रहसरिससदनसवकेरे॥पुरवाहिरसरसरितसमीपा॥उतरेजहँतहँविपुल
महीपा॥देषिअनूपएकअमराई॥सवसुपाससवभाँतिसुहाई॥कौसिककहेउमो
रमननमाना॥इहारहियरघुवीरसुजाना॥भलेहिनाथकहिकृपानिकेता॥उतरेतहँ
मुनिवृंदसमेता॥विस्वामित्रमहामुनिआये॥समाचारमिथिलापतिपाये॥दोहा॥ २८
संगसचिवसुचिभूरिभटभूसुरवरगुरज्ञाति॥चलेमिलनमुनिनायकहिमुदितराउ

एहि भाँति॥२२४॥ कीन्ह प्रनाम चरन धरि माथा॥ दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा॥
बिप्रबृंद सब सादर बंदे॥ जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे॥ कुसल प्रस्न कहि बारहिं बारा॥
बिस्वामित्र नृप हि बैठारा॥ तेहि अवसर आए दोउ भाई॥ गए रहे देषन फुलवाई॥
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा॥ लोचन सुषद बिस्व चित चोरा॥ उठे सकल जब रघुपति
आए॥ बिस्वामित्र निकट बैठाए॥ भए सब सुषी देषि दोउ भ्राता॥ बारि बिलोचन पुल
कित गाता॥ मूरति मधुर मनोहर देषी॥ भए बिदेहु बिदेहु बिसेषी॥ दोहा॥ प्रेम मगन म
न जानि नृपु करि बिबेकु मन धीर॥ बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर॥२२५
कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक॥ मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक॥ ब्रह्म जो निग
म नेति कहि गावा॥ उभय बेष धरि की सोइ आवा॥ सहज बिराग रूप मनु मोरा॥ थकित

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा॰ होतजिमिचंदचकोरा॥ तातेप्रभुपूछउँसतिभाउ॥ कहहुनाथजनिकरहुदुराउ॥ इ
९९ न्हहिविलोकतअतिअनुरागा॥ वरवसब्रह्मसुषहिमनुत्यागा॥ कहमुनिविहसिक
हेहुनृपनीका॥ वचनतुम्हारनहोयअलीका॥ येप्रियसवहिजहांलगिप्रानी॥ मन
मुसकाहिंरामसुनिवानी॥ रघुकुलमनिदसरथकेजाए॥ ममहितलागिनरेसपठाए
दोहा॥ रामलषनदोउवंधुवररूपसीलवलधाम॥ मषराषेउसवसाषिजगुजितेअ
सुरसंग्राम॥२१६॥ मुनितवचरनदेषिकहराउ॥ कहिनसकौंनिजपुन्यप्रभाउ॥ सुंद
रस्यामगौरदोउभ्राता॥ आनंदहूकेआनंददाता॥ इन्हकैप्रीतिपरस्परपावनि॥ क
हिनजाइमनभावसुहावनि॥ सुनहुनाथकहमुदितविदेहू॥ ब्रह्मजीवइवसह
जसनेहू॥ पुनिपुनिप्रभुहिचितवनरनाहू॥ पुलकगातउरअधिकउछाहू॥ मुनि ९९

हि प्रसंसि नाइ पद सीस॥ चले उ लवाइ नगर अवनीस॥ सुंदर सदन सुषद सव का
ला॥ तहां वास लै दीन्ह भुआला॥ करि पूजा सव विधि सेवकाई॥ गए उ राउ गृह वि
दा कराई॥ दोहा॥ रिषय संग रघुवंसमनि करि भोजन विश्राम॥ वैठे प्रभु भ्राता सहि
त देवस रहा भरि जाम॥ २१७॥ लषन हृदय लालसा विसेषी॥ जाइ जनकपुर आइअ
देषी॥ प्रभु भय वहुरि मुनिहि सकुचाहीं॥ प्रगट न कहहिं मनहिं मुसकाहीं॥ राम अ
नुज मन की गति जानी॥ भगत (प्रीत) वछलता हिय हुलसानी॥ परम विनीत सकुचि मुसु
काई॥ वोले गुर अनुसासन पाई॥ नाथ लषन पुर देषन चहहीं॥ प्रभु सकोच डर प्रगट
न कहहीं॥ जौं राउर (आप) मैं आयसु पावौं॥ नगर देषाइ तुरत लै आवौं॥ सुनि मुनीस कह वचन
सप्रीती॥ कस न राम राषहु तुम्ह नीती॥ धर्म सेतु पालक तुम्ह ताता॥ प्रेम विवस सेवक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
९० सुषदाता॥दोहा॥जाउदेषिआवहुनगरुसुषनिधानदोउभाउ॥करहुसुफलसवकेन
यनसुंदरवदनदिषाउ॥२१८॥मुनिपदकमलवंदिदोउभ्राता॥चलेलोकलोचनसुषदा
ता॥वालकवृंददेषिअतिसोभा॥लगेसंगलोचनमनुलोभा॥पीतवसनपरिकरकटि
भाथा॥चारुचापसरसोहतहाथा॥तनअनुहरतसुचंदनषोरी॥स्यामलगौरमनोहर
जोरी॥केहरिकंधरवाहुविसाला॥उरअतिरुचिरनागमनिमाला॥सुभगसोनसरसीरु
हलोचन॥वदनमयंकतापत्रयमोचन॥काननिकनकफूलछविदेहीं॥चितवतचित
हिचोरिजनुलेहीं॥चितवनिचारुभृकुटिवरवांकी॥तिलकरेषसोभाजनुचाकी॥दोहा
॥रुचिरचौतनीसुभगासिरमेचककुंचितकेस॥नषसिषसुंदरवंधुदोउसोभासकलसु ९०
देस॥२१९॥देषननगरभूपसुतआए॥समाचारपुरवासिन्हपाए॥धाएधामकामस

वत्यागी॥ मनहुरंक निधिलूटनलागी॥ निरषिसहजसुंदरदोउभाई॥ होहिंसुषी
लोचनफलपाई॥ जुवतीभवनझरोषेलागी॥ निरषहिंरामरूपअनुरागी॥ कहहिंपर
स्पर बचनसप्रीती॥ सषिइन्हकोटिकाम छविजीती॥ सुरनरअसुरनागमुनिमाहीं॥
सोभाअसिकहुसुनियतनाहीं॥ विष्णुचारिभुजविधिमुषचारी॥ विकटवेषमुषपंचपुरा
री॥ अपरदेवअसकोउनाहीं॥ यहछविसषिपटतरियेजाही॥ दोहा॥ वयकिसोरसु
षमासदनस्यामगौरसुषधाम॥ अंगअंगपरवारिअहिंकोटिकोटिसतकाम॥ २२०॥ क
हहुसषीअसकोतनुधारी॥ जोनमोहयहरूपनिहारी॥ कोउसप्रेमबोलीम्रदुवानी॥
जोमैंसुनासोसुनहुसयानी॥ येदोउदसरथकेढोटा॥ वालमरालनकेकलजोटा॥ मु
निकौसिकमषकेरषवारे॥ जिन्हरनअजिरनिसाचरमारे॥ स्यामगातकलकंजविलो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ८१

चन॥जोमारींचसुभुजमदमोचन॥कौसल्यासुतसोसुषषानी॥नामरामधनुसायकपा
नी॥गौरकिसोरवेषुवरकाछें॥करसरचापरामकेपाछें॥लछिमननामरामलघुभ्रा
ता॥सुनुसषिपितासुसुमित्रामाता॥दोहा॥विप्रकाजुकरिबंधुदोउमगमुनिवधूउधारि
आएदेषनचापमषसुनिहरषीसवनारि॥२२०॥देषिरामछबिकोउएककहई॥जो
गजानकिहियहवरुअहई॥जौंसषिइन्हहिदेषिनरनाहू॥पनपरिहरिहठिकरइ
विवाहू॥कोउकहएभूपतिपहिचाने॥मुनिसमेतसादरसनमाने॥सषिपरंतुपनरा
उनतजई॥विधिवसहठिअविवेकहिभजई॥कोउकहजौंभलअहइविधाता॥स
वकहसुनियउचित (जोग) फलदाता॥तौजानकिहिमिलिहिवरयेहू॥नाहिनआलिइ
हांसंदेहू॥जौंविधिवसअसवनइसंजोगू॥तौकृतकृत्यहोहिसवलोगू॥सषीहमारे ८१

आरति नाते॥ कवहुँक ये आवहिं एहि नाते॥ दोहा॥ः नाहित हम कहुँ सुनहु सखि इन्ह
कर दरसनु दूरि॥ यह संघटु तव होइ जव पुन्य पुराकृत भूरि॥२२२॥ वोली अपर कहेहु
सखि नीका॥ यह विआहु अति हित सव ही का॥ को उ कह संकर चाप कठोरा॥ ये
स्यामल मृदु गात किसोरा॥ सव असमंजस अहइ सयानी॥ यह सुनि अपर कहइ
मृदु वानी॥ सखि इन्ह कहँ को उ को उ अस कहहीं॥ वड प्रभाउ देखत लघु अहहीं॥
परसि जासु पद पंकज धूरी॥ तरी अहल्या कृत अघ भूरी॥ सो कि रहिहि विनु सिव धनु
तोरे॥ यह प्रतीति परिहरिय न भोरे॥ जेहि विरंचि रचि सीय सवारी॥ तेहि स्यामल वरु
रचेउ विचारी॥ तासु वचन सुनि सव हरषानी॥ ऐसेइ हो उ कहहिं मृदु वानी॥ दोहा॥
हियहरषहिं वरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि वृंद॥ जाहिं जहाँ जहँ वंधु दो उ तहँ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
८२

तहँ परमानंद॥२२३॥ पुर पूरब दिसि गे दोउ भाई॥ जहँ धनुमष हित भूमि बनाई॥ अति
बिस्तार चारु गच ढारी॥ बिमल बेदिका रुचिर सवारी॥ चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला॥ र
चे जहाँ बैठहि महिपाला॥ तेहि पाछे समीप चहु पासा॥ अपर मंच मंडली बिलासा॥
कछुक ऊंचि सब भांति सुहाई॥ बैठहि नगर लोग जहँ जाई॥ तिन्ह के निकट बिसाल सु
हाए॥ धवल धाम बहु बरन बनाए॥ जहँ बैठे देषहि सब नारी॥ जथाजोग निज कुल अ
नुहारी॥ पुर बालक कहि कहि म्रदु बचना॥ सादर प्रभुहि देषावहि रचना॥ दोहा॥ स
ब सिसु एहि मिस प्रेम बस परसि मनोहर गात॥ तन पुलकहि हिय हरष अति देषि
देषि दोउ भ्रात॥२२४॥ सिसु सब राम प्रेम बस जाने॥ प्रीति समेत निकेत बषाने॥ नि ८२
ज निज रुचि सब लेहि बुलाई॥ सहित सनेह जाहि दोउ भाई॥ राम देषावहि अ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥ क्षेत्र ॥ उमकना ॥ समूह

नुजहिरचना॥ कहि मृदु मधुर मनोहर बचना॥ लव निमेष महं भुवन निकाया॥ र
चै जासु अनुसासन माया॥ भगति हेतु सोइ दीनदयाला॥ चितवत चकित धनुष म
ष साला॥ कौतुक देखि चले गुरु पाहीं॥ जानि बिलंबु त्रास मन माहीं॥ जासु त्रास डर कहु
डर होई॥ भजन प्रभाव देखावत सोई॥ कहि बातें मृदु बचन सुहाई॥ किए बिदा बा
लक बरिआई॥ दोहा॥ सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ॥ गुरपद
पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ॥ २२५॥ निसि प्रबेस मुनि आयसु दीन्हा॥ सबहीं सं
ध्याबंदनु कीन्हा॥ कहत कथा इतिहास पुरानी॥ रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी॥ मु
निवर सयन कीन्हि तब जाई॥ लगे चरन चापन दोउ भाई॥ जिन्ह के चरन सरोरुह
लागी॥ करत बिबिध जप जोग बिरागी॥ तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते॥ गुर पद पदुम

वा०
८३ पलोटतप्रीते॥वारवारमुनिअज्ञादीन्ही॥रघुवरजाउसयनतवकीन्ही॥चापतचर
नलषनउरलाए॥सभयसप्रेमपरमसचुपाए॥पुनिपुनिप्रभुकहसोवहुताता
पौढेधरिउरपदजलजाता॥दोहा॥उठेलषननिसिविगतसुनिअरुनसिषाधु
निकान॥गुरतेपहिलेजगतपतिजागेरामसुजान॥२२६॥सकलसोचकरिजाइनहा
ए॥नित्यनिवाहिमुनिहिसिरनाए॥समयजानिगुरआयसुपाई॥लेनप्रसून
चलेदोउभाई॥वागभूपकेरदेषेउजाई॥जहँवसंतरितुरहीलोभाई॥लागेवि
टपमनोहरनाना॥वरनवरनवरवेलिविताना॥नवपल्लवफलसुमनसु
हाए॥निजसंपतिसुररूषलजाए॥चातककोकिलकीरचकोरा॥कुंजतविहंगन ८३
टतकलमोरा॥मध्यवागसरसोहसुहावा॥मनिसोपानविचित्रवनावा॥विमल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सलिलसरसिजबहुरंगा॥जलखगकुंजतगुंजतभृंगा॥दोहा॥ः बागतडागविलोकि
प्रभुहरषेबंधुसमेत॥परमरम्यआरामयहजोरामहिसुषदेत॥२२७॥चहुंदिसिचि
तइपूछिमालीगन॥लगेलेनदलफूलमुदितमन॥तेहिअवसरसीतातहंआई॥
गिरिजापूजनजननिपठाई॥संगसषीसबसुभगसयानी॥गावहिंगीतमनोहरबा
नी॥सरसमीपगिरिजाग्रहसोहा॥बरनिनजाइदेषिमनमोहा॥मज्जनकरिसरसषि
नसमेता॥गईमुदितमनगौरिनिकेता॥पूजाकीन्हिअधिकअनुरागा॥निजअनुरू
पसुभगवरमागा॥एकसषीसियसंगविहाई॥गईरहीदेषनफुलवाई॥तेदोउबंधु
विलोकेजाई॥प्रेमविवससीतापहिंआई॥दोहा॥ः तासुदसादेषीसषिन्हपुलक
गातजलनयन॥कहुकारननिजहरषकरपूछहिंसबम्रदुवयन॥२२८॥देषनवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
८४ गकुँवर दौ उआए॥ वय किसोर सब भाँति सुहाए॥ स्याम गौर किमि कहौं बखानी॥ गिरा
अनयन नयन बिनु बानी॥ सुनि हरषीं सब सखीं सयानी॥ सिय हिय अति उतकंठा
जानी॥ एक कहहिं नृपसुत तेइ आली॥ सुने जो मुनि संग आए काली॥ जिन्ह निज
रूप मोहनी डारी॥ कीन्हे स्वबस नगर नर नारी॥ बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू॥ अ
वसि देखिअहि देखन जोगू॥ तासु बचन अति सियहि सुहाने॥ दरस लागि लोचन अ
कुलाने॥ चली अग्र करि प्रिय सखि सोई॥ प्रीति पुरातन लखइ न कोई॥ दोहा॥ सुमिरि
सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत॥ चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी
सभीत॥२२९॥ कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि॥ कहत लखन सन राम हृदय गुनि ८४
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही॥ मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही॥ अस कहि फिरि चित

एतेहि ओरा॥ सियमुख ससि भए नयन चकोरा॥ भए बिलोचन चारु अचंचल॥ मनहु
सकुचि निमि तजे दृगंचल॥ देखि सीय सोभा सुख पावा॥ हृदय सराहत बचन न आवा॥
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई॥ बिरचि बिस्व कहं प्रगटि दिखाई॥ सुंदरता कहं सुंदर
करई॥ छबिगृह दीपसिखा जनु बरई॥ सब उपमा कबि रहे जुठारी॥ केहि पटतरौं बिदे
हकुमारी॥ दोहा॥ सिय सोभा हिय बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि॥ बोले सुचि मन अ
नुज सन बचन समय अनुहारि॥ २३०॥ तात जनकतनया यह सोई॥ धनुषजग्य जेहि
कारन होई॥ पूजन गौरि सखी लै आई॥ करत प्रकास फिरहि फुलवाई॥ जासु बिलोकि
अलौकिक सोभा॥ सहज पुनीत मोर मन छोभा॥ सो सब कारन जान बिधाता॥ फरकहि
सुभग अंग सुनु भ्राता॥ रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाउ॥ भूलि न देहि कुमारग पाउ॥ मोहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० अतिसयप्रतीतिमनकेरी॥जेहिसपनेहुपरनारिनहेरी॥जिन्हकेलहहिंनरिपुरनपीठी
२५५ नहिपावहिंपरतियमनडीठी॥मंगनलहहिंनजिन्हकेनाहीं॥तेनरवरथोरेजगमा
हीं॥ दोहा॥ करतवतकहीअनुजसनमनसियरूपलुभान॥मुषसरोजमकरंदछविकरइ
मधुपइवपान॥२३१॥ चितवतिचकितचहूंदिसिसीता॥कहंगएनृपकिसोरमनचिंता
ल जंहविलोकमृगसावकनैनी॥जनुतहंवरिसकमलसितश्रेनी॥लताओटतवसषिन्हल
षाए॥स्यामलगौरकिसोरसुहाए॥देषिरूपलोचनललचाने॥हरषेजनुनिजनिधिपि
हिचाने॥थकेनयनरघुपतिछविदेषे॥पलकन्हिहूपरिहरीनिमेषे॥अधिकसनेहदे
हभइभोरी॥सरदससिहिजनुचितवचकोरी॥लोचनमगरामहिउरआनी॥दीन्हेपल
ककपाटसयानी॥जवसियसषिन्हप्रेमवसजानी॥कहिनसकहिंकछुमनसकुचानी॥ दो० २५५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लतामवनतेप्रगटभए तेहिअवसरदोउभाउ ॥ निकसेजनुजुगविमलविधुजलदपट
लविलगाउ ॥ २३२ ॥ सोभासींवसुभगदोउवीरा ॥ नीलपीतजलजातसरीरा ॥ मोरपंखसि
रसोहतनीके ॥ गुछेविचविचकुसुमकलीके ॥ भालतिलकश्रमविंदुसुहाए ॥ श्रवनसुभग
भूषनछविछाए ॥ विकटभ्रुकुटिकचघूंघरवारे ॥ नवसरोजलोचनरतनारे ॥ चारुचिवुक
नासिकाकपोला ॥ हासविलासलेतमनमोला ॥ मुखछविकहिनजाउमोहियाहीं ॥ जोविलो ध
किबहुकाममलजाहीं ॥ उरमनिमालकंवुकलग्रीवा ॥ कामकलभकरभुजवलसींवा ॥ सुम
नसमेतवामकरदोना ॥ सांवरकुंअरसखीसुठिलोना ॥ दोहा ॥ केहरिकटिपटपीतधरसुष
मासीलनिधान ॥ देषिभानुकुलभूषनहिविसरासषिन्हअपान ॥ २३३ ॥ धरिधीरजएक
आलिसयानी ॥ सीतासनवोलीगहिपानी ॥ वहुरिगौरिकरध्यानकरेहू ॥ भूपकिसोरदेषि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ९६

किन्ह सनेहू॥ सकुचि सीय तब नयन उघारे॥ सनमुख दोउ रघुसिंह निहारे॥ नख सिख देखि

राम कै सोभा॥ सुमिरि पिता पन मन अति छोभा॥ पर बस सखिन्ह लखी जब सीता॥ भएउ गह

रु सब कहहिं सभीता॥ पुनि आउब एहि बिरिआ काली॥ अस कहि मन बिहसी एक आली॥

गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी॥ भएउ बिलंब मातु भय मानी॥ धरि बडि धीर राम उर आने

फिरी अपनपौ पितु बस जाने॥ दोहा॥ देखन मिस मृग बिहंग तरु फिरइ बहोरि बहोरि॥

निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढइ प्रीति न थोरि॥ २३४॥ जानि कठिन सिवचाप [चिंता] बिसूरति

चली राखि उर स्यामल मूरति॥ प्रभु जब जात जानकी जानी॥ सुख सनेह सोभा के खानी॥ प

रम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही॥ चारु चित्र भीतर लिखि लीन्ही॥ गई भवानी भवन बहोरी॥

बंदि चरन बोली कर जोरी॥ जय जय जय गिरि बरराज किसोरी॥ जय महेस मुख चंद चकोरी॥ ९६

जयगजवदनषडाननमाता॥जगतजननिदामिनिदुतिगाता॥नहितवआदिमध्यअव
अंत ॥संसार॥उतपत॥पालन॥नास
साना॥अमितप्रभाउवेदनहिजाना॥भवभवविभवपराभवकारिनि॥विस्वविमोहनिस्व
वसविहारिनि॥दोहा॥ पतिदेवतासुतीयमहमातुप्रथमतवरेष॥महिमाअमितनसक
पतिव्रता
हिकहिसहससारदासेष॥२३५॥सेवततोहिसुलभफलचारी॥वरदाइनीपुरारिपिआरी
देविपूजिपदकमलतुम्हारे॥सुरनरमुनिसवहोहिसुषारे॥मोरमनोरथजानहुनीके॥वस
हुसदाउरपुरसवहीके॥कीन्हेउप्रगटनकारनतेही॥असकहिचरनगहेवैदेही॥विन
यप्रेमवसभईभवानी॥षसीमालमूरतिमुसकानी॥सादरसियप्रसादसिरधरेउ॥वोली
गौरिहरषुहियभरेउ॥सुनुसियसत्यअसीसहमारी॥पूजिहिमनकामनातुम्हारी॥ना
रदवचनसदासुचिसाचा॥सोवरुमिलिहिजाहिमनुराचा॥छंद॥ मनुजाहिराचेउमि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा॰
८७

लिहिसोवरुसहजसुंदरसांवरो॥ करुनानिधानसुजानसीलसनेहुजानतरावरो॥ एहि
भांतिगौरिअसीससुनिसियसहितहियहरषींअली॥ तुलसीभवानिहिपूजिपुनिपुनि
मुदितमनमंदिरचली॥ सोरठा॥ जानिगौरिअनुकूलसियहियहरषनजाइकहि॥ मंजु
लमंगलमूलबामअंगफरकनलगे॥ २३६॥ हृदयसराहतसीयलोनाई॥ गुरसमीपग
वनेदोउभाई॥ रामकहासबकौसिकपाहीं॥ सरलसुभावछुअतछलनाहीं॥ सुमनपा
इमुनिपूजाकीन्ही॥ पुनिअसीसदुहुभाइन्हदीन्ही॥ सफलमनोरथहोहुतुम्हारे॥ रा
मलषनसुनिभएसुखारे॥ करिभोजनमुनिवरविज्ञानी॥ लगेकहनकछुकथापुरानी॥
विगतदिवसगुरआयसुपाई॥ संध्याकरनचलेदोउभाई॥ प्राचीदिसिससिउए उसु
हावा॥ सियमुषसरिसदेषिसुषपावा॥ बहुरिविचारकीन्हमनमाहीं॥ सीयवदनसम

८७

हिमकरनाहीं॥दोहा॥ जनमसिंधुपुनिबंधुबिषदिनमलीनसकलंकु॥ सियमुषसम
तापावकिमिचंदवापुरोरंकु॥२३७॥ बढैघटैबिरहिनिदुषदाई॥ग्रसैराहुनिजसंधिहि
पाई॥कोकसोकप्रदपंकजद्रोही॥अवगुनवहुतचंद्रमातोही॥वैदेहीमुषपटतरदीन्हे
होइदोषवड अनुचितकीन्हे॥सियमुषछविबिधुव्याजवषानी॥गुरपहिचलेनिसावडि
जानी॥करिमुनिचरनसरोजप्रनामा॥आयसुपाइकीन्हबिश्रामा॥बिगतनिसारघुना
यकजागे॥बंधुबिलोकिकहनअसलागे॥उए अरुनअवलोकहुताता॥पंकजकोक
लोकसुषदाता॥बोलेलषनजोरिजुगपानी॥प्रभुप्रभावसूचकम्रदुवानी॥दोहा॥अ
रुनोदयसकुचेकुमुद उडगनजोतिमलीन॥जिमितुम्हारआगमनसुनिभएन्रपति
वलहीन॥२३८॥न्रपसबनषतकरहिउजियारी॥टारिनसकहिचापतमभारी॥कमल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोक मधुकर खग नाना॥ हरषे सकल निसा अवसाना॥ ऐसेहि सब प्रभु भगत तुम्हारे॥ हो-
बा० इहहि टूटे धनुष सुषारे॥ उए उ भानु बिनु श्रम तम नासा॥ दुरे नषत जग तेज प्रकासा
९८ रवि निज उदय ब्याज रघुराया॥ प्रभु प्रताप सब न्टपन्ह दिषाया॥ तव भुज बल महिमा उ-
दघाटी॥ प्रगटी धनु विघटन परिपाटी॥ बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने॥ होइ सुचि सह-
ज पुनीत नहाने॥ नित्य क्रिया करि गुर पहि आए॥ चरन सरोज सुभग सिर नाए॥ सता-
नंद तव जनक बुलाए॥ कौसिक मुनि पहि तुरत पठाए॥ जनक विनय तिन्ह आइ सुनाई॥
हरषे बोलि लिए दोउ भाई॥ दोहा॥ सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुर पहि जाइ॥ चलहु
तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बुलाइ॥ २३९॥ सीय स्वयंबर देषिय जाई॥ ईस काहि ९८
धौं देइ बडाई॥ लषन कहा जस भाजन सोई॥ नाथ कृपा तव जापर होई॥ हरषे मुनि सब

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मुनिवरवानी॥ कीन्हिअसीससबहिसुषमानी॥ पुनिमुनिवृंदसमेतक्रिपाला॥ देषन
चलेधनुषमषसाला॥ रंगभूमिआएदोउभाई॥ असिसुधिसबपुरवासिन्हपाई॥ चले
सकलग्रहकाजविसारी॥ वालजुवानजरठनरनारी॥ देषीजनकभीरभइभारी॥ सुचि
सेवकसबलिएहकारी॥ तुरतसकललोगन्हपहिंजाहु॥ आसनउचितदेहुसबका
हु॥ दोहा॥ कहिम्रदुवचनविनीततिन्हवैठारेनरनारि॥ उत्तममध्यमनीचलघुनि
जनिजथलअनुहारि॥२४०॥ राजकुअंरतेहिअवसरआए॥ मनहुमनोहरतातनछा
ए॥ गुनसागरनागरवरवीरा॥ सुंदरस्यामलगौरसरीरा॥ राजसमाजविराजतरूरे॥ उ
डगनमहुजनुजुगविधुपूरे॥ जिन्हकेरहीभावनाजैसी॥ प्रभुमूरतितिन्हदेषीतैसी॥
देषहिरूपमहारनधीरा॥ मनहुवीररसधरेसरीरा॥ डरेकुटिलन्रपप्रभुहिनिहारी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मनहुभयानकमूरतिभारी॥ रहेअसुरछलछोनिपवेषा॥ तिन्हप्रभुप्रगटकालसम
बा० ९८ देषा॥ पुरवासिन्हदेषेदोउभाई॥ नरभूषनलोचनसुषदाई॥ दोहा॥: नारिबिलोक
हिंहरषिहियनिजनिजरुचिअनुरूप॥ जनुसोहतसिंगारधरिमूरतिपरमअनूप
२४१॥ (पंडत) बिदुषनप्रभुबिराटमयदीसा॥ बहुमुषकरपगलोचनसीसा॥ जनकजातिअव
लोकहिंकैसे॥ सजनसगेप्रियलागहिंजैसे॥ सहितबिदेहबिलोकहिरानी॥ सिसुसम
प्रीतिनजाइबषानी॥ जोगिन्हपरमतत्वमयभासा॥ सांतशुद्धसमसहजप्रकासा॥ ह
रिभगतन्हदेषेदोउभ्राता॥ इष्टदेवइवसबसुषदाता॥ रामहिचितवभायजेहिसी
या॥ सोसनेहसुषनहिकथनीया॥ (जानसा) उरअनुभवतिनकहिसकसोउ॥ कवनप्रकार ९८
कहेकबिकोउ॥ जेहिबिधिरहाजाहिजसभाउ॥ तेहितसदेषेउकोसलराउ॥ दोहा

राजतराजसमाजमहकोसलराजकिसोर॥सुंदरस्यामलगौरतनविस्वविलोचनचो
र॥२४२॥सहजमनोहरमूरतिदोउ॥कोटिकामउपमालघुसोउ॥सरदचंदनिंदक
मुखनीके॥नीरजनयनभावतेजीके॥चितवनिचारुमारमनहरनी॥भावतिहृदयजा
तिनहिवरनी॥कलकपोलश्रुतिकुंडललोला॥चिवुकअधरसुंदरमृदुवोला॥कुमुद
वंधुकरनिंदकहासा॥भृकुटीविकटमनोहरनासा॥भालविसालतिलकझलकाहीं
कचविलोकिअलिअवलिलजाहीं॥पीतचौतनीसिरनिसुहाई॥कुसुमकलीविचवी
चवनाई॥रेखैरुचिरकंवुकलग्रीवाँ॥जनुत्रिभुवनउपमाकीसीवाँ॥दोहा॥ कुंजरमनि
कंठाकलितउरन्हतुलसिकामाल॥वृषभकंधकेहरिठवनिवलनिधिवाहुविसाल
२४३॥कटितूनीरपीतपटवाँधे॥करसरधनुषवामवरकाँधे॥पीतजज्ञउपवीतसुहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
१००

ए॥ नखसिखमंजुमहाछबिछाए॥ देखिलोगसबभएसुखारे॥ एकटकलोचनचलतन
टारे॥ हरषेजनकुदेखिदोउभाई॥ मुनिपदकमलगहेतबजाई॥ करिबिनतीनिजकथा
सुनाई॥ रंगअवनिसबमुनिहिदिखाई॥ जहँजहँजाहिंकुँवरवरदोउ॥ तहँतहँचकि
तचितवसबकोउ॥ निजनिजरुखरामहिसबदेखा॥ कोउनजानकछुमरमबिसेषा॥ भ
लिरचनामुनिनृपसनकहेउ॥ राजामुदितमहासुखलहेउ॥ दोहा॥ सबमंचनतेमं
चएकसुंदरविसदविसाल॥ मुनिसमेतदोउबंधुतहँबैठारेमहिपाल॥२४४॥ प्रभुहि
देखिसबनृपहियहारे॥ जनुराकेसउदयभएतारे॥ अतिप्रतीतिसबकेमनमाहीं॥ रा
मचापतोरबसकनाहीं॥ बिनुभंजेहुभवधनुषबिसाला॥ मेलिहिसीयरामउरमाला॥ १००
असबिचारिगवनहुघरभाई॥ जसप्रतापबलतेजगवाँई॥ बिहसेअपरभूपसुनिबानी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जेअविवेकअंधअभिमानी॥ तोरेहुधनुषब्याहअवगाहा॥ विनुतोरेकोकुंअरिविवाहा
एकवारकालउकिनहोऊ॥ सियहितसमरजितवहमसोऊ॥ यहसुनिअवरमहिप
मुसुकाने॥ धरमसीलहरिभगतसयाने॥ सोरठा॥ सीयविआहविरामगरवदूरिकिन्हि
पनको॥ जीतिकोसकसंग्रामदसरथकेरनवांकुरे॥२४५॥ ब्यर्थमरहुजनिगालवजाई॥
मनमोदकन्हिकीभूषवुताई॥ सिषहमारिसुनिपरमपुनीता॥ जगदंवाजानहुजियसी
ता॥ जगतपितारघुपतिहिविचारी॥ भरिलोचनछविलेहुनिहारी॥ सुंदरसुषदसकलगुन
रासी॥ येदोउवंधुसंभुउरवासी॥ सुधासमुद्रसमीपविहाई॥ म्रगजलनिरषिमरहुकत
धाई॥ करहुजाइजाकहंजोइभावा॥ हमतोआजुजनमफलपावा॥ असकहिभलेभू
पअनुरागे॥ रूपअनूपविलोकनलागे॥ देषहिसुरनभचढेविमाना॥ वरषहिसुमन

बा० करहिकलगाना॥दोहा॥ः जानिसुअवसरसीयतवपठईजनकवुलाइ॥चतुरसखीसुंद
१०१ रसकलसादरचलींलवाइ॥२४६॥सियसोभानहिजाइवखानी॥जगदंविकारूपगुन
खानी॥उपमासकलमोहिलघुलागी॥प्राकृतनारिअंगअनुरागी॥सियवरनियते
इउपमादेई॥कुकविकहाइअजसकोलेई॥जौपटतरियतीयसमसीया॥जगअ
सिजुवतिकहांकमनीया॥गिरामुखरतनअरधभवानी॥रतिअतिदुखितअतनुपति
जानी॥विषवारुनीवंधुप्रियजेही॥कहियरमासमकिमिवैदेही॥जौछविसुधापयोनि
धिहोई॥परमरूपमयकछपसोई॥सोभारजुमंदरसिंगारू॥मथैपानिपंकजनिजमारू
दोहा॥ः एहिविधिउपजैलछिजवसुंदरतासुखमूल॥तदपिसमेतसकोचकविकहहिं
सीयसमतूल॥२४७॥चलींसंगलैसखीसयानी॥गावतिगीतमनोहरवानी॥सोहनै १०१

वलतन सुंदरसारी॥ जगत जननि अतुलित छवि भारी॥ भूषन सकल सुदेस सुहाए॥ अंग
अंग रचि सखिन्ह वनाए॥ रंगभूमि जव सिय पगु धारी॥ देखि रूप मोहे नर नारी॥ हरषि सु-
रन्ह दुंदुभी वजाईं॥ वरषि प्रसून अपछरा गाईं॥ पानि सरोज सोह जयमाला॥ अवचट
चितए सकल भुआला॥ सीय चकित चित रामहि चाहा॥ भए मोहवस सव नरनाहा॥
मुनि समीप देखे दोउ भाई॥ लगे ललकि लोचन निधि पाई॥ दोहा॥ गुरजन लाज
समाज वड देखि सीय सकुचानि॥ लागि विलोकन सखिन्ह तन रघुवीरहि उर आनि
२४८॥ राम रूप अरु सिय छवि देखे॥ नर नारिन्ह परिहरी निमेषे॥ सोचहि सकल क-
हत सकुचाहीं॥ विधि सन विनय करहि मन माहीं॥ हरु विधि वेगि जनक जडताई॥
मति हमारि असि देहि सुहाई॥ विनु विचार पन तजि नरनाहू॥ सीय राम कर करै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० १०२ विवाहू॥जगभलकहहिभावसबकाहू॥हठकीन्हेअंतहुउरदाहू॥एहलालसाम
गनसबलोगू॥बरसांवरोजानकीजोगू॥तबबंदीजनजनकबुलाए॥बिरदावलीकहत
चलिआए॥कहनृपजाउकहहुपनमोरा॥चलेभाटहियहरषनथोरा॥दोहा॥ बो
लेबंदीबचनबरसुनहुसकलमहिपाल॥पनबिदेहकरकहहिंहमभुजाउठाइबि
साल॥२४९॥नृपभुजबलबिधुसिवधनुराहू॥गरुअकठोरबिदितसबकाहू॥रावन
बानमहाभटभारे॥देखिसरासनगवहिंसिधारे॥सोइपुरारिकोदंडकठोरा॥राजसमाज
आजुजेइतोरा॥त्रिभुवनजयसमेतबैदेही॥बिनहिबिचारबरैहठितेही॥सुनिपन
सकलभूपअभिलाषे॥भटमानीअतिसयमनमाषे॥परिकरबांधिउठेअकुलाई॥ १०२
चलेइष्टदेवन्हसिरनाई॥तमकिताकितकिसिवधनुधरहीं॥उठइनकोटिभांति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बलुकरहीं॥ जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं॥ चाप समीप महीप न जाहीं॥ दोहा॥ नम
कि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाउ॥ मनहु पाउ भट बाहु बलु अधिकु अधि
कु गरुआउ॥ २५०॥ भूप सहस दस एकहि बारा॥ लगे उठावन टरइ न टारा॥ डगै न सं
भु सरासन कैसे॥ कामी बचन सती मनु जैसे॥ सब नृप भए जोग उपहासी॥ जैसे बिनु
बिराग सन्यासी॥ कीरति बिजय बीरता भारी॥ चले चाप कर बरबस हारी॥ श्रीहत भ
ए हारि हिय राजा॥ बैठे निज निज जाउ समाजा॥ नृपन्ह बिलोकि जनक अकुला
ने॥ बोले बचन रोष जनु साने॥ दीप दीप के भूपति नाना॥ आए सुनि हम जो पन ठा
ना॥ देव दनुज धरि मनुज सरीरा॥ बिपुल बीर आए रनधीरा॥ दोहा॥ कुँवरि मनोहरि
बिजय बडि कीरति अति कमनीय॥ पावनिहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु (तोरन) दमनीय॥ २५१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा०
१०२ कहहु काहि यह लाभ न भावा॥ काहु न संकर चाप चढावा॥ रहो चढाउव तोरव भा
ई॥ तिल भरि भूमि न सके उछडाई॥ अव जनि माखे को भट मानी॥ वीर विहीन म
ही मे जानी॥ तजहु आस निज निज ग्रह जाहू॥ लिषा न विधि वैदेहि विवाहू॥ सुकृ
त जाउ जो पन परिहरऊं॥ कुंअरि कुआरि रहो का करऊं॥ जो जनतेउं भुवि भट वि
नु भाई॥ तो पन करि होतेउं न हसाई॥ जनक वचन सुनि सव नर नारी॥ देषि जान
किहि भए दुषारी॥ माषे लखन कुटिल भई भौंहें॥ रदपट फरकत नयन रिसौंहें॥
दोहा॥ कहि न सकत रघुवीर डर लगे वचन जनु वान॥ नाइ राम पद कमल सिर वो
ले गिरा प्रमान॥२५२॥ रघुवंसिन्ह महं जहं के उ होई॥ तेहि समाज अस कहइ न को १०३
ई॥ कही जनक जसि अनुचित वानी॥ विद्यमान रघुकुल मनि जानी॥ सुनहु भानु

कुलपंकजभानू॥ कहउँ सुभाउ न कछु अभिमानू॥ जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं॥
कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं॥ काँचे घट जिमि डारौं फोरी॥ सकौं मेरु मूलक इव तोरी॥
तव प्रताप महिमा भगवाना॥ को बापुरो पिनाक पुराना॥ नाथ जानि अस आयसु हो
उ॥ कौतुक करउँ बिलोकिअ सोउ॥ कमल नाल जिमि चाप चढावौं॥ जोजन सत
प्रमान लै धावौं॥ दोहा॥ तोरौं छत्रक दंड जिमि तो प्रताप बल नाथ॥ जौं न करौं प्रभु
पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ॥२५३॥ लषन सकोप बचन जब बोले॥ डगमगानि
महि दिग्गज डोले॥ सकल लोग सब भूप डेराने॥ सिय हियँ हरष जनक सकुचाने॥
गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं॥ मुदित भए पुनि पुनि पुलकाहीं॥ सयनहिं रघुपति
लषन निवारे॥ प्रेम समेत निकट बैठारे॥ बिस्वामित्र समय सुभ जानी॥ बोले अति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सनेहमयवानी॥ उठहुरामभंजहुभवचापा॥ मेटहुतातजनकपरितापा॥ सुनि
वा० १०४ गुरवचनचरनसिरनावा॥ हरखविषादनकछुउरआवा॥ ठाढभए उठिसहजसु
भाए॥ ठवनिजुवामृगराजलजाए॥ दोहा॥ उदितउदैगिरिमंचपररघुवरवालप
तंग॥ विकसेसंतसरोजसवहरखेलोचनभृंग॥२५४॥ नृपन्हकेरिआसानिसिनासी
वचननखतअवलीनप्रकासी॥ मानीमहिपकुमुदसकुचाने॥ कपटीभूपउलूक
लुकाने॥ भएविसोककोकमुनिदेवा॥ वरखहिसुमनजनावहिसेवा॥ गुरपदवंदि
सहितअनुरागा॥ राममुनिन्हसनआयसुमागा॥ सहजहिचलेसकलजगस्वा
मी॥ मत्तमंजुवरकुंजरगामी॥ चलतरामसवपुरनरनारी॥ पुलकपूरितनभएसुखा १०४
री॥ वंदिपितरसुरसुकृतसंभारे॥ जौकिछुपुन्यप्रभाउहमारे॥ तौ॥ सिवधनुमृना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लकीनाईं॥तोरकुअरमगनेसगोसाईं॥दोहा॥रामहिप्रेमसमेतलषिसषिनसमी
पवोलाइ॥सीतामातुसनेहवसवचनकहैविलषाइ॥२५५॥सषिसबकौतुकदेष
निहारे॥जेउकहावतहितूहमारे॥कोउनवुझाइकहइनृपपाहीं॥येवालकअसि
हठभलनाहीं॥रावनवानछुवानहिचापा॥हारेसकलभूपकरिदापा॥सोधनुरा
जकुंअरकरदेहीं॥वालमरालकिमंदरलेहीं॥भूपसयानपसकलसिरानी॥सषिवि
धिगतिकछुजाइनजानी॥वोलीचतुरसषीमृदुवानी॥तेजवंतलघुगनियनरानी
कहंकुंभजकहंसिंधुअपारा॥सोषेउसुजससकलसंसारा॥रविमंडलदेषतलघुला
गा॥उदयतासुत्रिभुवनतमभागा॥दोहा॥मंत्रपरमलघुजासुवसविधिहरिहरसु
रसर्व॥महामत्तगजराजकहंवसकरअंकुसषर्व॥२५६॥कामकुसुमधनुसायकली

बा०
१०५

न्हे॥ सकल भुअन अपने बस कीन्हे॥ देबिन्ह जिय संसउ अस जानी॥ भंजब धनु बरा
म सुनु रानी॥ सषी बचन सुनि भइ परतीती॥ मिटा बिषाद भई मन प्रीती॥ नव रामहि
बिलोकि बैदेही॥ सभय हृदय बिनवति जेहि तेही॥ मन ही मन मनाव अकुलानी
होहु प्रसन्न महेस भवानी॥ करहु सफल आपनि सेवकाई॥ करि हित हरहु चाप
गरुआई॥ गननायक बरदायक देवा॥ आजु लगे कीन्हिउ तुअ सेवा॥ बार बार बि
नती सुनि मोरी॥ हरहु चाप गरुता अति थोरी॥ दोहा॥ देखि देखि रघुबीर तन सुर
मनाव धरि धीर॥ भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर॥२५७॥ नीके निरखि
नयन भरि सोभा॥ पितु पन सुमिरि बहुरि मन छोभा॥ अहह तात दारुनि हठ १०५
ठानी॥ समुझत नहि कछु लाभ न हानी॥ सचिव सभय सिष देइ न कोई॥ बुध समा

जवउ अनुचित होई॥ कहधनु कुलिसहु चाहि कठोरा॥ कहँ स्यामल मृदु गात किसो
रा॥ बिधि केहि भाँति धरौ उर धीरा॥ सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा॥ सकल सभा कै
मति भइ भोरी॥ अब मोहि संभु चाप गति तोरी॥ निज जडुता लोगन्ह पर डारी॥ होहि
हरुअ रघुपतिहि निहारी॥ अति परिताप सीय मन माहीं॥ लव निमेष जुग सत स
म जाहीं॥ दोहा॥ प्रभुहि चितव पुनि चितव महि राजत लोचन लोल॥ खेलत मन
सिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल॥२५५॥ गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी॥ प्रगट
न लाज निसा अवलोकी॥ लोचन जल रह लोचन कोना॥ जैसे परम कृपन कर सोना॥
सकुची ब्याकुलता बडि जानी॥ धरि धीरज प्रतीति उर आनी॥ तन मन बचन मोर प
न साचा॥ रघुपति पद सरोज मन राचा॥ तौ भगवान सकल उर बासी॥ करिहहि मोहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रघुवरकेदासी॥जेहिकेंजेहिपरसत्यसनेहू॥सोतेहिमिलइनकछुसंदेहू॥प्रभुतनचि
बा० १०६ तइप्रेमपनठाना॥कृपानिधानरामसवजाना॥सियहिविलोकितकेउधनुकैसें॥चि
तवगरुडलघुव्यालहिजैसें॥दोहा॥लषनलषेउरघुवंसमनिताकेउहरकोदंड
पुलकिगातवोलेवचनचरनचापिब्रह्मंड॥२५९॥दिसिकुंजरहुकमठअहिकोला॥
धरहुधरनिधरिधीरनडोला॥रामचहहिंसंकरधनुतोरा॥होहुसजगसुनिआयसुमोरा॥
चापसमीपरामजवआए॥नरनारिन्हसुरसुकृतमनाए॥सवकरसंसउअरुअज्ञानू॥मं
दमहीपन्हकरअभिमानू॥भृगुपतिकेरिगरवगरुआई॥सुरमुनिवरन्हकेरिकदराई॥
सियकरसोचजनकपछितावा॥रानिन्हकरदारुनदुषदावा॥संभुचापवडवोहितपा १०६
ई॥चढेजाइसवसंगवनाई॥रामवाहुवलसिंधुअपारू॥चहतपारुनहिकोउकडिहारू॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥दोहा॥ रामविलोकेलोगसवचित्रलिषेसेदेषि॥ चितईसीयकृपायतनजानीविकल
विसेषि॥२६०॥ देषीविकलअतिहिवैदेही॥ निमिषविहातकलपसमतेही॥ त्रषितवारि
विनुजोतनुत्यागा॥ मुएकरइकासुधातडागा॥ कावरषासवकृषीसुषाने॥ समयचुकेपु
निकापछिताने॥ असजियजानिजानकीदेषी॥ प्रभुपुलकेलषिप्रीतिविसेषी॥ गुरुहिप्र
नाममनहिमनकीन्हा॥ अतिलाघवउठाइधनुलीन्हा॥ दमकेउदामिनिजिमिजव
लयउ॥ पुनिनभधनुमंडलसमभयउ॥ लेतचढावतषैंचतगाढे॥ काहुनलषादेषस
वुठाढे॥ तेहिछनराममध्यधनुतोरा॥ भराभुवनधुनिघोरकठोरा॥ छंद॥ भरेभुवनघो
रकठोररवरविवाजितजिमारगचले॥ चिक्करहिंदिग्गजडोलमहिअहिकोलकूरमकल
मले॥ सुरअसुरमुनिकरकानदीन्हेसकलविकलविचारहीं॥ कोदंडषंडेउरामतुलसी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० १०७

जयतिवचनउचारहीं॥सोरठा॥ संकरचापजहाजसागररघुबरबाहुबल॥बूडासकलस

माजचढाजोप्रथमहिंमोहबस॥२६१॥प्रभुदोउचापखंडमहिडारे॥देखिलोगसबभ

एसुषारे॥कौसिकरूपपयोनिधिपावन॥प्रेमबारिअवगाहसुहावन॥रामरूपराके

सनिहारी॥बढतबीचिपुलकावलिभारी॥बाजतनभगहगहेनिसाना॥देवबधूना

चहिंकरिगाना॥ब्रह्मादिकसुरसिद्धमुनीसा॥प्रभुहिप्रसंसहिंदेहिंअसीसा॥बरिसहिं

सुमनरंगबहुमाला॥गावहिंकिंनरगीतरसाला॥रहीभुवनभरिजयजयबानी॥ध

नुषभंगधुनिजातनजानी॥मुदितकहहिंजहंतहंनरनारी॥भंजेउरामसंभुधनुभा

री॥दोहा॥ बंदीमागधसूतगनबिरदबदहिंमतिधीर॥करहिंनिछावरिलोगसबह १०७

यगयधनमनिचीर॥२६२॥झांझिमृदंगसंखसहनाई॥भेरिढोलदुंदुभीसुहाई॥बा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जहि वजु बाजने सुहाए॥ जहँ तहँ जुवतिन्ह मंगल गाए॥ सखिन्ह सहित हरषी अति रानी
सूखत धान परा जनु पानी॥ जनक लहेउ सुष सोच विहाई॥ पैरत थके थाह जनु पाई॥
श्रीहत भए भूप धनु टूटे॥ जैसे देवस दीप छवि छूटे॥ सीय सुषहि वरनिय केहि भांती॥ ज
नु चातकी पाइ जल स्वाती॥ रामहि लषन विलोकहि कैसे॥ ससिहि चकोर किसोरकु जैसे॥ स
तानंद तव आयसु दीन्हा॥ सीता गमन राम पहि कीन्हा॥ दोहा॥ संग सषी सुंदर च
तुर गावहि मंगलचार॥ गवनी वाल मराल गति सुषमा अंग अपार॥२६३॥ सषिन्ह मध्य सि
य सोहति कैसी॥ छविगन मध्य महाछवि जैसी॥ कर सरोज जयमाल सुहाई॥ विश्व विजय
सोभा जेहि छाई॥ तन सकोच मन परम उछाहू॥ गूढ प्रेम लषि परइ न काहू॥ जाइ समीप रा
म छवि देषी॥ रहि जनु कुंअरि चित्र अवरेषी॥ चतुर सषी लषि कहा वुझाई॥ पहिरावहु ज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
१०८ यमालसुहाई॥सुनतजुगलकरमालउठाई॥प्रेमविवसपहिराउनजाई॥सोहतजनुजु
गजलजसनाला॥ससिहिसभीतदेतजयमाला॥गावहिछविअवलोकिसहेली॥सिय
जयमालरामउरमेली॥सोरठा॥ रघुवरउरजयमालदेखिदेववरषहिसुमन॥सकुचेस
कलभुआलजनुविलोकिरविकुमुदगन॥२६४॥पुरअरुव्योमवाजनेवाजे॥खलभएम
लिनसाधुसवराजे॥सुरकिन्नरनरनागमुनीसा॥जयजयजयकहिदेहिअसीसा॥नाचहि ना
गावहिविवुधवधूटी॥वारवारकुसुमावलिछूटी॥जहंतहंविप्रवेदधुनिकरहीं॥वंदीवि
रदावलिउच्चरहीं॥महिपातालव्योमजसव्यापा॥रामवरीसियभंजेउचापा॥करहि
आरतीपुरनरनारी॥देहिनिछावरिवित्तविसारी॥सोहतिसीयरामकैजोरी॥छविसिंगारु
मनहुइकठोरी॥सखीकहहिप्रभुपदगहुसीता॥करतिनचरनपरसअतिभीता॥दोहा १०८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गौतमतियगतिसुरतिकरिनहिंपरसतिपगपानि॥ हियहसेरघुबंसमनिप्रीतिअलौ
किकजानि॥२६५॥ नवसियदेषिभूपअभिलाषे॥ कूरकपूतमूढमनमाषे॥ उठिउठि
पहिरिसनाहअभागे॥ जहँतहँगालबजावनलागे॥ लेहुछिनाइसीयकहकोऊ॥ ध
रिबाधहुन्रपबालकदोऊ॥ तोरेधनुषचाडनहिंसरई॥ जीअततहमहिकुँअरिकोब
रई॥ जौंबिदेहकछुकरइसहाई॥ जीतहुसमरसहितदोउभाई॥ साधुभूपबोलेसुनि
बानी॥ राजसमाजहिलाजलजानी॥ बलप्रतापबीरतावडाई॥ नाकपिनाकहिसंग
सिधाई॥ सोइसूरताकिअबकहुपाई॥ असिबुधितौबिधिमुहमसिलाई॥ दोहा॥ दे
षहुरामहिनयनभरितजिइरषामदमोह॥ लषनरोषपावकप्रबलजानिसलभज
निहोहु॥२६६॥ बैनतेयबलिजिमिचहकागू॥ जिमिससचहैनागअरिभागू॥ जिमि

बा॰ १०८९ चहहु कुसल अकारन कोही॥ सब संपदा चहै सिवद्रोही॥ लोभु लोलुक लि कीरति
चहई॥ अकलंकता कि कामी लहई॥ हरिपद बिमुख सुगति जिमि चाहा॥ न स तुम्हार
लालच नरनाहा॥ कोलाहल सुनि सीय सकानी॥ सखी लवाइ गई जहँ रानी॥ राम॰
सुभाय चले गुरु पाहीं॥ सिय सनेहु बरनत मन माहीं॥ रानिन्ह सहित सोचबस सी
या॥ अब धौं बिधिहि काह करनीया॥ भूप बचन सुनि इत उत तकहीं॥ लषन राम
डर बोलि न सकहीं॥ दोहा॥ अरुन नयन भ्रकुटी कुटिल चितवत न्रपन्ह सको
प॥ मनहु मत्त गजगन निरखि सिंह किसोरहि चोप॥२६७॥ खरभर देखि बिकल नर
नारी॥ सब मिलि देहि महीपन्ह गारी॥ तेहि अवसर सुनि सिव धनु भंगा॥ आएउ १०८९
भ्रगुकुल कमल पतंगा॥ देषि महीप सकल सकुचाने॥ बाज झपट जनु लवालु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

काने॥ गौरसरीरभूतिभलिभ्राजा॥ भालबिसालत्रिपुंडबिराजा॥ सीसजटाससिबद
नसुहावा॥ रिसबसकछुकअरुनहोइआवा॥ भृकुटीकुटिलनयनरिसराते॥ सहजहु
चितवतमनहुरिसाते॥ बृषभकंधउरबाहुबिसाला॥ चारुजनेउमालमृगछाला॥
कटिमुनिबसनतूनदुइबाँधे॥ धनुसरकरकुठारकलकाँधे॥ दोहा॥ सांतबेषकरनी
कठिनबरनिनजाइसरूप॥ धरिमुनितनुजनुबीररसआयउजहँसबभूप॥ २६८॥ देख
तभृगुपतिबेषुकराला॥ उठेसकलभयबिकलभुआला॥ पितुसमेतकहिकहिनिज
नामा॥ लगेकरनसबदंडप्रनामा॥ जेहिसुभायचितवहिंहितजानी॥ सोजानैजनुआ
इखुटानी॥ जनकबहोरिआइसिरुनावा॥ सीयबुलाइप्रनामकरावा॥ आसिषदीन्हसखी
हरषानी॥ निजसमाजलैगईसयानी॥ बिस्वामित्रमिलेपुनिआई॥ पदसरोजमेले

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दोउभाई॥ रामलषनदसरथकेढोटा॥ दीन्हिअसीसदेषिभलजोटा॥ रामहिचित
बा० ११० इरहेथकिलोचन॥ रूपअपारमारमदमोचन॥ दोहा॥ः बहुरिबिलोकिबिदेहसनक
हहुकाहेअतिभीर॥ पूछतजानिअजानजिमिब्यापेउकोपसरीर॥२६८॥ समाचार
कहिजनकसुनाए॥ जेहिकारनमहीपसबआए॥ सुनतबचनफिरिअनतनिहारे॥ दे
षेचापषंडमहिडारे॥ अतिरिसबोलेबचनकठोरा॥ कहुजडजनकधनुषकेतोरा॥
बेगिदिषाउमूढनतआज॥ उलटौंमहिजहंलगिसमाज॥ अतिडरउतरुदेतनृप
नाहीं॥ कुटिलभूपहरषेमनमाहीं॥ सुरमुनिनागसिद्धनरनारी॥ सोचहिसकलत्रा
सउरभारी॥ मनपछितातिसीयमहतारी॥ बिधिसवारिसबबातबिगारी॥ भृगुपतिक ११०
रसुभाउसुनिसीता॥ अरधनिमेषकलपसमबीता॥ दोहा॥ः सभयबिलोकेलोगसब

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ज्ञानिजानकीभोर॥हृदयनहरषबिषादकछुबोलेश्रीरघुबीर॥२७०॥नाथसंभु
धनुभंजनिहारा॥होइहिकोउएकदासतुम्हारा॥आयसुकाहकहियकिनमोही॥सु
निरिसाइबोलेमुनिकोही॥सेवकसोजोकरैसेवकाई॥अरिकरनीकरिकरियलराई॥सुन
हुरामजेहिसिवधनुतोरा॥सहसबाहुसमसोरिपुमोरा॥सोबिलगाउबिहाइसमाजा॥
नतमारेजैहहिंसबराजा॥सुनिमुनिबचनलषनमुसकाने॥बोलेपरसुधरहिअपमा
ने॥बहुधनुहींतोरीलरिकाई॥कबहुनअसिरिसकीन्हगुसाई॥यहधनुपरममताके
हिहेत॥सुनिरिसाइकहभृगुपतिकेत॥दोहा॥रेनृपबालककालबसबोलततोहिन
संभार॥धनुहींसमत्रिपुरारिधनुबिदितसकलसंसार॥२७१॥लषनकहाहसिहमरेजा
ना॥सुनहुदेवसबधनुषसमाना॥काछतिलाभुजूनधनुतोरे॥देषारामनयेकेभोरे

रा०
१११
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू ॥ मुनि बिनु काज करिय कत रोसू ॥ बोले चितै परसु की
ओरा ॥ रे सठ सुनेहि सुभाव न मोरा ॥ बालक बोलि बधौं नहि तोही ॥ केवल मुनि जड जा
नहि मोही ॥ बाल ब्रह्मचारी अति कोही ॥ बिश्व बिदित छत्री कुल द्रोही ॥ भुजबल भूमि भू
प बिनु कीन्ही ॥ बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥ सहसबाहु भुज छेदनिहारा ॥ परसु बिलो
कु महीपकुमारा ॥ दोहा ॥ मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीपकिसोर ॥ गर्भन के अर्भ च
क दलन परसु मोर अति घोर ॥ २७२ ॥ बिहसि लषनु बोले मृदु बानी ॥ अहो मुनीसु
महाभट मानी ॥ पुनि पुनि मोहि दिषाव कुठारु ॥ चहत उडावन फूंकि पहारु ॥ इहां
कुम्हडबतिया कोउ नाहीं ॥ जे तरजनी देषि मरि जाहीं ॥ देषि कुठार सरासन बाना ॥
मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥ भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी ॥ जो कछु कहहु स १११

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हौंसिरोकी॥ सुरमहिसुरहरिजनअरुगाई॥ हमरेकुलइन्हपरनसुराई॥ वधेपापअ
पकीरतिहारे॥ मारतहूंपापरियतुम्हारे॥ कोटिकुलिससमवचनतुम्हारा॥ व्यर्थध
रहुधनुवानकुठारा॥ दोहा॥ जोविलोकिअनुचितकहेउछमहुमहामुनिधीर॥ सु
निसरोषभृगुवंसमनिबोलेगिरागंभीर॥ २७३॥ कौसिकसुनहुमंदयहबालकु॥ कुटि
लकालवसनिजकुलघालकु॥ भानुवंसराकेसकलंकू॥ निपटनिंकुसअवुधअसंकू॥
कालकवलहोइहिछनमाहीं॥ कहौंपुकारिखोरिमोहिनाहीं॥ तुम्हहटकहुजौं
चहहुउवारा॥ कहिप्रतापवलुरोषुहमारा॥ लषनकहेउमुनिसुजसतुम्हारा॥ तु
म्हहिअछतकोवरनैपारा॥ अपनेमुषतुम्हआपनिकरनी॥ वारअनेकभांतिवहुव
रनी॥ नहिसंतोषतौपुनिकछुकहहू॥ जनिरिसरोकिदुसहदुषसहहू॥ वीरव्रतीतु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ११२ सुधीरसअछोभा॥गारीदेतनपावहुसोभा॥दोहा॥ःसूरसमरकरनीकरहिकहिनजना
वहिंआपु॥विद्यमानरनपाइरिपुकायरकरहिप्रलापु॥२७४॥तुम्हतौकालहांकज
नुलावा॥वारवारमोहिलागिवुलावा॥सुनतलषनकेवचनकठोरा॥परसुसुधारिधरे
उकरघोरा॥अवजनिदेउदोसमोहिलोगू॥कटुवादीवालकवधजोगू॥वालविलोकिव
हुतमैवांचा॥अवयहमरनिहारभासांचा॥कौसिककहाछमियअपराधू॥वालदोषगुन
गनहिनसाधू॥करकुठारमैअकरनकोही॥आगेंअपराधीगुरद्रोही॥उतरदेतछाडौं
विनुमारे॥केवलकौसिकसीलतुम्हारे॥नतएहिकाटिकुठारकठोरे॥गुरहिउरिनहो
तेउंश्रमथोरे॥दोहा॥ःगाधिसूनुकहहृदयहसिमुनिहिहरियरउसूझ॥अयमयषां ११२
डनऊषमयअजहुनवूझअवूझ॥२७५॥कहेउलषनमुनिसीलतुम्हारा॥कोनहिजा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न विदित संसारा ॥ माता पितहि उरिन भए नीके ॥ गुर रिन रहा सोच बड जी के ॥ सो जनु हमरे
हि माथे काढा ॥ दिन चलि गए ब्याज बड बाढा ॥ अब आनिए ब्यवहरिया बोली ॥ तुरत दे
उँ मै थैली खोली ॥ सुनि कटु वचन कुठार सुधारा ॥ हाय हाय सब सभा पुकारा ॥ भृगुवर पर
सु दिखावहु मोही ॥ विप्र विचारि बचौं नृपद्रोही ॥ मिले न कबहु सुभट रन गाढे ॥ द्विज देवता
घरही के बाढे ॥ अनुचित कहि सब लोग पुकारे ॥ रघुपति सयननि लखन निवारे ॥ दोहा ॥
लखन उतर आहुति सरिस भृगुवर कोप कृसानु ॥ बढत देखि जल सम बचन बोले रघुकुल
भानु ॥ २७६ ॥ नाथ करहु बालक पर छोहू ॥ सूध दूधमुख करिय न कोहू ॥ जौं पै प्रभु प्रभाव कछु
जाना ॥ तौ कि बराबरि करत अयाना ॥ जौं लरिका कछु अचगरि करहीं ॥ गुर पितु मातु मोद म
न भरहीं ॥ करिय कृपा सिसु सेवक जानी ॥ तुम्ह सम सील धीर मुनि ज्ञानी ॥ राम बचन सुनि क

वा०
११३ छुकजुडाने॥ कहि कछु लषन बहुरि मुसकाने॥ हसत देषि नष सिष रिस ब्यापी॥ राम तो
र भ्राता बड पापी॥ गौर सरीर स्याम मन माहीं॥ कालकूट मुष पय मुष नाहीं॥ सहज टेढ
अनुहरै न तोही॥ नीचु मीचु सम देष न मोही॥ दोहा॥ लषन कहेउ हसि सुनहु मुनि क्रो
ध पाप कर मूल॥ जेहि बस जन अनुचित करहिं होहिं बिस्व प्रतिकूल॥ २७७॥ मैं तुम्हार अ
नुचर मुनिराया॥ परिहरि कोप करिय अब दाया॥ टूट चाप नहि जुरहि रिसाने॥ बैठिय
होइहहिं पाय पिराने॥ जो अति प्रिय तौ करिय उपाई॥ जोरिय कोउ बड गुनी बुलाई॥
बोलत लषनहि जनकु डराहीं॥ मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं॥ थर थर कांपहिं पुर न
र नारी॥ छोट कुमार षोट अति भारी॥ भृगुपति सुनि सुनि निर्भय बानी॥ रिस तन जरै होइ ११३
बल हानी॥ बोले रामहि देइ निहोरा॥ बचौं बिचारि बंधु लघु तोरा॥ मन मलीन तन सुंदर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कैसे॥ विषरसभराकनकघटजैसे॥ दोहा॥ सुनिलछिमनविहसेवहुरिनयननतेरेराम
गुरसमीपगवनेवहुरिपरिहरिवानीवाम॥ २७८॥ अतिविनीतमृदुसीतलवानी॥ वोले
रामजोरिजुगपानी॥ सुनहुनाथतुम्हसहजसुजाना॥ वालककवचनकरियनहिकाना॥
वररैवालकएकसुभाउ॥ इन्हहिनविदुषविदूषहिकाउ॥ तेहिनाहीकछुकाजविगा
रा॥ अपराधीमैनाथतुम्हारा॥ कृपाकोपवधुवंधुगुसांई॥ मोपरकरियदासकीनाई॥ क
हियवेगिजेहिविधिरिसजाई॥ मुनिनायकसोइकरउंउपाई॥ कहमुनिरामजाइरिसिकै
से॥ अजहुअनुजतवचितवअनैसे॥ एहिकेकंठकुठारुनदीन्हा॥ तौमैकाहकोपकरि
कीन्हा॥ दोहा॥ गर्भस्रवहिअवनिपरवनिसुनिकुठारगतिघोर॥ परसुअछतदेषौं
जियनवैरीभूपकिसोर॥ २७९॥ वहैनहाथदहैरिसछाती॥ भाकुठारकुंठितनृपघाती

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० ११४

भरेउ वाम विधि फिरेउ सुभाउ॥ मोरे हृदय कृपा कसि काउ॥ आजु दया दुष दुसह सहा
वा॥ सुनि सौमित्रि विहसि सिरु नावा॥ वाउ कृपा मूरति अनुकूला॥ वोलत वचन झरत ज
नु फूला॥ जौं पै कृपा जरहिं मुनि गाता॥ क्रोध भए तन राष विधाता॥ देषु जनक हठि वालकु
येहू॥ कीन्ह चहत जड जमपुर गेहू॥ वेगि करहु किन आंषिन्ह ओटा॥ देषत छोट षोट
नृप ढोटा॥ विहसे लषन कहा मन माहीं॥ मूंदे आंषि कतहु कोउ नाहीं॥ दोहा॥ प
रसुराम तव राम प्रति वोले उर अति क्रोध॥ संभु सरासन तोरि सठ करसि हमार प्रवोध
२८०॥ वंधु कहै कटु संमत तोरे॥ तू छल विनय करसि कर जोरे॥ करु परितोष मोर संग्रामा॥
नाहित छाडु कहाउव रामा॥ छल तजि करहि समरु सिवद्रोही॥ वंधु सहित न त मारौं
तोही॥ भृगुपति वकहि कुठार उठाए॥ मन मुसुकाहि राम सिर नाए॥ गुनह लषन क

११४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रहुममपररोषू।।कततुम्हसुधाइहुतेवडदोषू।।टेढजानिसंकासवकाहू।।वक्रचंद्रमहिग्रस
सइनराहू।।रामकहेउरिसतजियमुनीसा।।करकुठारआगेयहसीसा।।जेहिरिसजा
इकरियसोइस्वामी।।मोहिजानियआपनअनुगामी।।दोहा।।प्रभुहिसेवकहिसम
रकसतजियविप्रवररोस।।वेषविलोकिकहेसिकछुवालकहूनहिदोस।।२८१।।देखि
कुठारवानधनुधारी।।भइलरिकहिरिसुवीरविचारी।।नामुजानैपैतुम्हहिनचीन्हा।
वंससुभावउतरुतेहुदीन्हा।।जौतुम्हअवतेहुमुनिकीनाईं।।पदरजसिरसिसुधरतगु
साईं।।छमहुचूकअनजानतकेरी।।चहियविप्रउरकृपाघनेरी।।हमहितुम्हहि
सरिवरिकसिनाथा।।कहहुनकहांचरनकहमाथा।।राममात्रलघुनामहमारा।।
परसुसहितवडनामतुम्हारा।।देवएकगुनधनुषहमारे।।नवगुनपरमपुनीततुम्हा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० रे॥ सवप्रकारहमतुम्हसनहारे॥ छमहुविप्रअपराधहमारे॥ दोहा॥: वारवारमुनिवि
११५ प्रवरकहारामसनराम॥ वोलेभृगुपतिसरुषहसितहुँवंधुसमवाम॥२८४॥ निपट
हिंद्विजकरिजानहिमोही॥ मैजसविप्रसुनावौंतोही॥ चापस्रुवासरआहुतिजानू॥
कोपमोरअतिघोरकृसानू॥ समिधिसेनचतुरंगसुहाई॥ महामहीपभएपसुआई॥
मैएहिपरसुकाटिवलिदीन्हे॥ समरजग्यजगकोटिन्हकीन्हे॥ मोरप्रभाउविदितन
हितोरे॥ वोलसिनिदरिविप्रकेभोरे॥ भंजेउचापुदापुवडवाढा॥ अहमितिमनहुजीति
जगठाढा॥ रामकहामुनिकहहुविचारी॥ रिसअतिवडिलघुचूकहमारी॥ छुअतहि
टूटपिनाकपुराना॥ मैकेहिहेतुकरौंअभिमाना॥ दोहा॥: जौहमनिदरहिविप्रवदि ११५
सत्यसुनहुभृगुनाथ॥ तौअसकोजगसुभटजेहिभयवसनावहिमाथ॥२८५॥ देव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दनुजभूपतिभटनाना॥समबलअधिकहोउबलवाना॥जौंरनहमहिपचारैकोउ॥ल
रहिंसुखेनकालकिनहोउ॥छत्रीतनुधरिसमरसकाना॥कुलकलंकतेहिपावरआना॥
कहौंसुभाउनकुलहिप्रसंसी॥कालहुडरहिनरनरघुवंसी॥विप्रवंसकैअसिप्रभुताई॥
अभयहोइजोतुम्हहिडेराई॥सुनिमृदुगूढवचनरघुपतिके॥उघरेपटलपरसुधरमति
के॥राम रमापतिकरधनुलेहू॥खैंचहुमिटैमोरसंदेहू॥देतचापआपहिचलिगयउ॥
परसुराममनविसमयभयउ॥दोहा॥ःजानारामप्रभाउतवपुलकप्रफुल्लितगात
त जोरिपानिवोलेवचनहृदयनप्रेमसमात॥२८४॥जयरघुवंसवनजवनभानू॥गहन
दनुजकुलदहनकृसानू॥जयसुरविप्रधेनुहितकारी॥जयमदमोहकोहभ्रमहारी॥
विनयसीलकरुनागुनसागर॥जयतिवचनरचनाअतिनागर॥सेवकसुषदसुभगस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० ११६

व अंगा॥ जय सरीर छबि कोटि अनंगा॥ करौं कहाँ मुष एक प्रसंसा॥ जय महेस मानस्म
नहंसा॥ अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता॥ छमहु छमा मंदिर दोउ भ्राता॥ कहि जय जय ज
य रघुकुल केतू॥ भृगुपति गए बनहि तप हेतू॥ अपभय कुटिल महीप डेराने॥ जहँ
तहँ कायर गवहिं पराने॥ दोहा॥ देवन्ह दीन्ही दुंदुभी प्रभु पर बरषहिं फूल॥ हरषे पु
र नर नारि सब मिटी मोहमय सूल॥ २८५॥ अति गहगहे बाजने बाजे॥ सबहिं मनोह
र मंगल साजे॥ जूथ जूथ मिलि सुमुषि सुनयनी॥ करहिं गान कल कोकिल बयनी॥ सु
षु बिदेह कर बरनि न जाई॥ जन्म दरिद्र मनहु निधि पाई॥ बिगत त्रास भइ सीय सुषारी॥ भ
जनु बिधु उदय चकोर कुमारी॥ जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा॥ प्रभु प्रसाद धनु ११६
भंजेउ रामा॥ मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहु भाई॥ अब जो उचित सो कहिय गोसाँई॥

कहहु मुनि सुनु नरनाथ प्रवीना॥ रहा विवाहु चाप आधीना॥ टूटत हीं धनु भयउ विवा
हू॥ सुर नर नाग विदित सव काहू॥ दोहा॥ तदपि जाइ तुम्ह करहु अव जथा वंस व्यवहा
रु॥ वूझि विप्र कुलवृद्ध गुरु वेद विदित आचारु॥ २८६॥ दूत अवधपुर पठवहु जाई॥ आ
नहिं नृप दसरथहि वुलाई॥ मुदित राय कहि भलेहिं कृपाला॥ पठए दूत वोलि तेहि
काला॥ वहुरि महाजन सकल वुलाए॥ आइ सवनि सादर सिर नाए॥ हाट वाट मंदि
र सुरवासा॥ नगर सवारहु चारिहु पासा॥ हरषि चले निज निज गृह आए॥ पुनि परिचा
रक वोलि पठाए॥ रचहु विचित्र वितान वनाई॥ सिर धरि वचन चले सचु पाई॥ पठए
वोलि गुनी तिन्ह नाना॥ जे वितान विधि कुसल सुजाना॥ विधिहि वंदि तिन्ह कीन्ह
आरंभा॥ विरचे कनक कदलि के षंभा॥ दोहा॥ हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
११८

केभूल॥रचनादेषिबिचित्रअतिमनबिरंचिकरभूल॥२८७॥बेनुहरितमनिमयसबकी
न्हे॥सरलसपरबपरहिंनहिंचीन्हे॥कनककलितअहिबेलिबनाई॥लषिनहिंप
रैसपरनसुहाई॥तेहिकेरचिपचिबंधबनाए॥बिचबिचमुकुतादामसुहाए॥मानिक
मरकतकुलिसपिरोजा॥चीरकोरिपचिरचेसरोजा॥किएभृंगबहुरंगबिहंगा॥गुंजहिं
कूजहिंपवनप्रसंगा॥सुरप्रतिमाषंभन्हिगढिकाढी॥मंगलद्रब्यलिएसबठाढी॥
चौकेंभांतिअनेकपुराईं॥सिंधुरमनिमयसहजसुहाईं॥दोहा॥:सौरभपल्लवसुभग
सुठिकिएनीलमनिकोरि॥हेमबौरिमरकतघवरिलसतिपाटमयडोरि॥२८८॥र
चेरुचिरबरबंदनिवारे॥मनहुंमनोभवफंदसंवारे॥मंगलकलसअनेकबनाए॥ध्व
जपताकपटचमरसुहाए॥दीपमनोहरमनिमयनाना॥जाइनबरनिबिचित्रबिता ११८

ना॥जेहिंमंडपदुलहिनिवैदेही॥सोवरनैअसिमतिकविकेही॥दूलहरामरूपगुन
सागर॥सोवितानतिहुंलोकउजागर॥जनकभवनकैसोभाजैसी॥गृहगृहप्रतिपुरदे
षियतैसी॥जेहितिरहुतितेहिसमयनिहारी॥तेहिलघुलागभुवनदसचारी॥जोसं
पदानीचग्रहसोहा॥सोविलोकिसुरनायकमोहा॥दोहा॥ वसैनगरजेहिलछि
करिकपटनारिवरवेषु॥तेहिपुरकीसोभाकहतसकुचहिसारदसेषु॥२८९॥पहुंचे
दूतरामपुरपावन॥हरषेनगरविलोकिसुहावन॥भूपद्वारतिन्हखवरिजनाई॥दस
रथनृपसुनिलिएबोलाई॥करिप्रनामतिन्हपातीदीन्ही॥मुदितमहीपआपुउ
ठिलीन्ही॥वारिविलोचनवांचतपाती॥पुलकगातआईभरिछाती॥रामलषनुउ
रवसचीठी॥रहिगएकहतनखाटीमीठी॥पुनिधरिधीरपत्रिकावांची॥हरषीसभा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० बातसुनिसाषी॥ षेलतरहेतहाँसुधिपाई॥ आएभरतसहितहितभाई॥ पूछतअतिस
११८ नेहसकुचाई॥ तातकहाँतेपातीआई॥ दोहा॥ कुसलप्रानप्रियवंधुदोउ अहहिंकह
हुकेहिदेस॥ सुनिसनेहसानेवचनवाचीवहुरिनरेस॥ २९०॥ सुनिपातीपुलकेदोउ
भ्राता॥ अधिकसनेहसमाततनगाता॥ प्रीतिपुनीतभरतकैदेषी॥ सकलसभासुषलहे
उविसेषी॥ तवनृपदूतनिकटवैठारे॥ मधुरमनोहरवचनउचारे॥ भैयाकहहुकुस
लदोउवारे॥ तुम्हनीकेंनिजनयननिहारे॥ स्यामलगौरधरेंधनुभाथा॥ वयकिसोर
कौसिकमुनिसाथा॥ पहिचानहुतुम्हकहहुसुभाउ॥ प्रेमविवसपुनिपुनिकहराउ॥
जादिनतेमुनिगएलवाई॥ तवतेंआजुसाचिसुधिपाई॥ कहहुविदेहकवनिविधिजा
ने॥ सुनिप्रियवचनदूतमुसकाने॥ दोहा॥ सुनहुमहीपतिमुकुटमनितुम्हसमधन्यन ११८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोउ॥ रामुलषनजाकेतनयविश्वविभूषनदोउ॥२९१॥ पूछनजोगनतनयतुम्हारे
पुरुषसिंहतिहुपुरउजिआरे॥ जिन्हकेजसप्रतापकेआगे॥ ससिमलीनरविसीतलला
गे॥ तिन्हकहँकहियनाथकिमिचीन्हे॥ देषियरविकिदीपकरलीन्हे॥ सीयस्वयंवर
भूपअनेका॥ समिटेसुभटएकतेएका॥ संभुसरासनकाहुनटारा॥ हारेसकलवीरवरि
आरा॥ तीनिलोकमहँजेभटमानी॥ सभकैसकतिसंभुधनुभानी॥ सकइउठाइसरासु
रमेरू॥ सोउहियहारिगएउकरिफेरू॥ जेहिकौतुकसिवसैलउठावा॥ सोउतेहिसभा
पराभउपावा॥ दोहा॥ तहाँरामरघुवंसमनिसुनियमहामहिपाल॥ भंजेउचापप्रया
सविनुजिमिगजपंकजनाले॥२९२॥ सुनिसरोषभृगुनायकआए॥ वहुतभाँतितिन्ह
आँषिदेषाए॥ देषिरामवलुनिजधनुदीन्हा॥ करिवहुविनयगवनवनकीन्हा॥ रा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
११८ जनरामअतुलबलजैसे॥तेजनिधानलषनपुनितैसे॥कंपहिभूपविलोकतजाके
जिमिगजहरिकिसोरकेताके॥देवदेषिनवबालकदोउ॥अवनआंषितरआवत
कोउ॥दूतबचनरचनाप्रियलागी॥प्रेमप्रतापवीररसपागी॥सभासमेतराउअ
नुरागे॥सबमिलिदेननिछावरिलागे॥कहिअनीतितेमूंदहिकाना॥धर्मुविचा
रसबहिसुषमाना॥दोहा॥ःतबउठिभूपवसिष्ठकहँदइपत्रिकाजाइ॥कथासुनाई
गुरहिसबसादरदूतबोलाइ॥२८॥सुनिबोलेगुरअतिसुषपाई॥पुन्यपुरुषकहँ
महिसुषछाई॥जिमिसरितासागरमहँजाहीं॥जद्यपिताहिकामनानाहीं॥तिमिसु
षसंपतिविनाहिबोलाए॥धरमसीलपहिजाहिसुभाए॥तुम्हगुरविप्रधेनुसुरसेवी॥ ११८
तसिपुनीतकौसिल्यादेवी॥सुकृतीतुम्हसमानजगमाहीं॥भएउनहैकोउहोनें॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाहीं॥ तुम्हते अधिक पुन्य वड काके॥ राजन राम सरिस सुत जाके॥ वीर विनीत धर्म
व्रत धारी॥ गुन सागर वर वालक चारी॥ तुम्ह कहँ सर्व काल कल्याना॥ सजहु वरात
वजाउ निसाना॥ दोहा॥ चलहु वेगि सुनि गुर वचन भलेहि नाथ सिर नाउ॥ भूपति
गवने भवन तव दूतन्ह वास देवाउ॥ २९४॥ राजा सव रनिवास वुलाई॥ जनक पत्रिका
वाचि सुनाई॥ सुनि संदेस सकल हरषानी॥ अपर कथा सव भूप वषानी॥ प्रेम प्रफु-
ल्लित राजहि रानी॥ मनहु सिषिनि सुनि वारिद वानी॥ मुदित असीस देहि गुर नारी॥
अति आनंद मगन महतारी॥ लेहि परस्पर अति प्रिय पाती॥ हृदय लगाइ जुडा-
वहि छाती॥ राम लषन कै कीरति करनी॥ वारहि वार भूपवर वरनी॥ मुनि प्रसाद क-
हि द्वार सिधारे॥ रानिन्ह तव महिदेव वुलाए॥ दिए दान आनंद समेता॥ चले विप्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० वरष्मा सिय देत॥ सोरठा॥: जाचक लिए हँकारि दीन्हि निछावरि कोटि विधि॥ चि
१२० रजीवहु सुत चारि चक्रवर्ती दसरथ्थ के॥२९५॥ कहत चले पहिरे पट नाना॥ हरषि
जे गहगहे निसाना॥ समाचार सब लोगन्ह पाए॥ लागे घर घर होने वधाये॥ भुवन चा
रि दस भरेउ उछाहू॥ जनकसुता रघुवीर विवाहू॥ सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे॥ म
ग गृह गली सवारन लागे॥ जद्यपि अवध सदैव सोहावनि॥ रामपुरी मंगलमय पाव
नि॥ तदपि प्रीति कै रीति सुहाई॥ मंगल रचना रचीव नाई॥ ध्वज पताक पट चामर चा
रु॥ छावा परम विचित्र वजारू॥ कनक कलस तोरन मनि जाला॥ हरद दूव दधि अछ
त माला॥ दोहा॥: मंगलमय निज निज भवन लोगन्ह रचे वनाउ॥ वीथी सींची चतुर १२०
सम चौके चारु पुराउ॥२९६॥ जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि॥ सजि नव सप्त सकल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लदुतिदामिनि॥ विधुवदनीम्रगसावकलोचनि॥ निजसरूपरतिमानविमोचनि॥ गा
वहिंमंगलमंजुलवानी॥ सुनिकलरवकलँजानी॥ भूपभवनकिमिजाइवखाना॥ वि कंठल
स्वविमोहनरचेउविताना॥ मंगलद्रव्यमनोहरनाना॥ राजतवाजतविपुलनिसाना॥
कतहुविरदवंदीउच्चरहीं॥ कतहुवेदधुनिभूसुरकरहीं॥ गावहिंसुंदरिमंगलगी
ता॥ लैलैनामरामअरुसीता॥ वहुतउछाहुभवनअतिथोरा॥ मानहुउमगिचला
चहुओरा॥ दोहा॥ सोभादसरथभवनकेकोकविवरनैपार॥ जहांसकलसुरसीसमनि
रामलीन्हअवतार॥ २९७॥ भूपभरतपुनिलिएवुलाई॥ हयगयस्यंदनसाजहुजा
ई॥ चलहुवेगिरघुवीरवराता॥ सुनतपुलकपूरेदोउभ्राता॥ भरतसकलसाहनीवुला
ए॥ आयसुदीन्हमुदितउठिधाए॥ रचिरुचिजीनतुरगतिन्हसाजे॥ वरनवरनवरवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
१२१

जिबिराजे॥सुभगसकलसुठिचंचलकरनी॥अयइवजरतधरतपगधरनी॥नानाजाति
नजाहिंबषाने॥निदरिपवनजनुचहतउडाने॥तिन्हसबछैलभएअसवारा॥भरत
सरिसबयराजकुमारा॥सबसुंदरसबभूषनधारी॥करसरचापतूनकटिभारी॥दोहा॥
छरेछबीलेछैलसबसूरसुजाननबीनि॥जुगपदचरअसवारप्रतिजेअसिकलाप्र
बीन॥२९८॥बांधेबिरदबीररनगाढे॥निकसिभएपुरबाहिरठाढे॥फेरहिंचतुरतुरग
गतिनाना॥हरषहिंसुनिसुनिपनवनिसाना॥रथसारथिन्हबिचित्रबनाए॥ध्वजप
ताकमनिभूषनलाए॥चवरचारुकिंकिनिधुनिकरहीं॥भानुजानुसोभाअपहरहीं॥
सावकरनअगनितहयहोते॥तेतिन्हरथिन्हसारथिन्हजोते॥सुंदरसकलअलंक्र
तसोहे॥जिन्हहिबिलोकतमुनिमनमोहे॥जेजलचलहिंथलहिकीनाईं॥टापन १२१

वृडवेगगत्र्यधिकाई॥ अस्त्र शस्त्र सब साज बनाई॥ रथी सारथिन्ह लिए वोलाई॥ दोहा
चढिचढिरथवाहिरनगरलागीजुरनवरात॥ होतसगुनसुंदरसवनिजोजेहिकार
ज्जात॥२९८॥ कलितकरिवरन्हिपरीअवारी॥ कहिनजाइजेहिभाँतिसवारी॥
चलेमत्तगजघंटविराजी॥ मनहुसुभगसावनघनराजी॥ वाहनअपरअनेकविधा
ना॥ सिविकासुभगसुखासनजाना॥ तिन्हचढिचलेविप्रवरवृंदा॥ जनुतनुधरेस
कलश्रुतिछंदा॥ मागधसूतवंदिगुनगायक॥ चलेजानचढिजोजेहिलायक॥ वेसर
उंटवृषभवहुजाती॥ चलेवस्तुभरिअगनितभाँती॥ कोटिन्हकाँवरिचलेकहारा॥ वि
विधिवस्तुकोवरनैपारा॥ चलेसकलसेवकसमुदाई॥ निजनिजसाजसमाजवनाई॥
दोहा॥ सवकेउरनिर्भरहरखुपूरितपुलकसरीर॥ कवहिदेखवेनयनभरिरामलख

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा°
१२२

नं

नदोउवीर॥३००॥गरजहिंगजघंटाधुनिघोरा॥रथरवबाजिहिंसचहुओरा॥निदरिघ
नहिघुम्मरहिंनिसाना॥निजपराइकछुसुनियनकाना॥महाभीरभूपतिकेद्वारे॥रजहो
इजाइपषानपवारे॥चढीअटारिन्हदेखहिंनारी॥लिएआरतीमंगलथारी॥गावहिं
गीतमनोहरनाना॥अतिआंदनजाइवषाना॥तवसुमंत्रदुइस्यंदनसाजी॥जोतेरवि
हयनिंदकवाजी॥दोउरथरुचिरभूपपहिंआने॥नहिंसारदपहिंजाहिंवषाने॥राजस
माजएकरथसाजा॥दूसरतेजपुंजलषिराजा॥दोहा॥तेहिंरथरुचिरवसिष्ठकहुंहरषि
चढाइनरेसु॥आपुचढेउस्यंदनसुमिरिहरगुरगौरिगनेसु॥३०१॥सहितवसिष्ठसोह
नृपकैसे॥सुरगुरसंगपुरंदरजैसे॥करिकुलरीतिवेदविधिराउ॥देषिसवहिसवभांति
वनाउ॥सुमिरिरामगुरआयसुपाई॥चलेमहीपतिसंखवजाई॥हरषेविवुधविलोकि

१२२

बराता॥ बरषहिं सुमन सुमंगल दाता॥ भयउ कोलाहल हय गय गाजे॥ ब्योम बरात बाज
ने बाजे॥ सुर नर नारि सुमंगल गाईं॥ सरस राग बाजहिं सहनाईं॥ घंट घंटि धुनि बरनि न जा
हीं॥ सरव करहिं पाइक फहराहीं॥ करहिं बिदूषक कौतुक नाना॥ हास कुसल कल गान
सुजाना॥ दोहा॥ तुरग नचावहिं कुंवर बर अकनि मृदंग निसान॥ नागर नट चितवहिं
चकित डगहिं न ताल बंधान॥ ३०२॥ बनइ न बरनत बनी बराता॥ होहिं सगुन सुंदर सुभ
दाता॥ चारा चाषु बाम दिसि लेई॥ मनहु सकल मंगल कहि देई॥ दाहिन काग सुखेत सु
हावा॥ नकुल दरसु सब काहू पावा॥ सानुकूल बह त्रिबिध बयारी॥ सघट सबाल आव ब
र नारी॥ लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा॥ सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा॥ मृगमाला
फिरि दाहिन आई॥ मंगल गन जनु दीन्ह दिखाई॥ छेमकरी कह छेम बिसेषी॥ स्यामा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा०
१२३

वाम्हसुतरुपरदेषी॥सनमुषआउदधिअरुमीना॥करपुस्तकदुइविप्रप्रवीना॥दोहा
मंगलमयकल्यानमयअभिमतफलदातार॥जनुसवसाचेहोनहितभएसगुनए
कवार॥३०३॥मंगलसगुनसुगमसवताके॥सगुनब्रह्मसुंदरसुतजाके॥रामसरिस
वरदुलहिनिसीता॥समधीदसरथजनकपुनीता॥सुनिअसव्याहसगुनसवना
चे॥अवकीन्हेविरंचिहमसाचे॥एहिविधिकीन्हवरातपयाना॥हयगयगाजहिंह
नेनिसाना॥आवतजानिभानुकुलकेतू॥सरितन्हजनकवधायेसेतू॥वीचवीचवरवा
सवनाए॥सुरपुरसरिससंपदाछाए॥असनसयनवरवसनसुहाए॥पावहिंसव
निजनिजमनभाए॥नितनूतनसुषलषिअनकूले॥सकलवरातिन्हमंदिरभूले
॥दोहा॥ आवतजानिवरातवरसुनिगहगहेनिसान॥सजिगजरथपदचरतुरगलेन १२३
१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चलेउ भगवान ॥ ३०४ ॥ कनक कलस कल कोपर थारा ॥ भाजन ललित अनेक प्रकारा ॥
भरे सुधा सम सब पकवाने ॥ भाँति भाँति नहि जाहि बषाने ॥ फल अनेक बर बस्तु सुहाई ॥
हरषि भेट हित भूप पठाई ॥ भूषन बसन महामनि नाना ॥ बग मृग हय गय बहु
बिधि जाना ॥ मंगल सगुन सुगंध सुहाए ॥ बहुत भाँति महिपाल पठाए ॥ दधि चि
उरा उपहार अपारा ॥ भरि भरि काँवरि चले कहारा ॥ अगवानिन्ह जब दीषि बराता
उर आनंद पुलक भरे गाता ॥ देषि बनाव सहित अगवाना ॥ मुदित बराती हने नि
साना ॥ दोहा ॥ हरषि परसपर मिलन हित कछुक चले बगमेल ॥ जनु आनंद स
मुद्र दुइ मिलत बिहाइ सुबेल ॥ ३०५ ॥ बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहि ॥ मुदित देव दु
दुभी बजावहि ॥ बस्तु सकल राषी न्रप आगे ॥ बिनय कीन्हि तिन्ह अति अनुरागे ॥ प्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० १२५ मसमेत राय सब लीन्हा॥ भेंट कीस जाचक न दीन्हा॥ करि पूजा मान्यता बडाई॥ जन
वासे कहँ चले लवाई॥ वसन विचित्र पावडे परहीं॥ देखि धनद धन मद परिहरहीं॥
अति सुंदर दीन्हे उ जनवासा॥ जहँ सब कहँ सब भाँति सुपासा॥ जानी सिय बरात पु
र आई॥ कछु निज महिमा प्रगटि जनाई॥ हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई॥ भूप पहुन
ई करन पठाई॥ दोहा॥: सिधि सब सिय आयसु अकनि गई जहाँ जनवास॥ लिये सं
पदा सकल सुख सुरपुर भोग विलास॥ ३०६॥ निज निज वास विलोकि वराती॥ सुर सुख
सकल सुलभ सब भाँती॥ विभव भेद कछु को उ न जाना॥ सकल जनक कर करहिं ब
खाना॥ सिय महिमा रघुनायक जानी॥ हरषे हृदय हेतु पहिचानी॥ पितु आगम १२५
न सुनत दोउ भाई॥ हृदय न अति आनंद समाई॥ सकुचन कहि न सकत गुरु पाहीं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पितुदरसनलालचमनमाहीं॥ विस्वामित्रविनयबडिदेषी॥ उपजाउरसंतोषबिवि
सेषी॥ हरषिबंधुदोउहृदयलगाए॥ पुलकअंगअंबकजलछाए॥ चलेजहांदसर
थजनवासे॥ मनहुसरोवरतकेउपियासे॥ दोहा॥ भूपबिलोकेजबहिमुनिआवतसुतन्ह
समेत॥ उठेउहरषिसुषसिंधुमहुंचलेथाहसीलेत॥ ३०७॥ मुनिहिदंडवतकीन्हम
हीसा॥ बारबारपदरजधरिसीसा॥ कौसिकराउलिएउरलाई॥ कहिअसीसपूछीकु
सलाई॥ पुनिदंडवतकरतदोउभाई॥ देषिन्टपतिउरसुषनसमाई॥ सुतउरलाइ
दुसहदुषमेटे॥ म्रतकसरीरप्रानजनुभेंटे॥ पुनिवसिष्टपदसिरतिन्हनाए॥ प्रेममुदि
तगुरप्रभुअलाए॥ विप्रवृंदवंदेदुहुभाई॥ मनभावतीअसीसैंपाई॥ भरतसहानु
जकीन्हप्रनामा॥ लिएउठाइलाइउररामा॥ हरषेलषनदेषिदोउभ्राता॥ मिले

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा॰ १२५ प्रेमपरिपूरितगाता॥ दोहा॥ पुरजनपरिजनजातिजनजाचकमंत्रीमीत॥ मिलेजथावि-
धिसबहिप्रभुपरमकृपालविनीत॥३०८॥ रामहिदेखिबरातजुडानी॥ प्रीतिकिरीतिनजा-
तिबखानी॥ नृपसमीपसोहहिंसुतचारी॥ जनुधनुधरमादिकतनुधारी॥ सुतन्हसमेतद-
सरथहिदेखी॥ मुदितनगरनरनारिबिसेखी॥ सुमनबरषिसुरहनहिंनिसाना॥ नाकनटीना-
चहिकरिगाना॥ सतानंदअरुविप्रसचिवगन॥ मागधसूतविदुषबंदीजन॥ सहितबरात
राउसनमाना॥ आयसुमांगिफिरेअगवाना॥ प्रथमबरातलगनतेंआई॥ तातेपुरप्रमो-
दअधिकाई॥ ब्रह्मानंदलोगसबलहहीं॥ बढहुदिवसनिसिबिधिसनकहहीं॥ दोहा॥ रा-
मसीयसोभाअवधिसुकृतअवधिदोउराज॥ जहंतहंपुरजनकहहिंअसमिलिनरनारिस- १२५
माज॥३०९॥ जनकसुकृतमूरतिवैदेही॥ दसरथसुकृतरामधरेंदेही॥ इन्हसमकाहुनसि-

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वन्य वराधे॥ काहुं न लहेउ समान फल लाधे॥ उन्ह सम कोउ न भएउ जग माहीं॥ है नहि क
तहु होनेउ नाहीं॥ हम सब सकल सुकृत कै रासी॥ भए जग जनमि जनकपुर वासी॥ जिन्ह
जानकी राम छवि देषी॥ को सुकृती हम सरिस विसेषी॥ पुनि देषव रघुवीर विवाहू॥ लेव भली
विधि लोचन लाहू॥ कहहिं परस्पर कोकिलवयनी॥ यह विवाह वड लाभ सुनयनी॥ वडे भा
ग विधि वात वनाई॥ नयन अतिथि होइहहिं दोउ भाई॥ दोहा॥ वारहि वार सनेह वस ज
नक वुलाउव सीय॥ लेन आइहहिं वंधु दोउ कोटि काम कमनीय॥ ३१०॥ विविधि भांति होइ
हि पहुनाई॥ प्रिय न काहि अस सासु माई॥ तव तव राम लषनहि निहारी॥ होइहहि सव पुर
लोग सुषारी॥ सषि जस राम लषन कर जोटा॥ तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा॥ स्याम गौर सव अंग सु
हाए॥ ते सव कहहिं देषि जे आए॥ कहा एक मैं आजु निहारे॥ जनु विरंचि निज हाथ सवारे॥ भर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
१२६

तरामहीकीअनुहारी॥ सहसालषिनसकहिंनरनारी॥ लषनसत्रुसूदनएकरूपा
नषसिषतेसबअंगअनूपा॥ मनभावहिंमुषबरनिनजाहीं॥ उपमाकहुंत्रिभुवनको
उनाहीं॥ छंद॥ उपमानकोउकहदासतुलसीकतहुंकबिकोबिदकहैं॥ बलबिन
यबिद्यासीलसोभासिंधुइन्हसेएइअहैं॥ पुरनारिसकलपसारिअंचलबिधिहिब
चनसुनावहीं॥ ब्याहिअहुंचारिउभाइएहिंपुरहमसुमंगलगावहीं॥ सोरठा॥ क
हहिंपरस्परनारिबारिबिलोचनपुलकतन॥ सषिसबकरबपुरारिपुन्यपयोनिधि
भूपदोउ॥ ३११॥ एहिबिधिसकलमनोरथकरहीं॥ आनंदउमगिउमगिउरभरहीं॥
जेन्रपसीयस्वयंबरआये॥ देषिबंधुसबतिन्हसुषपाए॥ कहतरामजसुबिसदबिसा १२६
ला॥ निजनिजगेहगएमहिपाला॥ गएबीतिकछुदिनएहिभांती॥ प्रमुदितपुरजन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सकलबराती॥मंगलमूललगनदिनआवा॥हिमरितुअगहनमाससुहावा॥ग्रह
तिथिनषतजोगबरबारू॥लगनसोधिबिधिकीन्हबिचारू॥पठैदीन्हनारदसनसो
ई॥गनीजनककेगनिकन्हजोई॥सुनीसकललोगन्हयहबाता॥कहहिंजोतिषीआ
पबिधाता॥दोहा॥ धेनुधूरिबेलाबिमलसकलसुमंगलमूल॥बिप्रन्हकहेउबिदे
हसनजानिसगुनअनुकूल॥३१२॥ उपरोहितहिकहेउनरनाहा॥अबबिलंबकर
कारनकाहा॥सतानंदतबसचिवबुलाए॥मंगलसकलसाजिसबल्याए॥संखनिसा
नपनवबहुबाजे॥मंगलकलससगुनसुभसाजे॥सुभगसुआसिनिगावहिंगीता॥क
रहिंबेदधुनिबिप्रपुनीता॥लेनचलेसादरएहिभांती॥गएजहांजनवासबराती॥को
सलपतिकरदेषिसमाज॥अतिलघुलागतिन्हहिसुरराजू॥भयउसमयअबधारि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० यपोउ॥ यह सुनि परम निसानन्हि घाउ॥ गुरहि पूछि करि कुल बिधि राजा॥ चले संग
१२७ मुनि साधु समाजा॥ दोहा॥ भाग्य बिभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि॥ लगे सराहन
सहस मुख जानि जनम निज बादि॥ ३१३॥ सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना॥ बरषहिं सुम
न बजाइ निसाना॥ सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा॥ चढे बिमानन्हि नाना जूथा॥ प्रेम पु
लक तन हृदय उछाहू॥ चले बिलोकन राम बिवाहू॥ देखि जनकपुर सुर अनुरागे॥
निज निज लोक सबहि लघु लागे॥ चितवहि चकित बिचित्र बिताना॥ रचना सकल अ
लौकिक नाना॥ नगर नारि नर रूप निधाना॥ सुघर सुधरम सुसील सुजाना॥ तिन्हहि
देखि सब सुर सुर नारी॥ भए नखत जनु बिधु उजियारी॥ बिधिहि भयउ आचरज बिसे १२७
षी॥ निज करनी कछु कतहु न देखी॥ दोहा॥ सिव समुझाए देव सब जनि आचरज भु

लाहु॥हृदयविचारुधीरधरिसियरघुवीरविआहु॥३१५॥जिन्हकरनामलेत
जगमांहीं॥सकलअमंगलमूलनसाहीं॥करतलहोहिंपदारथचारी॥तेउसिय
रामकहेउकामारी॥एहिविधिसंभुसुरन्हसमुझावा॥पुनिआगेवरवसहचला
वा॥देवन्हदेखेदसरथजाता॥महामोदमनपुलकितगाता॥साधुसमाजसंगम
हिदेवा॥जनुतनुधरेकरहिंसुखसेवा॥सोहतसाथसुभगसुतचारी॥जनुअपवर्गसक
लतनुधारी॥मरकतकनकवरनवरजोरी॥देखिसुरन्हभैप्रीतिनथोरी॥पुनिरा
महिविलोकिहियहरषे॥नृपतिसराहिसुमनतिन्हवरषे॥दोहा॥रामरूपनख
सिखसुभगवारहिंवारनिहारि॥पुलकगातलोचनसजलउमासमेतपुरारि॥३१६॥
केकिकंठदुतिस्यामलअंगा॥तडितविनिंदकवसनसुरंगा॥व्याहविभूषनविवि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० धिबनाए॥ मंगलमय सब भाँति सुहाए॥ सरद बिमल बिधु बदन सुहावन॥ नयन न
१२८ वल राजीव लजावन॥ सकल अलौकिक सुंदरताई॥ कहि न जाइ मनहीं मन भा
ई॥ बंधु मनोहर सोहहिं संगा॥ जात नचावत चपल तुरंगा॥ राजकुँवर बर बाजि दि
षावहिं॥ बंस प्रसंसक बिरिद सुनावहिं॥ जेहि तुरंग पर रामु बिराजे॥ गति बिलोकि ष
गनायक लाजे॥ कहि न जाइ सब भाँति सुहावा॥ बाजि बेष जनु काम बनावा॥ छंद॥
जनु बाजि बेषु बनाइ मनसिजु राम हित अति सोहई॥ आपने बय बल रूप गुन ग
ति सकल भुवन बिमोहई॥ जगमगत जीनु जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे॥
किंकिनि ललाम लगाम ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे॥ दोहा॥ः प्रभु मनसहि १२८
लइलीन मनु चलत बाजि छबि पाव॥ भूषित उडगन तडित घनु जनु बर बरहि न

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चाव॥३१६॥ जेहि वर वाजि रामु असवारा॥ तेहि सारद उ नवरनै पारा॥ संकरु रामरू
प अनुरागे॥ नयन पंचदस अति प्रिय लागे॥ हरि हित सहित राम जव जोहे॥ रमा
समेत रमापति मोहे॥ निरखि राम छवि विधि हरषाने॥ आठै नयन जानि पछिता
ने॥ सुर सेनप उर वहुत उछाहू॥ विधि ते वढे सुलोचन लाहू॥ राम हि चितव सुरे
स सुजाना॥ गौतम स्राप परम हित माना॥ देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं॥ आजु पुरं
दर सम को उ नाहीं॥ मुदित देवगन रामहि देखी॥ नृपसमाज दुहुं हरष विसेषी॥
छंद॥ अति हरष राजसमाज दुहुं दिसि दुंदुभी वाजहि घनी॥ वरषहि सुमन सुर
हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी॥ एहि भांति जानि वरात आवत वाजने
वहु वाजहीं॥ रानी सुआसिनि वोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं॥ दोहा॥ सजि आर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० १२८ तीअनेकविधिमंगलसकलसगारि॥चलीमुदितपरिछनिकरनगजगामिनिवरनारि॥३१
७॥विधुवदनीसवसवम्रगलोचनि॥सवनिजतनछविरतिमदमोचनि॥पहिरेंवरनवरनवर
नचीरा॥सकलविभूषनसजेसरीरा॥सकलसुमंगलअंगवनाए॥करहिंगानकलकं
ठलजाए॥चालिविलोकिकामगजलाजहिं॥कंकनकिंकिनिनूपुरवाजहिं॥वाजहिंवाज
नविविधिप्रकारा॥नभअरुनगरसुमंगलचारा॥सचीसारदारमाभवानी॥जेसुरतियसु
चिसहजसयानी॥कपटनारिवरवेषवनाई॥मिलीसकलरनिवासहिंजाई॥करहिंगा
नकलमंगलवानी॥हरषविवससवकाहुनजानी॥छंद॥कोजानकेहिआनंदवस
सवव्रह्मवरपरिछनचली॥कलगानमधुरनिसानवरषहिसुमनसुरसोभाभली॥आ १२८
नंदकंदविलोकिदूलहसकलहियहरषतभई॥अंभोजअंवकअंवुउमगिसुअंग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुलकावलिहोई॥ दोहा॥ः जोसुषभासियमातुमनदेषिरामवरवेषु॥ सोनसकहिंकहि
कलपसतसहससारदासेषु॥ ३१८॥ नयननीरहटिमंगलजानी॥ परिछनकरहिंमुदि
तमनरानी॥ वेदविदितअरुकुलआचारू॥ कीन्हभलीविधिसवव्यवहारू॥ पंचसवदधु
निमंगलगाना॥ पटपावडेपरहिंविधिनाना॥ करिआरतीअरघुतिन्हदीन्हा॥ रामगम
नमंडपतवकीन्हा॥ दसरथसहितसमाजविराजे॥ विभवविलोकिलोकपतिलाजे॥ समय
समयसुरवरषहिंफूला॥ सांतिपढहिंमहिसुरअनुकूला॥ नभअरुनगरकोलाहलहोई॥
आपनिपरकछुसुनइनकोई॥ एहिविधिराममंडपहिंआए॥ अरघुदेइआसनवैठाए॥
छंद॥ः वैठारिआसनआरतीकरिनिरषिवरुसुषपावहीं॥ मनिवसनभूषनभूरिवारहिं
नारिमंगलगावहीं॥ ब्रह्मादिसुरवरविप्रवेषवनाइकौतुकदेषहीं॥ अवलोकिरघुकुलकम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा॰
३२०

लर बिषयबिमुषफलजीवनलेषहीं॥ छंद॥:: नाउबारीभाटनटरामनिछावरिपाउ॥ मुदित
असीसहिंनाउसिरहरषनहृदयसमाउ॥ ३१९॥ मिलेजनकुदसरथअतिप्रीती॥ करिबै
दिकलौकिकसबरीती॥ मिलतमहादोउराजबिराजे॥ उपमाषोजिषोजिकबिलाजे॥ ल
हीनकतहुंहारिहियमानी॥ इन्हसमएउ उपमाउरआनी॥ सामधदेषिदेवअनुरागे
सुमनबरषिजसुगावनलागे॥ जगबिरंचिउपजावाजबतें॥ देषसुनेब्याहबहुतबते॥ स
कलभांतिसबसाजसमाजू॥ समसमधीदेषेहमआजू॥ देवगिरासुनिसुंदरसाची॥ प्री
तिअलौकिकदुहूंदिसिमांची॥ देतपांवडेअरघसुहाए॥ सादरजनकमंडपहिल्याए
॥ छंद॥:: मंडपबिलोकिबिचित्ररचनारुचिरतामुनिमनहरे॥ निजपानिजनकसुजा
नुसबकहुआनिसिंहासनधरे॥ कुलइष्टसरिसबसिष्टपूजेबिनयकरिआसिषलही

३२०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कौसिकहिपूजतपरमप्रीतिकिरीतितौनपरैकही॥ दोहा॥ः वामदेवआदिकरिषयपूजे
मुदितमहीस॥ दिएदिव्यआसनसवहिसवसनलहीअसीस॥३२०॥ वहुरिकीन्हकौ
सलपतिपूजा॥ जानिईससमभावनदूजा॥ कीन्हिजोरिकरविनयवडाई॥ कहिनिज
भाग्यविभववहुताई॥ पूजेभूपतिसकलवराती॥ समधिनसमसादरसवभांती॥ आस
नउचितदिएसवकाहू॥ कहौंकाहमुखएकउछाहू॥ सकलवरातजनकसनमा
नी॥ दानमानविनतीवरवानी॥ विधिहरिहरुदिसिपतिदिनराऊ॥ जेजानहिंरघु
वीरप्रभाऊ॥ कपटविप्रवरवेषवनाए॥ कौतुकदेषहिंअतिसचुपाए॥ पूजेजनकदे
वसमजाने॥ दिएसुआसनविनुपहिचाने॥ छंद॥ः पहिचानकोकेहिजानसवहिअपा
नसुधिभोरीभई॥ आनंदकंदविलोकिदूलहअभयदिसिआनंदमई॥ सुरलषेरामसुजा

बा०
१३१

नपूजेमानसिकआसनदये ॥ अवलोकिसीलसुभावप्रभुकोविबुधमनप्रमुदितभये ॥
दोहा ॥ रामचंद्रमुखचंद्रछविलोचनचारुचकोर ॥ करतपानसादरसकलप्रेमप्रमोद
नथोर ॥ ३२१ ॥ समउविलोकिवसिष्टबुलाए ॥ सादरसतानंदमुनिआए ॥ वेगिकुंअरि
अवआनहुजाई ॥ चलेमुदितमुनिआयसुपाई ॥ रानीसुनिउपरोहितवानी ॥ प्रमुदित
सषिन्हसमेतसयानी ॥ विप्रवधूकुलबृद्धबुलाई ॥ करिकुलरीतिसुमंगलगाई ॥ ना
रिवेषजेसुरवरवामा ॥ सकलसुभायसुंदरीस्यामा ॥ तिन्हहिदेषिसुषपावहिनारी ॥
विनुपहिचानप्रानतेप्यारी ॥ वारवारसनमानहिरानी ॥ उमारमासारदसमजा
नी ॥ सीयसवारिसमाजुबनाई ॥ मुदितमंडपहिचलीलवाई ॥ छंद ॥ चलिल्याइ १३१
सीतहिसषीसादरसजिसुमंगलभामिनी ॥ नवसप्तसाजेसुंदरीसवमत्तकुंजरगामि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नी॥कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिकामकोकिललाजहीं॥मंजीरनूपुरकलित
कंकनतालगतिबरबाजहीं॥दोहा॥:सोहतिबनिताबृंदमहुसहजसुहावनिसीय
छबिललनागनमध्यजनुसुषमातियकमनीय॥३२१॥सियसुंदरताबरनिनजा
ई॥लघुमतिबहुतमनोहरताई॥आवतदीषिबरातिन्हसीता॥रूपरासिसबभाँतिपुनी ता
ता॥सबहिमनहिमनकिएप्रनामा॥देषिरामभएपूरनकामा॥हरषेदसरथसुत
न्हसमेता॥कहिनजाइउरआनंदजेता॥सुरप्रनामुकरिबरिसहिफूला॥मुनिअ
सीसधुनिमंगलमूला॥गाननिसानकोलाहलभारी॥प्रेमप्रमोदमगननरनारी॥ए
हिबिधिसीयमंडपहिआई॥प्रमुदितसांतिपढहिमुनिराई॥तेहिऔसरकरबिधि व
ब्यवहारू॥दुहुँकुलगुरसबकीन्हअचारू॥छंद॥:आचारुकरिगुरगौरिगनपतिमु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा° १३२

रिन विप्रपुजा वहीं॥ सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुख पावहीं॥ मधुपर्क मं
गल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महँ चहैं॥ भरे कनक कोपर कलस सो न वलिए प
रिचार करहैं॥ कुलरीति प्रीति समेत रवि कहि देत सव सादर कियो॥ एहि भाँति देव पु
जा सीतहि सुभग सिंहासन दियो॥ सियराम अवलोकनि परस्पर प्रेम काहु न लखि
परै॥ मन वुद्धि वर वानी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै॥ दोहा॥ होम समय तनु धरि अ
नलु अति सुख आहुति लेहिं॥ विप्र वेष धरि वेद सव कहि विवाह विधि देहिं॥ ३२३॥
जनक पाट महिषी जग जानी॥ सीय मातु किमि जाइ वखानी॥ सुजसु सुकृत सुख सुंद
रताई॥ सव समेटि विधि रची वनाई॥ समउ जानि मुनिवरन्ह वुलाई॥ सुनत सुआ
सिनि सादर ल्याई॥ जनक वाम दिसि सोह सुनयना॥ हिमगिरि संग वनी जनु मयना १३२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ना॥ कनककलसमनिकोपरसूरे॥ सुचिसुगंधमंगलजलपूरे॥ निजकरमुदितराय

अरुरानी॥ धरेरामकेआगेआनी॥ पढहिवेदमुनिमंगलवानी॥ गगनसुमनझरिअ

वसरजानी॥ वरुत्रिलोकिदंपतिअनुरागे॥ पायपुनीतपषारनलागे॥ छंद॥: ला

गेपषारनपायपंकजप्रेमतनपुलकावली॥ नभनगरगानिसानजयधुनिउ

मगिजनुचहुँदिसिचली॥ जेपदसरोजमनोजअरिउरसरसदैवविराजहीं॥ जेस

कृतसुमिरतविमलतामनुसकलकलिमलभाजहीं॥ जेपरसिमुनिवनितालहीग

तिरहीजोपातकमईं॥ मकरंदजिन्हकोसंभुसिरसुचितावधिसुरवरनईं॥ करिमधु

पमुनिमनजोगिजनजेसेइअभिमतगतिलहै॥ तेपदपषारतभाग्यभाजनजनक

जयजयसबकहै॥ वरकुँअरिकरतलजोरिसाषोचारदोउकुलगुरुकरे॥ भयो

वा०
१३३ पानिग्रहनविलोकिविधिसुरमनुजमुनिआनंदभरे॥सुषमूलदूलहदेषिदंपति
पुलकतनहुलस्योहियो॥करिलोकवेदविधानकन्यादाननृपभूषनकियो॥हिम
वंतजिमिगिरिजामहेसहिहरिहिश्रीसागरदई॥तिमिजनकरामहिसियसमर्पीवि
श्वकलकीरतिनई॥क्योंकरैविनयविदेहकियोविदेहमूरतिसांवरी॥करिहोमविधिव
तगांठिजोरीहोनलागीभांवरी॥दोहा॥जयधुनिवंदीवेदधुनिमंगलगाननिसान॥सु
निहरषहिंवरषहिंविवुधसुरतरुसुमनसुजान॥३२४॥कुंअरकुंअरिकलभांवरिदेहीं॥
नयनलाभसवसादरलेहीं॥जाइनवरनिमनोहरजोरी॥जोउपमाकछुकहउंसोथो
री॥रामसीयसुंदरप्रतिछाहीं॥जगमगातमनिषंभन्हिमाहीं॥मनहुमदनरतिधरि १३३
वहुरूपा॥देषतरामविवाहुअनूपा॥दरसलालसासकुचनथोरी॥प्रगटतदुरतव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

होहिं बहोरी॥ अस मगन सब देखन हारे॥ जनक समान अपान बिसारे॥ प्रमुदित मुनिन्ह
भाँवरी फेरी॥ नेग सहित सब रीति निबेरी॥ राम सीय सिर सेंदुर देहीं॥ सोभा कहि न जाति
बिधि केहीं॥ अरुन पराग जलजु भरि नीकें॥ ससिहि भूष अहि लोभ अमी कें॥ बहुरि बसि
ष्ट दीन्ह अनुसासन॥ बरु दुलहिनि बैठे एक आसन॥ छंद॥ बैठे बरासन रामु जानकि
मुदित मन दसरथ भये॥ तन पुलकि पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फल नये॥ भरि भु
वन रहा उछाहु राम बिबाहु भा सबहीं कहा॥ केहि भाँति बरनि सिरात रसना एकु यहु मंग
ल महा॥ तब जनक पाइ बसिष्ट आयसु ब्याह साज सँवारि कै॥ मांडवी श्रुतिकीरति उर्मि
ला कुँअरि लईं हँकारि कै॥ कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभामई॥ सब रीति प्री
ति समेत करि सो ब्याहि न्रप भरतहि दई॥ जानकी लघु भगिनि सकल सुंदरी सिरोमनि जा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा॰ नीकें॥ सो जनक दीन्ही ब्याहि लषनहि सकल बिधि सनमानि कें॥ जेहि नाम स्रुति
१३४ कीरति सुलोचनि सुमुषि सब गुन आगरी॥ सोउ दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उ
जागरी॥ अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लषि सकुच हियँ हरषहीं॥ सब मुदित सुंद
रता सराहहिं सुमन सुरगन बरषहीं॥ सुंदरी सुंदर बरन सह सब एक मंडप राज
हीं॥ जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन्ह सहित बिराजहीं॥ दोहा॥ मुदित अवधप
ति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि॥ जनु पाए महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फ
ल चारि॥ ३२५॥ जसि रघुबीर ब्याह बिधि बरनी॥ सकल कुअँर ब्याहे तेहि करनी॥ क
हि न जाइ कछु दाइज भूरी॥ रहा कनक मनि मंडप पूरी॥ कंबल बसन बिचित्र पटोरे १३४
भाँति भाँति बहु मोल न थोरे॥ गज रथ तुरग दास अरु दासी॥ धेनु अलंकृत कामदु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दासी॥ वस्तु अनेक करि यक्कि मिलेया॥ कहिन जाइ जान हि जिन्ह देषा॥ लोकपाल

अकलोकि सिहाने॥ लीन्ह अवधपति सब सुष माने॥ दीन्ह जाचकहि जो जेहि भा

वा॥ उवरा सो जनवास हि आवा॥ नव कर जोरि जनक म्रदु वांनी॥ बोले सब बरात सं

नमानी॥ छंद॥ सनमानि सकल बरात आदर दान विनय बडाइ कै॥ प्रमुदित महा

मुनि वृंद वंदे पूजि प्रेम लडाय कै॥ सिर नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट कि

ये॥ सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि तोष जल अंजलि दिये॥ कर जोरि जनक बहोरि वं

धु समेत कोसल राय सौं॥ बोले मनोहर वयन सानि सनेह सील सुभाय सौं॥ संबंध रा

जन रावरे हम बडे अब सब विधि भये॥ यह राज साज समेत सेवक जानवे विनु गथ लये

ये दारिका परिचारिका करि पालवी करुनाम ई॥ अपराध छमिबो बोलि पठए बहु

बा०
१३५ नहिं छाँडो दई ॥ पुनि भानुकुलभूषन सकल सनमाननिधि समधी किये ॥ कहि जा
तिनहि बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिये ॥ बृंदारका गन सुमन बरिसहि राउ जन
वासेहि चले ॥ दुंदुभी जय धुनि बेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥ तव सषी मंगल
गान करत मुनीस आयसु पाइ कै ॥ दूलह दुलहिनिन्ह सहित सुंदरि चली कोहबर
ल्याइ कै ॥ दोहा ॥ पुनि पुनि रामहि चितव सिय सकुचति मन सकुचै न ॥ हरत मनोहर मी
न छवि प्रेम पियासे नैन ॥ ३२६ ॥ स्याम सरीर सुभाय सुहावन ॥ सोभा कोटि मनोज ल
जावन ॥ जावक जुत पद कमल सुहाए ॥ मुनि मन मधुप रहत तिन्ह छाये ॥ पीत पुनी
त मनोहर धोती ॥ हरति बाल रवि दामिनि जोती ॥ कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर ॥ १३५
बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर ॥ पीत जनेउ महा छवि देई ॥ कर मुद्रिका चोरि चित लेई ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सोहत ब्याह साज सब साजे॥ उर आयत भूषन उर राजे॥ पिअर उपरना कांखासो
ती॥ दुहुं आचरन लगे मनि मोती॥ नयन कमल कल कुंडल काना॥ वदन कमल
सौंदर्य्य निधाना॥ सुंदर भृकुटि मनोहर नासा॥ भाल तिलक रुचिरता निवासा॥ सो
हत मौर मनोहर माथे॥ मंगलमय मुकुता मनि गाथे॥ छंद॥ गाथे महामनि मौ
र मंजुल अंग सब चित चोरहीं॥ पुर नारि सुर सुंदरी वरहि विलोकि सब त्रिन तोरहीं
मनि वसन भूषन वारि आरति करहि मंगल गावहीं॥ सुर सुमन वरिसहि सूत माग
ध वंदि सुजस सुनावहीं॥ कोहवरहि आने कुंअर कुंअरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै॥
अति प्रीति लौकिक रीति लागी करन मंगल गाइ कै॥ अति प्रीति लौकिक रीति ला
गी करन मंगल गाइ कै॥ लहकौरि गौरि (जांनकी) सिखाव रामहि सीय सन सारद कहै॥ रनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० वाम हास बिलास रस बस जन्म को फल सब लै हे॥ निज पानि मनि महुं देषि प्रतिमूर
१३६ तिरूप पनिधान की॥ चालति न भुज वल्ली बिलोकनि बिरह भय बस जान की॥ कौतुक
विनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहि अली॥ वर कुंअरि सुंदरि सकल सषी लवा
इ जनवासहि चली॥ तेहि समय सुनिय असीस जंह तंह नगर नभ आनंद महा॥
चिरजिअहु जोरी चारु चार्यो मुदित मन सबही कहा॥ जोगीं द्रसिद्ध मुनीस देव वि
लोकि प्रभु दुंदुभि हनी॥ चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भ
नी॥ दोहा॥ सहित वधूटिन्ह कुंअर सब तब आए पितु पास॥ सोभा मंगल मोद भ
रि उमगे उ जनु जनवास॥ ३२७॥ पुनि जेवनार भई बहु भांती॥ पठए जनक बुला १३६
इ बराती॥ परत पावडे बसन अनूपा॥ सुतन्ह समेत गवन कियो भूपा॥ सादर सब

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

के पाय पषारे॥ जथाजोग पीढन्ह बैठारे॥ धोए जनक अवधपति चरना॥ सील सनेह जा
इ न हि बरना॥ बहुरि राम पद पंकज धोए॥ जे हर हृदय कमल महु गोए॥ तीनि उ भा
इ राम सम जानी॥ धोए चरन जनक निज पानी॥ आसन उचित सबहि न्रप दीन्हे
बोलि सूपकारी सब लीन्हे॥ सादर लगे परन पनवारे॥ कनक कील मनि पान संवारे
दोहा॥ सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वाद पुनीत॥ छन महु सब के परुसि गे चतुर सु
आर बिनीत॥ ३२८॥ पंच कवल करि जेवन लागे॥ गारि गान सुनि अति अनुरागे॥ भांति
अनेक परे पकवाने॥ सुधा सरिस नहि जाहि बषाने॥ परुसन लगे सुआर सुजाना॥ बिं
जन बिबिध नाम को जाना॥ चारि भांति भोजन बिधि गाई॥ एक एक बिधि बरनि न जा
ई॥ छरस रुचिर बिंजन बहु जाती॥ एक एक रस अगनित भांती॥ जेवत देहि मधुर धु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
१३८

निगारी॥ लैलैनामपुरुषअरुनारी॥ समयसोहावनिगारिविराजा॥ हसतराउसुनिस
हितसमाजा॥ एहिविधिसवहीभोजनकीन्हा॥ आदरसहितआचमनलीन्हा॥ दोहा॥
देइपानपूजेजनकदसरथसहितसमाज॥ जनवासेहिगवनेमुदितसकलभूपसिरताज
३२९॥ नितनूतनमंगलपुरमाहीं॥ निमिषसरिसदिनजामिनिजाहीं॥ वडेभोरभूपति
मनिजागे॥ जाचकगुनगनगावनलागे॥ देषिकुंवरवरवधुन्हसमेता॥ कहिकिमिजा
तमोदमनजेता॥ प्रातक्रियाकरिगेगुरपाहीं॥ महाप्रमोदप्रेममनमाहीं॥ करिप्रनामपू
जाकरजोरी॥ वोलेगिराअमियजनुवोरी॥ तुम्हरीकृपासुनहुमुनिराजा॥ भयउआजु
मैपूरनकाजा॥ अवसवविप्रवुलाइगोसाईं॥ देहुधेनुसवभांतिवनाई॥ सुनिगुरकरिम १३८
हिपालवडाई॥ पुनिपठएमुनिवृंदवुलाई॥ दोहा॥ः वामदेवअरुदेवरिषिवालमीकि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जावालि॥ आए मुनिवर निकर तव कौसिकादि तपसालि॥ ३३०॥ दंडप्रनाम सवहि न्र
पकीन्हे॥ पूजि सप्रेम वरासन दीन्हे॥ चारि लक्ष वर धेनु मगाईं॥ काम सुरभि सम सील सुहा
ई॥ सव विधि सकल अलंकृत कीन्ही॥ मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्ही॥ करत विनय वहु
विधि नरनाहू॥ लहेउ आजु जग जीवन लाहू॥ पाइ असीस महीसु अनंदा॥ लिए वोलि
पुनि जाचक वृंदा॥ कनक वसन मनि हय गय स्यंदन॥ दिए वूझि रुचि रविकुल नंदन॥ च
ले पढत गावत गुन गाथा॥ जय जय जय दिनकर कुल नाथा॥ एहि विधि राम विवाह उ
छाहू॥ सकइ न वरनि सहस मुख जाहू॥ दोहा॥ वार वार कौसिक चरन सीसु नाइ कह रा
उ॥ यह सव सुख मुनिराज तव कृपा कटाक्ष प्रभाउ॥ ३३१॥ जनक सनेह सील करतूती
नृप सव राति सराहत वीती॥ दिन उठि विदा अवधपति मागा॥ राखहिं जनक सहित अनु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा॰
१३८

नुरागा॥ नितनूतनआदरअधिकाई॥ दिनप्रतिसहसभांतिपहुनाई॥ नितनवन
गरअनंदउछाहू॥ दसरथगवनसुहाइनकाहू॥ बहुतदिवसबीतेएहिभांती॥ ज
नुसनेहरजुबंधेबराती॥ कौसिकसतानंदतबजाई॥ कहाविदेहनृपहिसमुझाई॥
अबदसरथकहंआयसुदेहू॥ जद्यपिछाडिनसकहुसनेहू॥ भलेहिनाथकहि
सचिवबुलाए॥ कहिजयजीवसीसतिन्हनाए॥ दोहा॥ अवधनाथचाहतचलन
भीतरकरहुजनाउ॥ भयेप्रेमवससचिवसुनिविप्रसभासदराउ॥ ३३४॥ पुरवासीसु
निचलहिवराता॥ वूझतविकलपरस्परवाता॥ सत्यगवनसुनिसवविलखाने॥ मन
हुंसांझसरसिजसकुचाने॥ जहंजहंआवतवसेवराती॥ तहंतहंसिद्धचलावहुभां १३८
ती॥ विविधिभांतिमेवापकवाना॥ भोजनसाजुनजाइवखाना॥ भरिभरिवसहअपार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहुमा॥पठरजनकअनेकसुआरा॥तुरगलाखरथसहसपचीसा॥सकलसवारेनख
अरुसीसा॥मत्तसहसदससिंधुरसाजे॥जिन्हहिदेखिदिसिकुंजरलाजे॥कनकबस
नमनिभरिभरिजाना॥महिषींधेनुवस्तुविधिनाना॥दोहा॥ दाइजअमितनजाइक
हिदीन्हविदेहवहोरि॥जोअवलोकतलोकपतिलोकसंपदाथोरि॥३३३॥सवसमाज
एहिभाँतिवनाई॥जनकअवधपुरदीन्हपठाई॥चलिहिवरातसुनतसवरानी॥विकल
मीनगनजिमिलघुपानी॥पुनिपुनिसीयगोदकरिलेहीं॥देइअसीससिषावनुदेहीं
होएहुसंततपियहिपियारी॥चिरअहिवातअसीसहमारी॥सासुससुरगुरसेवाक
रेहू॥पतिरुषलषिआयसुअनुसरेहू॥अतिसनेहवससषीसयानी॥नारिधरमसिष
वहिंमृदुवानी॥सादरसकलकुंवरिसमुझाईं॥रानिन्हवारवारउरलाईं॥वहुरिवहुरिभे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
२३९
एहि महतारी॥ कहहिं बिरंचि रची कित नारी॥ दोहा॥ : तेहि अवसर भाइन्ह सहित
राम भानु कुल केतु॥ चले जनक मंदिर मुदित बिदा करावन हेतु॥ ३३४॥ चारिउ भाइ
सुभाय सुहाए॥ नगर नारि नर देषन धाए॥ को उ कह चलन चहत हहिं आज॥ कीन्ह
बिदेह बिदा कर साज॥ लेहु नयन भरि रूप निहारी॥ प्रिय पाहुने भूप सुत चारी॥ को
जानै केहि सुकृत सयानी॥ नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी॥ मरन सील जिमि पाव
पियूषा॥ सुरतरु लहै जन्म कर भूषा॥ पाव नारिकी हरिपद जैसे॥ इन्ह कर दरसन
हम कहँ तैसे॥ निरषि राम सोभा उर धरहू॥ निज मन फनि मूरति मनि करहू॥ एहि बि
धि सबहि नयन फल देता॥ गए कुँवर सब राज निकेता॥ दोहा॥ : रूप सिंधु सब बंधु लषि १३९
हरषि उठेउ रनिवासु॥ करहिं निछावरि आरती महा मुदित मन सासु॥ ३३५॥ देषि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म छवि अति अनुरागी॥ प्रेमविवस पुनि पुनि पद लागी॥ रहै न लाज प्रीति उर छाई॥
सहज सनेहु वरनि किमि जाई॥ भाइन्ह सहित उवटि अन्हवाए॥ छरस असन
अति हेतु जेवाए॥ वोले राम सुअवसर जानी॥ सील सनेह सकुचमय वानी॥ राउ अव
धपुर चहत सिधाए॥ विदा होन हित हमहि पठाए॥ मातु मुदित मन आयसु देहू॥ वाल
क जानि करव नित नेहू॥ सुनत वचन विलषेउ रनिवासू॥ वोलि न सकहि प्रेमवस सा
सू॥ हृदय लगाइ कुंअरि सव लीन्ही॥ पतिन्ह सौंपि विनती अति कीन्ही॥ छंद॥ क
रि विनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै॥ वलि जाउं तात सुजान तुम्ह
कहुं विदित गति सव की अहै॥ परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानवी॥
तुलसीस सील सनेह लषि निज किंकरी करि मानवी॥ सोरठा॥ तुम्ह परिपूरन काम जा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न सिरोमनि भाव प्रिय॥ जन गुन गाहक राम दोष दलन करुनायतन॥ ३३६॥ अस क
हि रहे चरन गहि रानी॥ प्रेम पंक जनु गिरा समानी॥ सुनि सनेह सानी बर बानी॥ बहु
विधि राम सासु सनमानी॥ राम बिदा मागत कर जोरी॥ कीन्ह प्रनाम बहोरि बहोरी॥ पा
इ असीस बहुरि सिरु नाई॥ भाइन्ह सहित चले रघुराई॥ मंजु मधुर मूरति उर आनी॥
भई सनेह सिथिल सब रानी॥ पुनि धीरज धरि कुंअरि हकारी॥ बार बार भेटहिं मह
तारी॥ पहुचावहि फिरि मिलहिं बहोरी॥ बढी परस्पर प्रीति न थोरी॥ पुनि पुनि मिलत
सखिन्ह बिलगाई॥ बाल बछ जिमि धेनु लवाई॥ दोहा॥ प्रेम बिबस नर नारि सब
सखिन्ह सहित रनिवास॥ मानहु कीन्ह बिदेहपुर करुना बिरह निवास॥ ३३७॥

पाले
सुक सारिका जानकी ज्याए॥ कनक पिंजरन्हि राषि पढाए॥ ब्याकुल कहहिं कहाँ

वैदेही॥ मुनिधीरजपरिहरहिनकेही॥ भएविकलषगम्रगएहिभांती॥ मनुजदसाकै
सेकहिजाती॥ वंधुसमेतजनकतबआए॥ प्रेमउमगलोचनजलछाए॥ सियविलो
किधीरताभागी॥ रहेकहावतपरमविरागी॥ लीन्हरायउरलायजानकी॥ मिटीमहाम
रजादग्यानकी॥ समुझावतसवसचिवसयाने॥ कीन्हविचारनअवसरजाने॥ वारहि
वारसुताउरलाई॥ सजिसुंदरपालकीमगाई॥ दोहा॥ प्रेमविवसपरिवारसवजानि
सुलगननरेस॥ कुंअरिचढाईपालकिन्हसुमिरेसिद्धगनेस॥ ३३८॥ वहुविधिभूपसु
तासमुझाई॥ नारिधरमकुलरीतिसिषाई॥ दासीदासदिएवहुतेरे॥ सुचिसेवकजेप्रि
यसियकेरे॥ सीयचलतव्याकुलपुरवासी॥ होहिसगुनसुभमंगलरासी॥ भूसुरस
चिवसमेतसमाजा॥ संगचलेपहुचावनराजा॥ समयविलोकिवाजनेवाजे॥ रथगजवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
१८१

जिवरातिन्हसाजे॥ दसरथविप्रवोलिसवलीन्हे॥ दाननमानपरिपूरनकीन्हे॥ चरनस
रोजधूरिधरिसीसा॥ मुदितमहीपतिपाउ असीसा॥ सुमिरिगजाननकीन्हपयाना॥ मं
गलमूलसगुनभयेनाना॥ दोहा॥ सुरप्रसूनवरषहिहरषिकरहिं अपछरागान॥ चले
अवधपति अवधपुरमुदितवजाइनिसान॥ ३३१॥ न्रपकरिविनयमहाजनफेरे॥ सादर
सकलमागनेटेरे॥ भूषनवसनवाजिगजदीन्हे॥ प्रेमपोषिठाढेसवकीन्हे॥ वारवाररविर
दावलिभाषी॥ फिरेसकेलरामहिउरराषी॥ वहुरिवहुरिकोसलपतिकहहीं॥ जनकप्रे
मवसफिरननचहहीं॥ पुनिकहभूपतिवचनसुहाए॥ फिरियमहीसदूरिवडिआए॥ रा
उवहोरिउतरिभएठाढे॥ प्रेमप्रवाहविलोचनवाढे॥ तवविदेहवोलेकरजोरी॥ वचनसने १८१
हसुधाजनुवोरी॥ करौंकवनविधिविनयवडाई॥ महाराजमोहिदीन्हवडाई॥ दोहा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भांति॥ मिलनि परसपर विनय अति प्रीति न हृद
य समाति॥३४०॥ मुनि मंडलिहि जनक सिरु नावा॥ आसिरवाद सबहि सन पावा॥ सादर
पुनि भेटे जामाता॥ रूप सील गुन निधि सब भ्राता॥ जोरि पंकरुह पानि सुहाए॥ बोले बच
न प्रेम जनु जाए॥ राम करौं केहि भांति प्रसंसा॥ मुनि महेस मन मानस हंसा॥ करहिं जो
ग जोगी जेहि लागी॥ कोहु मोहु ममता मद त्यागी॥ व्यापक ब्रह्म अलख अविनासी॥ चि
दानंद निरगुन गुनरासी॥ मन समेत जेहि जान न वानी॥ ॥ विचार तरकि न सकहि सकल अनुमा
नी॥ महिमा निगम नेति नित कहई॥ जो तिहुं काल एकरस रहई॥ दोहा॥ नयन विष
य मो कहुं भयउ सो समस्त सुखमूल॥ सबउ सुलभ जग जीव कहं भए ईस अनुकूल॥३४१
सबहि भांति मोहि दीन्हि बडाई॥ निज जन जानि लीन्ह अपनाई॥ होहिं सहस दस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
१४२ सारदसेषा॥करहिंकलपकोटिकभरिलेषा॥मोरभाग्यराउरगुनगाथा॥कहिनसि
राहिंसुनहुरघुनाथा॥मैंकछुकहौंएकवलमोरें॥तुम्हरीझहुसनेहसुठिथोरें॥बा
रवारमागौंकरजोरें॥मनुपरिहरैचरनजनिभोरें॥सुनिवरवचनप्रेमजनुपोषे॥पूरन
कामरामपरितोषे॥करिवरविनयससुरसनमाने॥पितुकौसिकवसिष्ठसमजाने॥वि
नतीवहुरिभरतसनकीन्ही॥मिलिसप्रेमपुनिआसिषदीन्ही॥दोहा॥ मिलेल
षनरिपुसूदनहिदीन्हिअसीसमहीस॥भएपरस्परप्रेमवसफिरिफिरिनावहिंसी
स॥३४२॥वारवारकरिविनयवडाई॥रघुपतिचलेसंगसवभाई॥जनकगहेकौसि
कपदजाई॥चरनरेनुसिरनयनन्हलाई॥सुनुमुनीसवरदरसनतोरें॥अगमनक
छुप्रतीतिमनमोरें॥जोसुषसुजसलोकपतिचहहीं॥करतमनोरथसकुचतअ १४२

हहीं॥ सोसुषमुजससुलभमोहिस्वामी॥ सवविधिनवदरसन अनुगामी॥ कीन्हिवि
नयपुनिपुनिसिरुनाई॥ फिरेमहीसआसिषापाई॥ चलीवरातनिसानवजाई॥ मु
दितछोटवडसवसमुदाई॥ रामहिनिरषिग्राम नरनारी॥ पाइनयनफलहोहिसु
षारी॥ दोहा॥ वीचवीचवरवासकरिमगलोगन्हसुषदेत॥ अवधसमीपपुनीतदि
नपहुंची आइजनेत॥ ३४३॥ हनेनिसान पनववरवाजे॥ भेरिसंषधुनि हयगय
गाजे॥ झांझिवीनडिंडिभीसुहाई॥ सरसरागवाजहिंसहनाई॥ पुरजनआवतअक
निवराता॥ मुदितसकलपुलकावलिगाता॥ निजनिजसुंदरसदनसंवारे॥ हाट
वाटचौहटपुरद्वारे॥ गलीसकलअरगजासिंचाई॥ जहंतहंचौकेचारुपुराई॥ वना
वजारुनजाइवषाना॥ तोरनकेतुपताकविताना॥ सफलपूगफलकदलिसाला॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० १८३ ॥रोपेबकुलकदंबतमाला॥लगेसुभगतरुपरसतधरनी॥मनिमयआलबालकलकर
नी॥दोहा॥बिबिधिभाँतिमंगलकलसगृहगृहरचेसँवारि॥सुरब्रह्मादिसिहाँहिस
बरघुबरपुरीनिहारि॥३४४॥भूपभवनतेहिअवसरसोहा॥रचनादेषिमदनमनमो
हा॥मंगलसगुनमनोहरताई॥रिधिसिधिसुषसंपदासुहाई॥जनुउछाहसबसह
जसुहाए॥तनुधरिधरिदसरथगृहआए॥देषनहेतुरामबैदेही॥कहहुलालसा
होइनकेही॥जूथजूथमिलिचलीसुआसिनि॥निजछबिनिदरहिंमदनबिलासिनि
सकलसुमंगलसजेआरती॥गावहिंजनुबहुबेषभारती॥भूपतिभवनकोलाहलहो
ई॥जाइनबरनिसमउसुषसोई॥कौसल्यादिराममहतारी॥प्रेमबिबसतनदसाबि १८३
सारी॥दोहा॥ःदिएदानबिप्रन्हबिपुलपूजिगनेसपुरारि॥प्रमुदितपरमदरिद्रजनुपाइ

पदमरथ चारि॥३४५॥ प्रेमप्रमोदबिबससबमाता॥ चलहिंनचरनसिथिलभएगाता॥ रा
मदरसहितअतिअनुरागी॥ परिछनसाजुसजनसबलागी॥ बिबिधबिधानबाजने
बाजे॥ मंगलमुदितसुमित्रासाजे॥ हरददूबदधिपल्लवफूला॥ पानपुंगफलमंगलमूला॥
अछतअंकुररोचनलाजा॥ मंजुलमंजरितुलसिबिराजा॥ छुहेपुरटघटसहजसुहाए
मदनसकुनजनुनीडबनाए॥ सगुनसुगंधनजांहिबषानी॥ मंगलसकलसजहि
सबरानी॥ रचीआरतीबहुतबिधाना॥ मुदितकरहिकलमंगलगाना॥ दोहा॥ कनक
थारभरिमंगलन्हिकरकमलन्हिलिएमातु॥ चलीमुदितपरिछनकरनपुलकपल्लवि
तगातु॥३४६॥ धूपधूमनभमेचकभएउ॥ सावनघनघमंडजनुठएउ॥ सुरतरुसुम
नमालसुरबरषहिं॥ मनहुबलाकअवलिमनकरहिं॥ मंजुलमनिमयबंदनिवारे॥ म ब

॥इंद्र

नहुँ पाकरिपुचापसंवारे॥प्रगटहिंदुरहिंअटनपरभामिनि॥चारुचपलजनुदमक
बा० १४४ हिंदामिनि॥दुंदुभिधुनिघनगरजहिंघोरा॥जाचकचातिकदादुरमोरा॥सुरसुगंध
सुचिबरषहिंवारी॥सुषीसकलससिपुरनरनारी॥समउजानिगुरआयसुदीन्हा॥
पुरप्रवेसरघुकुलमनिकीन्हा॥सुमिरिसंभुगिरिजागनराजा॥मुदितमहीपतिस
हितसमाजा॥दोहा॥होहिंसगुनबरषहिंसुमनसुरदुंदुभींवजाइ॥विबुधबधूना
चहिंमुदितमंजुलमंगलगाइ॥३४४॥मागधसूतबंदिनटनागर॥गावहिंजसतिहुँ
लोगउजागर॥जयधुनिविमलवेदबरबानी॥दसदिसिसुनियसुमंगलसानी॥विपु
लबाजनेबाजनलागे॥नभसुरनगरलोगअनुरागे॥वनेबरातिबरनिनहिंजाहीं॥ १४४
महामुदितमनसुषनसमाहीं॥पुरबासिन्हतबरायजोहारे॥देषतरामहिंभएसुषा

रे॥ करहिंनिछावरिमनिगनचीरा॥ वारिविलोचनपुलकसरीरा॥ आरतिकरहिंमुदित
पुरनारी॥ हरषहिंनिरषिकुंवरवरचारी॥ सिविकासुभगउहारउघारी॥ देषिदुलहिनि
न्हहोंहिसुषारी॥ दोहा॥ एहिविधिसवहीदेतसुषुआएराजदुआर॥ मुदितमातुप
रिछनिकरहिंवधुन्हसमेतकुमार॥ ३४८॥ करहिंआरतीवारहिंवारा॥ प्रेमप्रमोदकहैको
पारा॥ भूषनमनिपटनानाजाती॥ करहिंनिछावरिअगनितभांती॥ वधुन्हसमेति
देषिसुतचारी॥ परमानंदमगनमहतारी॥ पुनिपुनिसीयरामछविदेषी॥ मुदितसफल
जगजीवनलेषी॥ सषीसीयमुषपुनिपुनिचाही॥ गानकरहिंनिजसुकृतसराही॥ वरष
हिंसुमनछनहिंछनदेवा॥ नाचहिंगावहिंलावहिंसेवा॥ देषिमनोहरचारिउजोरी
सारदउपमासकलढंढोरी॥ देतनवनहिंनिपटलघुलागी॥ एकटकरहींरूपअनुरागी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा० दोहा॥ः॥निगमनीतिकरिमातुसवअरघपावडेदेत॥वधुन्हसहितसुतपरिछिसव
१८५ चलीलवाइनिकेत॥३४९॥चारिसिंहासनसहजसुहाए॥जनुमनोजनिजहाथवनाए॥
तिन्हपरकुंअरिकुंअरवैठारे॥सादरपायपुनीतपषारे॥धूपदीपनैवेदवेदविधि॥पूजेवर
दुलहिनिमंगलनिधि॥वारहिंवारआरतीकरहीं॥व्यजनचारुचामरसिरढरहीं॥वस्तुअ
नेकनिछावरिहोहीं॥भरीप्रमोदमातुसवसोहीं॥पावापरमतत्वजनुजोगी॥अमृतल
हेउजनुसंततरोगी॥जनमरंकजनुपारसपावा॥अंधहिलोचनलाभसुहावा॥मूकव
दनजनुसारदछाई॥मानहुसमरसूरजयपाई॥दोहा॥ःएहिसुखतेसतकोटिगुनपावहि
मातुअनंदु॥भाइन्हसहितविआहिघरआएरघुकुलचंदु॥लोकरीतिजननीकरहिंव १८५
रदुलहिनिसकुचाहिं॥मोदविनोदविलोकिवडराममनहिमुसुकाहिं॥३५०॥देवपि

नरपूजेविधिनीकी॥पूजीसकलवासनाजीकी॥सवहिंवंदिमागहिंवरदाना॥भाइन्हसहि
तरामकल्याना॥अंतरहितसुरआसिषदेहीं॥मुदितमातुअंचलभरिलेहीं॥भूपतिवोलि
वरातीलीन्हे॥जानवसनमनिभूषनदीन्हे॥आयसुपाइराषिउररामहि॥मुदितगएसव
निजनिजधामहि॥पुरनरनारिसकलपहिराए॥घरघरवाजनलगेवधाए॥जाचकजनजा
चहिंजोइजोई॥प्रमुदितराउदेहिंसोइसोई॥सेवकसकलवजनियानाना॥पूरनकिएदा
नसनमाना॥दोहा॥देहिंअसीसजोहारिसवगावहिंगुनगनगाथ॥तवगुरभूसुरसहित
गृहगवनकीन्हरघुनाथ॥३५१॥जोवसिष्ठअनुसासनदीन्हा॥लोकवेदविधिसादरकी
न्हा॥भूसुरभीरदेषिसवरानी॥सादरउठींभाग्यवडजानी॥पायपषारिसकलअन्हवा
ए॥पूजिभलीविधिभूपजिवाए॥आदरदानप्रेमपरिपोषे॥देतअसीससकलमनतोषे॥व

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० १९६ उविधिकीन्हगाधिसुतपूजा॥नाथमोहिसमधन्यनदूजा॥कीन्हप्रसंसाभूपतिभूरी
रानिन्हसहितलीन्हपगधूरी॥भीतरभवनदीन्हबरवासू॥मनजोगवतरहनृपर
निवासू॥पूजेगुरपदकमलबहोरी॥कीन्हिबिनयउरप्रीतिनथोरी॥दोहा॥ बधुन्हस
मेतकुमारसबरानिन्हसहितमहीसु॥पुनिपुनिबंदतगुरचरनदेतअसीसमुनीसु
३५४॥बिनयकीन्हउरअतिअनुरागे॥सुतसंपदाराषिसबआगे॥नेगमागिमुनिना
यकलीन्हा॥आसिरबादबहुतबिधिदीन्हा॥उरधरिरामहिसीयसमेता॥हरषिकीन्ह
गुरगवननिकेता॥बिप्रबधूसबभूपबुलाईं॥चीरचारुभूषनपहिराईं॥बहुरिबुलाइसु
आसिनिलीन्ही॥रुचिबिचारिपहिरावनिदीन्ही॥नेगीनेगजोगसबलेहीं॥रुचिअनुरू
पभूपमनिदेहीं॥प्रियपाहुनेभूपजेजाने॥तेसबभलीभाँतिसनमाने॥देवदेषिरघुबीर १९६

विवाहू॥ वरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू॥ दोहा॥ चले निसान वजाइ सुर निज निज पुर सु
ष पाउ॥ कहत परसपर राम जस प्रेम न हृदय समाउ॥ ३५३॥ सव विधि सवहि समदि नरना
हू॥ रहा हृदय भरि पूरि उछाहू॥ जहँ रनिवास तहाँ पगु धारे॥ सहित वधूटिन्ह कुँअर नि
हारे॥ लिए गोद करि मोद समेता॥ को कहि सकै भए सुष जेता॥ वधू सप्रेम गोद वैठारी॥
वारवार हियँ हरषि दुलारी॥ देखि समाज मुदित रनिवासू॥ सवके उर आनंद कियो वासू॥
कहेउ भूप जिमि भए विवाहू॥ सुनि सुनि हरष होउ सव काहू॥ जनक राज गुन सील व
डाई॥ प्रीति रीति संपदा सुहाई॥ वहु विधि भूप भाट जिमि वरनी॥ रानी सव प्रमुदित सु
नि करनी॥ दोहा॥ सुतन्ह समेत नहाइ नृप वोलि विप्र गुर ज्ञाति॥ भोजन कीन्ह अने
क विधि घरी पंच गइ राति॥ ३५४॥ मंगल गान करहिं वर भामिनि॥ भइ सुषमूल मनोह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा० रजामिनि ॥ अचैपान सब काहूँ पाए ॥ स्रग सुगंध भूषित छबि छाए ॥ राम हि देखि रजा
१४७ यसु पाई ॥ निज निज भवन चले सिर नाई ॥ प्रेम प्रमोद बिनोद बडाई ॥ समउ समाज म
नोहरताई ॥ कहि न सकहि सत सारद सेस ॥ बेद बिरंचि महेस गनेस ॥ सो मै कहौं कव
न बिधि बरनी भूमि नाग सिर धरइ कि धरनी ॥ नृप सब भांति सबहि सनमानी ॥ कहि मृ
दु बचन बुलाई रानी ॥ बधू लरिकनी पर घर आई ॥ राखेहु नयन पलक की नाई ॥ दोहा ॥
लरिका श्रमित उनींद बस सयन कराउ जाउ ॥ अस कहि गे बिश्रामगृह राम चरन चितु
लाउ ॥ ३५५ ॥ भूप बचन सुनि सहज सुहाए ॥ जरित कनक मनि पलग डसाए ॥ सुभग सुर
भि पय फेनु समाना ॥ कोमल कलित सुपेती नाना ॥ उपबरहन बर बरनि न जाही ॥ स्र
ग सुगंध मनि मंदिर माही ॥ रतनदीप सुठि चारु चंदोवा ॥ कहत न बनइ जान जेइ जोवा ॥ १४७

सेजरुचिररचिरामु उठाए॥ प्रेमसमेतपलगपौढाए॥ अज्ञापुनिपुनिभाइन्हदीन्ही॥
निजनिजसेजसयनतिन्हकीन्ही॥ देषिस्याममृदुमंजुलगाता॥ कहहिंसप्रेमबचनस-
बमाता॥ मारगजातभयानकभारी॥ केहिबिधितातताडकामारी॥ दोहा॥ घोरनिसाचर
बिकटभटसमरगनहिनहिकाहु॥ मारेसहितसहायकिमिषलमारीचसुबाहु॥ ३५६॥
मुनिप्रसादबलिताततुम्हारी॥ ईसअनेककरवरेटारी॥ मथरषवारिकरीदुहुँभाई॥ गुर
गुरप्रसादसबबिद्यापाई॥ मुनितियतरीलगतपगधूरी॥ कीरतिरहीभुवनभरिपूरी॥ कम
ठपीठपबिकूटकठोरा॥ न्रपसमाजमहुँसिवधनुतोरा॥ बिस्वबिजयजसजानकिपाई॥
आएभवनब्याहिसबभाई॥ सकलअमानुषकरमतुम्हारे॥ केवलकौसिककृपासुधारे॥
आजुसफलजगजनमहमारा॥ देषितातबिधुबदनतुम्हारा॥ जेदिनगएतुम्हहिबिनु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रा० देषे॥ नेविरंचिजनिपारहिलेषे॥ दोहा॥ रामप्रतोषीमातुसवकहिविनीतवरवेन॥ सुमि
१४८ रिसंभुगुरविप्रपदकिएनीदंवसनैन॥३५७॥ नींदउवदनसोहसुठिलोना॥ मनहुंसां
झसरसीरुहसोना॥ घरघरकरहिजागरननारी॥ देहिपरसपरमंगलगारी॥ पुरीविराजति
२ राजतिरजनी॥ रानीकहहिंविलोकहुसजनी॥ सुंदरवधुसासुलैसोई॥ फनिकन्हजनुसिर
मनिउरगोई॥ प्रातपुनीतकालप्रभुजागे॥ अरुनचूडवरवोलनलागे॥ वंदीमागधगुनग
नगाए॥ पुरजनद्वारजोहारनआए॥ वंदिविप्रगुरसुरपितुमाता॥ पाइअसीसमुदितसव
भ्राता॥ जननिन्हसादरवदननिहारे॥ भूपतिसंगद्वारपगुधारे॥ दोहा॥ कीन्हसौचस
वसहजसुचिसरितपुनीतनहाइ॥ प्रातक्रियाकरितातपहिंआएचारिउभाइ॥३५८॥ भ
पविलोकिलिएउरलाई॥ वैठेहरषिरजायसुपाई॥ देषिरामसवसभाजुडानी॥ लोचन १४८

नलाभअवधिअनुमानी॥पुनिवसिष्ठमुनिकौसिकआए॥सुभगआसनन्हिमुनिवैठाए
सुतन्हसमेतपूजिपगलागे॥निरषिरामदोउगुरअनुरागे॥कहहिंवसिष्ठधरमइतिहासा
सुनहिंमहीसुसहितरनिवासा॥मुनिमनअगमगाधिसुतकरनी॥मुदितवसिष्ठविपुलवि
धिवरनी॥वोलेवामदेवसवसाची॥कीरतिकलितलोकतिहुंमांची॥सुनिआनंदभएउसव
काहू॥रामलषनउरअतिहिउछाहू॥दोहा॥मंगलमोदउछाहनितजाहिंदिवसइ
हिभांति॥उमगिअवधआनंदभरिअधिकअधिकअधिकाति॥३५९॥सुदिनसोधिकल
कंकनछोरे॥मंगलमोदविनोदनथोरे॥नितनवसुषसुरदेषिसिहाहीं॥अवधजनमजा
चहिविधिपाहीं॥विस्वामित्रचलननितचहहीं॥रामसप्रेमविनयवसरहहीं॥दिनदि
नसैगुनभूपतिभाउ॥देषिसराहमहामुनिराउ॥मागतविदाराउअनुरागे॥सुतन्ह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बा०
१४९
समेतठाढभरआगे॥नाथसकलसंपदातुम्हारी॥मैसेवकसमेतसुतनारी॥करबसदा
लरिकन्हपरछोहू॥दरसनदेतरहबमुनिमोहू॥असकहिराउसहितसुतरानी॥परेउ
चरनमुषआवनबानी॥दीन्हअसीसविप्रबहुभाँती॥चलेनप्रीतिरीतिकहिजाती॥रा
मसप्रेमसंगसबभाई॥आयसुपाइफिरेपहुचाई॥दोहा॥ रामरूपभूपतिभगतिब्याह
उछाहअनंदु॥जातसराहतमनहिमनमुदितगाधिकुलचंदु॥३६०॥वामदेवरघु
कुलगुरग्यानी॥वहुरिगाधिसुतकथावषानी॥सुनिमुनिसुजसमनहिमनराउ॥वरन
तआपनपुन्यप्रभाउ॥वहुरेलोगरजायसुभएउ॥सुतन्हसुमेतन्रपतिग्रहगएउ
जहँतहँरामब्याहसबगावा॥सुजसपुनीतलोकतिहुछावा॥आएरामब्याहिघरजब १४९
ते॥वसेअनंदअवधसबतबते॥प्रभुविआहजसभयेउछाहू॥सकहिनवरनिगिराअहिनाहू

बा०
१५०
नाहू॥कविकुलजीवनपावनजानी॥रामसीयजसमंगलखानी॥तेहितेमैकछुकहाब
षानी॥करनपुनीतहेतुनिजबानी॥छंद॥ः निजगिरापावनिकरनकारनरामजसतुल
सीकह्यो॥रघुबीरचरितअपारबारिधिपारकविकौनेलह्यो॥उपवीतब्याहउछाहमंग
लसुनिजेसादरगावहीं॥बैदेहिरामप्रसादतेजनसर्वदासुखपावहीं॥सोरठा॥ सियरघुबी व
रबिवाहजेसप्रेमगावहिंसुनहिं॥तिन्हकेसदाउछाहमंगलायतनरामजस॥३६१॥इ
तिश्रीरामचरित्रमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलसंतोषसंपादिनीनामप्रथमः ९ ष
सोपानः॥समाप्तः॥शुभमस्तुसिद्धरस्तु॥संवत॥१८ ९१॥चैत्रवदिपक्षद्वितीया॥२॥लिखतजी
वनलाल॥१॥

१५०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative